विक्रम संवत 2079 ■ कार्तिक मास/अगहन (मार्गशीर्ष) (09) ■ 01 नवम्बर 2022 ■ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

चरैवेति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

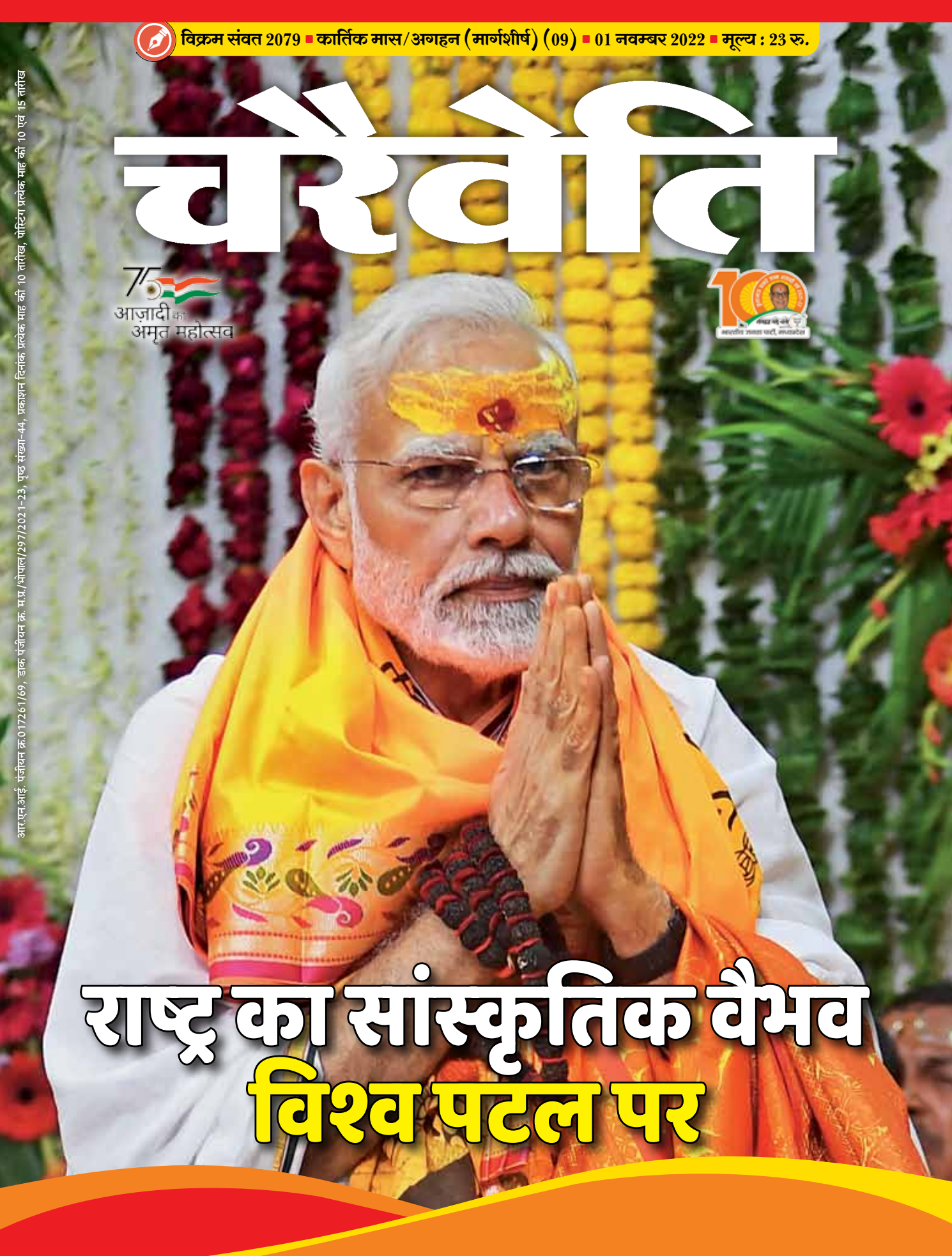

राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव विश्व पटल पर

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राजघाट पर महात्मा गांधी जी की 153वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विजय घाट पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पीएम किसान सम्मान सम्मेलन 2022 का उद्घाटन किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने केदारनाथ मंदिर में पूजा अर्चना की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी केवड़िया में राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह में।

▶ गांधीनगर में DefExpo22 के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इंडिया मोबाइल कांग्रेस के छठे संस्करण का उद्घाटन और 5G सेवाओं का शुभारंभ किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयों को राष्ट्र को समर्पित किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- संस्कृति के विकास के नए कीर्तिमान

आध्यात्मिक ज्योति का विकास ▶ 05-07

- 'महाकाल लोक' में लौकिक कुछ भी नहीं राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव...

05

09

14

- **विकसित मध्य प्रदेश :** 08

विषम परिस्थितियों से निकलकर विकास की यात्रा पर है...

- **शिक्षा का पुनर्जागरण :** 09-10

अब युवाओं को भाषा के कारण हीनता का शिकार होने...

- **धनतेरस पर गृह प्रवेश :** 11-13

सरकार सेवाभाव, समर्पण से कार्य कर रही है...

- **उद्बोधन :** 14-17

प. पू. सरसंघचालक जी का विजयादशमी उत्सव के शुभ अवसर....

- **आलेख : विष्णुदत्त शर्मा** 18-19

मोदी युग में सांस्कृतिक भारत का अभ्युदय

- **आलेख : हितानन्द शर्मा** 20

शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम हिंदी में चिकित्सा पाठ्यक्रम

- **रामो राजमणि: सदा विजयते :** 21-22

अयोध्या- भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का स्वर्णिम अध्याय

- **शौर्य की अप्रतिम गाथा :** 23-25

देश की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है- आत्मनिर्भर भारत

- **संकल्प शक्ति:** 26-27

भगवान राम जैसी संकल्प शक्ति देश को नई ऊंचाई पर...

- **भारत के संकल्प की सिद्धि :** 28-29

सेवाभाव सर्वोपरि रोजगार मेले में 75000 नियुक्ति पत्र...

- **मन की बात :** 30-36

आत्मनिर्भरता से, सफलता की नई ऊँचाई

- **पुण्यतिथि :** 37

लाला लाजपत राय, जिनका बलिदान, ब्रिटिश शासक के ताबूत...

- **जयंती :** 38

बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक...

- **पुण्यतिथि :** 39

सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

- **जयंती :** 40

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री रानी लक्ष्मीबाई

- **विचार-प्रवाह :** 41-42

कांग्रेस बनाम जनसंघ

मुख्य व्रत-त्यौहार

1. गोपाष्टमी 2. अक्षय (आंवला) नवमी 4. देवउठनी (प्रबोधिनी) ग्यारस 5. चातुर्मास समाप्त, प्रदोष व्रत 7. बैकुंठ चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा 8. त्रिपुरारी, स्नानदान पूर्णिमा 11. गणेश चतुर्थी व्रत 16. काल भैरवाष्टमी 20. उत्पन्ना एकादशी व्रत 21. प्रदोष व्रत 22. शिव चतुर्दशी व्रत 23. स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 25. चन्द्रदर्शन 27. विनायकी चतुर्थी व्रत 28. विवाह पंचमी, नाग दिवाली 29. चम्पा षष्ठी,बैगन छठ 30. नंदा सप्तमी

मुख्य जयंती-दिवस

1. म. प्र., छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस 2. कवि कालिदास जयंती 8. नर्मदा परिक्रमा भेड़ाघाट 17. लाला लाजपत राय बलिदान दिवस 19. रानी लक्ष्मीबाई जयंती 22. वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि 23. सत्य सांई जयंती 26. डॉ. हरिसिंह गौर जयंती 28. म. जोतीराव फुले पुण्यतिथि 29. खंडोबा जयंती

वर्ष-54, अंक : 09, भोपाल, नवम्बर 2022

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

जो राष्ट्र के प्रेमी है वे राजनीति के ऊपर राष्ट्रभाव का आराधन करते है। राष्ट्र ही एकमेव सत्य है। इस सत्य की उपासना करना सांस्कृतिक कार्य कहलाता है। राजनैतिक कार्य भी तभी सफल हो सकते है, जब इस प्रकार के प्रखर राष्ट्रवाद से युक्त सांस्कृतिक कार्य की शक्ति उसके पीछे सदैव विद्यमान रहे।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

संस्कृति के विकास के नए कीर्तिमान

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान और जय अनुसंधान से प्रेरणा लेते हुए भारत ने मिशन चन्द्रयान और मिशन गगनयान जैसे अभियानों के जरिये भारत आकाश में नई ऊँचाई पाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

इसी तरह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत रक्षा के क्षेत्र में पूरी ताकत के साथ आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत के गौरव और वैभव की एक बार फिर से पुर्नस्थापना हो रही है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मई 2014 से सत्ता सम्हालने के बाद राष्ट्र की निर्माणकारी और सांस्कृतिक विचार धारा नित नए आयाम छू रही है। हर माह संस्कृति के विकास पर नए-नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। अनादिकाल से उज्जैन सनातन धर्म के मानने वालों की आस्था का प्रमुख केन्द्र रहा है। मालवा कि इस धरती पर भगवान श्री महाकाल जी का आर्शीवाद है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में म. प्र. की धरती उज्जैन में श्री महाकाल लोक का लोकार्पण अपने आप में अद्भुत है। म. प्र. का सांस्कृतिक वैभव आज पूरे विश्व के पटल पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में साफ -साफ दिख रहा है। महाकाल कि नगरी उज्जैन वर्षों से इस तरह के विकास की राह चाह रही थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्री महाकाल लोक के निर्माण से यह प्रतीक्षा पूरी हो गई। महाकाल में सब कुछ अलौकिक है, असाधारण है, अविस्मरणीय व अविश्वसनीय है। तपस्या व आस्था से भगवान महाकाल जब प्रसन्न हुऐ तो उनके आर्शीवाद से महाकाल लोक की भव्यता और दिव्यता और ज्यादा बढ़ गई। अनादिकाल से उज्जैन भारत की आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र रहा है। मान्यता है कि उज्जैन जहां भगवान महाकाल साक्षात विराजमान हैं वह नगरी प्रलय के भी प्रहार से मुक्त है। ज्योतिषीय गणनाओं में भारत का सर्वोच्च स्थान है। हमारी ज्योतिषीय गणनाओं कि परम्पराओं से विश्व भी चमत्कृत है। तिथि,वार,नक्षत्र,योग व करण की गणनाओं से हजारों वर्षों से भारत के ज्योतिषी चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण और अनेक भौगोलिक घटनाओं की सटीक जानकारी न जाने कितनी शताब्दियों से विश्व समुदाय को दे रहे हैं। जिसके सामने आज सारा विश्व नतमस्तक है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में उज्जैन में श्री महाकाल लोक का लोकार्पण कई मामलों में भारत के सांस्कृतिक वैभव को नई ऊँचाईयां देगा। सदियों से ज्योतिषीय गणनाओं में उज्जैन भारत का केन्द्र रहा है। सनातन धर्म में सात पवित्र नगर हैं। जिसमें उज्जैन का प्रमुख स्थान है। भगवान श्री कृष्ण ने जो सारे विश्व के आराध्य हैं उन्होंने गुरू सांदिपनी से उज्जैन में ही शिक्षा प्राप्त की थी। महाकाल की इस पवित्र धरती उज्जैन से ही कालगणना के विक्रम संवत की शुरूवात हुई।

महाकाल की नगरी उज्जैन के कण-कण में आध्यात्म का प्रभाव है। हमारे पूरे सृष्टि की ऊर्जा को हमारे ऋषियों और मुनियों ने प्रतीक के रूप में उज्जैन में ही स्थापित किया है। इसीलिए अनादिकाल से उज्जैन ने ज्ञान व गरिमा, सभ्यता व साहित्य का नेतृत्व किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत का सांस्कृतिक वैभव लगातार विश्व के पटल पर अपनी साख बढ़ा रहा है। आज का भारत अपने सांस्कृतिक पहचान को गौरव के साथ सर उठा कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आगे बढ़ा रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आजादी के अमृतकाल में भारत ने गुलामी की मानसिकता से मुक्ति और विरासत पर गर्व करने का प्रण किया है। इसी का परिणाम है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण कार्य पूरी गति से चल रहा है। उम्मीद ही नहीं पूरा विश्वास है कि श्री राम मंदिर का निर्माण समय से पहले ही पूरा हो सकता है। इसी तरह से काशी में विश्वनाथ धाम भारत की सांस्कृतिक राजधानी का गौरव बढ़ा रहा है। गुजरात में सोमनाथ में विकास के कार्य बड़ी तेजी से हो रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्री केदारनाथ जी और श्री बद्रीनाथ जी तीर्थ क्षेत्र का विकास तीव्र गति से हो रहा है।

सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए यह अत्यंत खुशी का विषय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आजादी के इतने वर्षों के बाद अब पहली बार चार धाम प्रोजेक्टस के जरिये चारो धाम आल वेदर रोड से जुड़ने जा रहे हैं। इतना ही नहीं आजादी के बाद पहली बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में करतार साहिब कोरिडोर खुला है। इसी तरह हेमकुंड साहिब रोप-वे से जुड़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में स्वदेश दर्शन और प्रासाद योजना से देश भर में आध्यात्मिक चेतना के केन्द्रों का गौरव फिर से स्थापित हो रहा है। आज एक बार फिर से हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हजारों वर्षों से स्थापित भारत के आध्यात्मिक सांस्कृतिक संदेश विश्व को स्पष्टता से सुनाई दे रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज का नया भारत अपने प्राचीन मूल्यों के साथ आगे बढ़ रहा है। आस्था के साथ-साथ विज्ञान व शोध की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है।

आज का भारत ऐस्ट्रानॉमी के क्षेत्र में दुनिया की बड़ी-बड़ी ताकतों को टक्कर दे रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान और जय अनुसंधान से प्रेरणा लेते हुए भारत ने मिशन चन्द्रयान और मिशन गगनयान जैसे अभियानों के जरिये भारत आकाश में नई ऊँचाई पाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसी तरह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत रक्षा के क्षेत्र में पूरी ताकत के साथ आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत के गौरव और वैभव की एक बार फिर से पुर्नस्थापना हो रही है। जिसका लाभ भारत को तो मिलेगा ही साथ ही साथ पूरे विश्व को भी इसका फायदा मिलेगा।

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में विकास, जनकल्याण और सुराज के क्षेत्र में अनेक कार्य हो रहे हैं। अधोसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुशासन, रोजगार, अर्थव्यवस्था, कृषि, सांस्कृतिक और महिला सुरक्षा जैसे कई क्षेत्रों में तीव्र गति से कार्य हो रहे हैं। मध्यप्रदेश की आर्थिक स्थिति पहले से मजबूत हो गई है। मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी हुई है। जिससे गरीबों का जीवन स्तर पहले से सुधरा है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

"महाकाल लोक' में लौकिक कुछ भी नहीं

राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव विश्व पटल पर

हर हर महादेव !
जय श्री महाकाल,
जय श्री महाकाल महाराज की जय !
महाकाल महादेव, महाकाल महा प्रभो।
महाकाल महारुद्र, महाकाल नमोस्तुते॥

उज्जैन की ये ऊर्जा, ये उत्साह! अवंतिका की ये आभा, ये अदभुद्ता, ये आनंद! महाकाल की ये महिमा, ये महात्म्य! 'महाकाल लोक' में लौकिक कुछ भी नहीं है। शंकर के सानिध्य में साधारण कुछ भी नहीं है। सब कुछ अलौकिक है, असाधारण है। अविस्मरणीय है, अविश्वसनीय है। तपस्या और आस्था से जब महाकाल प्रसन्न होते हैं, तो उनके आशीर्वाद से ऐसे ही भव्य स्वरूपों का निर्माण होता है। और, महाकाल का आशीर्वाद जब मिलता हैं तो काल की रेखाएँ मिट जाती हैं, समय की सीमाएं सिमट जाती हैं, और अनंत के अवसर प्रस्फुटित हो जाते हैं। अंत से अनंत यात्रा आरंभ हो जाती है। महाकाल लोक की ये भव्यता भी समय की सीमाओं से परे आने वाली कई-कई पीढ़ियों को अलौकिक दिव्यता के दर्शन कराएगी, भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना को ऊर्जा देगी। महाकाल की नगरी उज्जैन के बारे में कहा गया है-

''प्रलयो न बाधते तत्र महाकालपुरी''

अर्थात्, महाकाल की नगरी प्रलय के प्रहार से भी मुक्त है। हजारों वर्ष पूर्व जब भारत का भौगोलिक स्वरूप आज से अलग रहा होगा, तब से ये माना जाता रहा है कि उज्जैन भारत के केंद्र में है। एक तरह से, ज्योतिषीय गणनाओं में उज्जैन

शास्त्रों में एक वाक्य है- 'शिवम् ज्ञानम्'। इसका अर्थ है, शिव ही ज्ञान हैं। और, ज्ञान ही शिव है। शिव के दर्शन में ही ब्रह्मांड का सर्वोच्च 'दर्शन' है। और, 'दर्शन' ही शिव का दर्शन है।

इसलिए मैं मानता हूँ, हमारे ज्योतिर्लिंगों का ये विकास भारत की आध्यात्मिक ज्योति का विकास है, भारत के ज्ञान और दर्शन का विकास है। भारत का ये सांस्कृतिक दर्शन एक बार फिर शिखर पर पहुँचकर विश्व के मार्गदर्शन के लिए तैयार हो रहा है।

न केवल भारत का केंद्र रहा है, बल्कि ये भारत की आत्मा का भी केंद्र रहा है। ये वो नगर है, जो हमारी पवित्र सात पुरियों में से एक गिना जाता है। ये वो नगर है, जहां स्वयं भगवान कृष्ण ने भी आकर शिक्षा ग्रहण की थी। उज्जैन ने महाराजा विक्रमादित्य का वो प्रताप देखा है, जिसने भारत के नए स्वर्णकाल की शुरुआत की थी। महाकाल की इसी धरती से विक्रम संवत के रूप में भारतीय कालगणना का एक नया अध्याय शुरू हुआ था। उज्जैन के क्षण-क्षण में,पल-पल में इतिहास सिमटा हुआ है, कण-कण में आध्यात्म समाया हुआ है, और कोने-कोने में ईश्वरीय ऊर्जा संचारित हो रही है। यहाँ काल चक्र का, 84 कल्पों का प्रतिनिधित्व करते 84 शिवलिंग हैं। यहाँ 4 महावीर हैं, 6 विनायक हैं, 8 भैरव हैं, अष्ट मातृकाएँ हैं, 9 नवग्रह हैं, 10 विष्णु हैं, 11 रुद्र हैं, 12 आदित्य हैं, 24 देवियाँ हैं, और 88 तीर्थ हैं। और इन सबके केंद्र में राजाधिराज कालाधिराज महाकाल विराजमान हैं। यानि, एक तरह से हमारे पूरे ब्रह्मांड की ऊर्जा को हमारे ऋषियों ने प्रतीक स्वरूप में उज्जैन में स्थापित किया हुआ है। इसीलिए, उज्जैन ने हजारों वर्षों तक भारत की संपन्नता और समृद्धि का, ज्ञान और गरिमा का, सभ्यता और साहित्य का नेतृत्व किया है। इस नगरी का वास्तु कैसा था, वैभव कैसा था, शिल्प कैसा था, सौन्दर्य कैसा था, इसके दर्शन हमें महाकवि कालिदास के मेघदूतम् में होते हैं। बाणभट्ट जैसे कवियों के काव्य में यहाँ की संस्कृति और परम्पराओं का चित्रण हमें आज भी मिलता है। यही नहीं, मध्यकाल के लेखकों ने भी यहाँ के स्थापत्य और वास्तुकला का गुणगान किया है।

किसी राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव इतना विशाल तभी होता है, जब उसकी सफलता का परचम, विश्व पटल पर लहरा रहा होता है। और, सफलता के शिखर तक पहुँचने के लिए भी ये जरूरी है कि राष्ट्र अपने सांस्कृतिक उत्कर्ष को छुए, अपनी पहचान के साथ गौरव से सर उठाकर के खड़ा हो जाए। इसीलिए, आजादी के

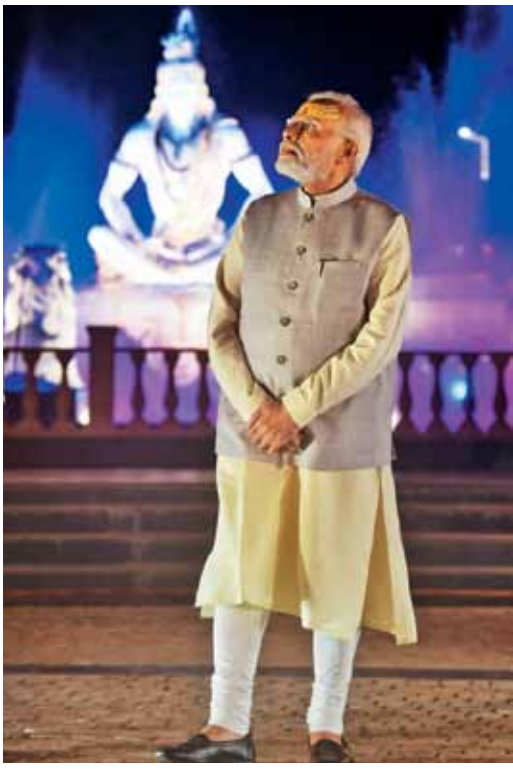

अमृतकाल में भारत ने 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' और अपनी 'विरासत पर गर्व' जैसे पंचप्राण का आवहान किया हैं। इसीलिए, आज अयोध्या में भव्य राममंदिर का निर्माण पूरी गति से हो रहा है। काशी में विश्वनाथ धाम, भारत की सांस्कृतिक राजधानी का गौरव बढ़ा रहा है। सोमनाथ में विकास के कार्य नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। उत्तराखंड में बाबा केदार के आशीर्वाद से केदारनाथ-बद्रीनाथ तीर्थ क्षेत्र में विकास के नए अध्याय लिखे जा रहे हैं। आजादी के बाद पहली बार चारधाम प्रोजेक्ट के जरिए हमारे चारों धाम ऑल वेदर रोड्स से जुड़ने जा रहे हैं। इतना ही नहीं, आजादी के बाद पहली बार करतारपुर साहिब कॉरिडोर खुला है, हेमकुंड साहिब रोपवे से जुड़ने जा रहा है। इसी तरह, स्वदेश दर्शन और प्रासाद योजना से देशभर में हमारी आध्यात्मिक चेतना के ऐसे कितने ही केन्द्रों का गौरव पुर्नस्थापित हो रहा है। और अब इसी कड़ी में, ये भव्य, अति भव्य 'महाकाल लोक' भी अतीत के गौरव के साथ भविष्य के स्वागत के लिए तैयार हो चुका है। आज जब हम उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक अपने प्राचीन मंदिरों को देखते हैं, तो उनकी विशालता, उनका वास्तु हमें आश्चर्य से भर देता है। कोणार्क का सूर्य मंदिर हो या महाराष्ट्र में एलोरा का कैलाश मंदिर, ये विश्व में किसे विस्मित नहीं कर देते? कोणार्क सूर्य मंदिर की तरह ही गुजरात का मोढेरा सूर्य मंदिर भी है, जहां सूर्य की प्रथम किरणें सीधे गर्भगृह तक प्रवेश करती हैं। इसी तरह, तमिलनाडू के तंजौर में राजाराज चोल द्वारा बनवाया गया बृहदेश्वर मंदिर है। कांचीपुरम में वरदराजा पेरुमल मंदिर है, रामेश्वरम में रामनाथ स्वामी मंदिर है। बेलूर का चन्नकेशवा मंदिर है, मदुरई का मीनाक्षी मंदिर है, तेलंगाना का रामप्पा मंदिर है, श्रीनगर में शंकराचार्य मंदिर है। ऐसे कितने ही मंदिर हैं, जो बेजोड़ हैं, कल्पनातीत हैं, **'न भूतो न भविष्यति'** के जीवंत उदाहरण हैं। हम जब इन्हें देखते हैं तो हम सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि उस दौर में, उस युग में किस तकनीक से ये निर्माण हुये होंगे। हमारे सारे प्रश्नों के उत्तर हमें भले ही न मिलते हों, लेकिन इन मंदिरों के आध्यात्मिक सांस्कृतिक संदेश हमें उतनी ही स्पष्टता से आज भी सुनाई देते हैं। जब पीढ़ियाँ इस विरासत को देखती हैं, उसके संदेशों को सुनती हैं, तो एक सभ्यता के रूप में ये हमारी निरंतरता और अमरता का जरिया बन जाता है। 'महाकाल लोक' में ये परंपरा उतने ही प्रभावी ढंग से कला और शिल्प के द्वारा उकेरी गई है। ये पूरा मंदिर प्रांगण शिवपुराण की कथाओं के आधार पर तैयार किया गया है। आप यहाँ आएंगे तो महाकाल के दर्शन के साथ ही आपको महाकाल की महिमा और महत्व के भी दर्शन होंगे। पंचमुखी शिव, उनके डमरू, सर्प, त्रिशूल, अर्धचंद्र और सप्त ऋषि, इनके भी उतने ही भव्य स्वरूप यहाँ स्थापित किए गए हैं। ये वास्तु, इसमें ज्ञान का ये समावेश, ये महाकाल लोक को उसके प्राचीन गौरव से जोड़ देता है। उसकी सार्थकता को और भी बढ़ा देता है।

शास्त्रों में एक वाक्य है- **'शिवम् ज्ञानम्'**।

इसका अर्थ है, शिव ही ज्ञान हैं। और, ज्ञान ही शिव है। शिव के दर्शन में ही ब्रह्मांड का सर्वोच्च 'दर्शन' है। और, 'दर्शन' ही शिव का दर्शन है। इसलिए मैं मानता हूँ, हमारे ज्योतिर्लिंगों का ये विकास भारत की आध्यात्मिक ज्योति का विकास है, भारत के ज्ञान और दर्शन का विकास है। भारत का ये सांस्कृतिक दर्शन एक बार फिर शिखर पर पहुँचकर विश्व के मार्गदर्शन के लिए तैयार हो रहा है। भगवान महाकाल एकमात्र ऐसे ज्योतिर्लिंग हैं जो दक्षिणमुखी हैं। ये शिव के ऐसे स्वरूप हैं, जिनकी भस्म आरती पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। हर भक्त अपने जीवन में भस्म आरती के दर्शन जरूर करना चाहता है।

इस परंपरा में हमारे भारत की जीवटता और जीवंतता के दर्शन भी करता हूँ। इसमें भारत के अपराजेय अस्तित्व को भी देखता हूँ। क्योंकि, जो शिव **'सोयं भूति विभूषणः'** हैं, अर्थात्, भस्म को धारण करने वाले हैं, वो **'सर्वाधिपः सर्वदा'** भी हैं। अर्थात्, वो अनश्वर और अविनाशी भी हैं। इसलिए, जहां महाकाल हैं, वहाँ कालखण्डों की सीमाएं नहीं हैं। महाकाल की शरण में विष में भी स्पंदन होता है। महाकाल के सानिध्य में अवसान से भी पुर्नजीवन होता है। अंत से भी अनंत की यात्रा आरंभ होती है। यही हमारी सभ्यता का वो आध्यात्मिक आत्मविश्वास है जिसके सामर्थ्य से भारत हजारों वर्षों से अमर बना हुआ है। अजरा अमर बना हुआ है। अब तक हमारी आस्था के ये केंद्र जागृत हैं, भारत की चेतना जागृत है, भारत की आत्मा जागृत है। अतीत में हमने देखा है, प्रयास हुये, परिस्थितियाँ बदलीं, सत्ताएं बदलीं, भारत का शोषण भी हुआ, आजादी भी गई। इल्तुतमिश जैसे आक्रमणकारियों ने उज्जैन की ऊर्जा को भी नष्ट करने के प्रयास किए। लेकिन हमारे ऋषियों ने कहा है-

चंद्रशेखरम् आश्रये मम् किम् करिष्यति वै यमः? अर्थात्, महाकाल शिव की शरण में अरे मृत्यु भी हमारा क्या कर लेगी? और इसलिए, भारत अपनी आस्था के इन प्रामाणिक केन्द्रों की ऊर्जा से फिर पुर्नजीवित हो उठा, फिर उठ खड़ा हुआ। हमने फिर अपने अमरत्व की वैसी ही विश्वव्यापी घोषणा कर दी। भारत ने

फिर महाकाल के आशीष से काल के कपाल पर कालातीत अस्तित्व का शिलालेख लिख दिया। आज एक बार फिर, आजादी के इस अमृतकाल में अमर अवंतिका भारत के सांस्कृतिक अमरत्व की घोषणा कर रही है। उज्जैन जो हजारों वर्षों से भारतीय कालगणना का केंद्र बिन्दु रहा है, वो आज एक बार फिर भारत की भव्यता के एक नए कालखंड का उद्घोष कर रहा है।

भारत के लिए धर्म का अर्थ है, हमारे कर्तव्यों का सामूहिक संकल्प! हमारे संकल्पों का ध्येय है, विश्व का कल्याण, मानव मात्र की सेवा। हम शिव की आराधना में भी कहते हैं-

नमामि विश्वस्य हिते रतम् तम्, नमामि रूपाणि बहूनि धत्ते!

अर्थात्, हम उन विश्वपति भगवान शिव को नमन करते हैं, जो अनेक रूपों से पूरे विश्व के हितों में लगे हैं। यही भावना हमेशा भारत के तीर्थों, मंदिरों, मठों और आस्था केन्द्रों की भी रही है। महाकाल मंदिर में पूरे देश और दुनिया से लोग आते हैं। सिंहस्थ कुम्भ लगता है तो लाखों लोग जुटते हैं। अनगिनत विविधताएं भी एक मंत्र, एक संकल्प लेकर एक साथ जुट सकती हैं, इसका इससे बड़ा और उदाहरण क्या हो सकता है? और हम जानते हैं हजारों साल से हमारे कुंभ मेले की परंपरा बहुत ही सामूहिक मंथन के बाद जो अमृत निकलता है उससे संकल्प लेकर के बारह साल तक उसको क्रियान्वित करने की परंपरा रही थी। फिर बारह साल के बाद जब कुंभ होता था, फिर एक बार अमृत मंथन होता था। फिर संकल्प लिया जाता था। फिर बारह साल के लिए चल पड़ते थे। पिछले कुंभ के मेले में मुझे यहां आने का सौभाग्य मिला था। महाकाल का बुलावा आया और ये बेटा आए बिना कैसे रह सकता है। और उस समय कुंभ की जो हजारों साल की पुरानी परंपरा उस समय जो मन मस्तिष्क में मंथन चल रहा था, जो विचार प्रवाह बह रहा था। मां क्षिप्रा के तट पे अनेक विचारों से मैं घिरा हुआ था। और उसी में से मन कर गया, कुछ शब्द चल पड़े, पता नहीं कहां से आए, कैसे आए, और जो भाव पैदा हुआ था। वो संकल्प बन गया। आज वो सृष्टि के रूप में नजर आ रहा है ऐसे साथियों को बधाई देता हूं जिन्होंने उस समय के उस भाव को आज चरितार्थ करके दिखाया है। सबके मन में शिव और शिवत्व के लिए समर्पण, सबके मन में क्षिप्रा के लिए श्रद्धा, जीव और प्रकृति के लिए संवेदनशीलता, और इतना बड़ा समागम! विश्व के हित के लिए, विश्व की भलाई के लिए कितनी प्रेरणाएं यहाँ निकल सकती हैं?

इन तीर्थों ने सदियों से राष्ट्र को संदेश भी दिये हैं, और सामर्थ्य भी दिया है। काशी जैसे हमारे केंद्र धर्म के साथ-साथ ज्ञान, दर्शन और कला की राजधानी भी रहे। उज्जैन जैसे हमारे स्थान खगोल विज्ञान, एस्ट्रॉनॉमी से जुड़े शोधों के शीर्ष केंद्र रहे हैं। आज नया भारत जब अपने प्राचीन मूल्यों के साथ आगे बढ़ रहा है, तो आस्था के साथ साथ विज्ञान और शोध की परंपरा को भी पुर्नजीवित कर रहा है। आज हम एस्ट्रॉनॉमी के क्षेत्र में दुनिया की बड़ी ताकतों के बराबर खड़े हो रहे हैं। आज भारत दूसरे देशों की सैटिलाइट्स भी स्पेस में लॉंच कर रहा है। मिशन चंद्रयान और मिशन गगनयान जैसे अभियानों के जरिए भारत आकाश की वो छलांग लगाने के लिए तैयार है, जो हमें एक नई ऊंचाई देगी। आज रक्षा के क्षेत्र में भी भारत पूरी ताकत से आत्मनिर्भता की ओर आगे बढ़ रहा है। इसी तरह, आज हमारे युवा स्किल हो, स्पोर्टस हो, स्पोर्ट्स से स्टार्टअप्स, एक-एक चीज नई नए स्टार्टअप के साथ, नए यूनिकार्न के साथ हर क्षेत्र में भारत की प्रतिभा का डंका बजा रहे हैं।

हमें ये भी याद रखना है, ये न भूलें, जहाँ innovation है, वहीं पर renovation भी है। हमने गुलामी के कालखंड में जो खोया, आज भारत उसे renovate कर रहा है, अपने गौरव की, अपने वैभव की पुर्नस्थापना हो रही है। और इसका लाभ, सिर्फ भारत के लोगों को नहीं, विश्वास रखिये इसका लाभ पूरे विश्व को मिलेगा, पूरी मानवता को मिलेगा। महाकाल के आशीर्वाद से भारत की भव्यता पूरे विश्व के विकास के लिए नई संभावनाओं को जन्म देगी। भारत की दिव्यता पूरे विश्व के लिए शांति के मार्ग प्रशस्त करेगी। ▪

विषम परिस्थितियों से निकलकर विकास की यात्रा पर है मध्यप्रदेश-शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश में गरीब कल्याण की दिशा में अनेक काम हुए हैं। उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री आवास, संबल योजना, आयुष्मान भारत योजना, मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना जैसी अनेक योजनाओं से गरीबों का जीवन स्तर सुधरा है। आज स्वास्थ्य, पोषण, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के मामले में कई काम हो रहे हैं। महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में बहुत बड़ा बदलाव आया है।

हम राजनीतिक दल के कार्यकर्ता हैं। इसलिए हम सभी को यह स्पष्ट रूप से जानकारी होना चाहिए कि कांग्रेस के समय का मध्यप्रदेश और आज भाजपा के समय का मध्यप्रदेश कितना भिन्न है। जब हमारी सरकार वर्ष 2003 में बनी थी तब हमारे सामने कई विषम परिस्थितियां थीं। हमें बिजली, पानी, सड़क, सुरक्षा और कानून व्यवस्थाओं से जूझता हुआ प्रदेश मिला था। लेकिन वर्तमान समय में मध्यप्रदेश की तस्वीर बदली हुई है। मध्यप्रदेश आज विकास की यात्रा पर है। प्रदेश सरकार आज विकास, जनकल्याण और सुराज के अनेक आयामों पर कीर्तिमान रच रही है।

अधोसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुशासन, अर्थव्यवस्था, रोजगार, कृषि, सांस्कृतिक और महिला सुरक्षा जैसे अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी काम किए हैं। आज सैंकड़ों परियोजनाओं में हितग्राहियों के खातों में सीधे राशि पहुंचाई जा रही है। प्रदेश की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी हुई और गरीबों का जीवन स्तर बदला है। अब हमारा दायित्व है कि प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जनता के बीच ले जाएं और उनका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें।

अपराधियों के चंगुल से मुक्त हुआ मध्यप्रदेश

कांग्रेस के समय प्रदेश डकैतों की समस्या से जूझ रहा था। अनेक गैंग प्रदेश में सक्रिय थे। अपहरण उद्योग बन गया था। लेकिन हमारी सरकार बनने के बाद आज मध्यप्रदेश की धरती पर एक भी डकैत नहीं है। सिमी का नेटवर्क ध्वस्त कर दिया गया है। नक्सलवाद को भी मप्र की धरती से निर्मूल कर दिया गया है। अनेक प्रकार के माफियाओं पर कार्रवाई की जा रही है। पिछड़े डेढ़ साल में भाजपा सरकार ने 21 हजार एकड़ जमीन अपराधियों से मुक्त कराई हैं। आज मध्यप्रदेश शांति का टापू बन गया है।

5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था में बनने में मध्यप्रदेश का भी योगदान होगा

भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने में मध्यप्रदेश का भी योगदान रहेगा। इसके लिए प्रदेश 550 बिलियन डॉलर का योगदान देने के लिए काम कर रहा है। कांग्रेस के समय 13,953 रुपए प्रति व्यक्ति आय थी लेकिन आज 1 लाख 37 हजार रुपए से अधिक प्रति व्यक्ति आय हुई है। कांग्रेस की सरकार के समय प्रदेश का बजट 23 हजार 161 करोड़ था आज 2 लाख 79 हजार 236 करोड़ का बजट है। कोरोना जैसी विषय परिस्थिति के बावजूद वर्ष 2021-2022 की प्रचलित दरों पर प्रदेश ने विकास दर 19.74 प्रतिशत हासिल की है, जो पूरे देश में सर्वाधिक है।

24 हजार करोड़ रुपए बिजली पर सब्सिडी दे रही है प्रदेश सरकार

बिजली के मामले में मध्यप्रदेश सरप्लस स्टेट है। जहां कांग्रेस शासनकाल में बिजली एक बहुत बड़ी समस्या थी, वहीं आज उपलब्ध क्षमता 22 हजार 600 मेगावाट से अधिक हो गई है। बिजली आज 24 घंटे दी जा रही है। नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भी हम आगे बढ़े हैं। ओंकारेश्वर में लगभग 3 हजार 500 करोड़ की लागत से विश्व की सबसे बड़ी 600 मेगावाट क्षमता की सोलर फ्लोटिंग परियोजना प्रारंभ की गई है। प्रदेश में नवकरणीय ऊर्जा की क्षमता 5 हजार 400 मेगावाट तक पहुंच गई है।

कांग्रेस के समय सिर्फ 8 प्रतिशत थी कृषि विकास दर

कांग्रेस ने किसानों को छलने का काम किया। दिग्विजय सिंह के शासन काल में कृषि विकास दर सिर्फ 8 प्रतिशत थी, जिसे आज भारतीय जनता पार्टी की सरकार में 18 प्रतिशत तक ले जाने का काम हुआ है। पहले 4 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उत्पादन होता था लेकिन आज 1 करोड़ 29 लाख मीट्रिक टन उत्पादन मध्यप्रदेश की धरती पर हो रहा है। कांग्रेस ने किसानों की बीमा राशि रोकने का काम किया। वहीं भाजपा सरकार में विगत ढाई वर्ष में ही प्रदेश के किसानों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत 2 लाख 8 हजार करोड़ रुपए से अधिक प्रदान किए गए हैं।

भाजपा शासन में गरीब कल्याण की दिशा में हुए कई काम

मध्यप्रदेश में गरीब कल्याण की दिशा में अनेक काम हुए हैं। उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री आवास, संबल योजना, आयुष्मान भारत योजना, मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना जैसी अनेक योजनाओं से गरीबों का जीवन स्तर सुधरा है। आज स्वास्थ्य, पोषण, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के मामले में कई काम हो रहे हैं। महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में बहुत बड़ा बदलाव आया है। मध्यप्रदेश में पहले बेटियों को अभिशाप समझा जाता था लेकिन आज खुशी होती है कि मध्यप्रदेश में लिंगानुपात में काफी परिवर्तन आया है। पहले 1000 बेटों पर 912 बेटियां होती थीं लेकिन आज 976 हो गई है। 43 लाख बहनें महिला स्वसहायता समूहों से जुड़कर एक बड़ी ताकत बन गई हैं। एक लाख से अधिक बहनें चुनाव जीतकर आई हैं। 2 नवंबर को प्रदेश के सभी जिलों में लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0 के कार्यक्रम होंगे। ▪

हिन्दी भाषा में चिकित्सा शिक्षा की पुस्तकें लोकार्पित

अब युवाओं को भाषा के कारण हीनता का शिकार होने की जरूरत नही - अमित शाह

देश में अंग्रेजी भाषा के पैरोकारों ने भाषा को बौद्धिक क्षमता के साथ जोड़ दिया था। वो ये बताना चाहते थे कि जिसे अंग्रेजी आती है, वही बुद्धिमान है। लेकिन ऐसा कुछ नहीं है। भाषा सिर्फ बौद्धिक क्षमता को निखारती है। युवाओं को अब भाषा के कारण हीनभावना के शिकार होने की जरूरत नहीं है। देश में अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार है, जो भारतीय भाषाओं के गौरव की पुर्नस्थापना के लिए संकल्पित हैं। अब मातृभाषा में ही अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सकते हैं।

हिन्दी भाषा में चिकित्सा शिक्षा की पुस्तकों के लोकार्पण का दिन शिक्षा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा। ये क्षण देश में शिक्षा के पुनर्निर्माण और पुनर्जागरण का क्षण है। देश में तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा की हिंदी भाषा में शुरुआत हो रही है और छात्र अनुसंधान एवं विकास के कार्य भी हिंदी भाषा में कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी को धन्यवाद कि उन्होंने नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को अहमियत दी और देशवासियों से भारतीय भाषाओं में शिक्षा का आव्हान किया।

शिक्षा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा

हिन्दी भाषा में चिकित्सा शिक्षा की पुस्तकों के लोकार्पण का दिन शिक्षा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा। ये क्षण देश में शिक्षा के पुनर्निर्माण और पुनर्जागरण का क्षण है। देश में तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा की हिंदी भाषा में शुरुआत हो रही है और छात्र अनुसंधान एवं विकास के कार्य भी हिंदी भाषा में कर सकेंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी को धन्यवाद कि उन्होंने नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को अहमियत दी और देशवासियों से भारतीय भाषाओं में शिक्षा का आव्हान किया। मध्यप्रदेश में हिंदी भाषा में चिकित्सा शिक्षा की बात भाजपा के चुनावी घोषणा पत्र में कही गई थी। जब प्रदेश में शिवराजसिंह जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनी, तो उन्होंने नई शिक्षा नीति को सबसे पहले प्रदेश में लागू किया। गर्व है कि मातृभाषा में शिक्षा की प्रधानमंत्री जी की पहल और संकल्प को म.प्र. की भाजपा सरकार ने साकार किया है। इसके लिए मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री विश्वास सारंग को साधुवाद।

सीधे दिल में उतरती है मातृभाषा में कही गई बात

आजादी के बाद महात्मा गांधी ने कहा था कि सिर्फ आजादी हासिल कर लेने से कुछ

नहीं होगा। जब हमारे रसायनशास्त्री, वैज्ञानिक, इंजीनियर और डॉक्टर अपनी मातृभाषा में पढ़ेंगे, तो सही तरीके से देश की सेवा कर पाएंगे। अब इसकी शुरुआत हो गई है। नेल्सन मंडेला जी ने कहा था कि जब कोई उस भाषा में बात करता है, जिसे आप जानते हैं, तो वो बात आपके दिमाग तक पहुंचती है। लेकिन जब कोई आपकी मातृभाषा में बात करता है, तो वो आपके दिल में उतर जाती है। हमारी सोचने-समझने, संशोधन करने, अनुसंधान, तर्क और विश्लेषण करने तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया मातृभाषा में ही होती है। जब हम अपनी मातृभाषा में अनुसंधान करेंगे, तो पूरा विश्वास है कि भारत के छात्र किसी से पीछे नहीं हैं और सारी दुनिया में अनुसंधान के क्षेत्र में भारत का डंका बजाएंगे।

शिक्षा के विकास और विस्तार को समर्पित है मोदी सरकार

प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार देश में शिक्षा के विकास और विस्तार के लिए समर्पित है। मोदी सरकार ने देश में नई शिक्षा नीति लागू की है। अंग्रेजी छात्रों की राह की रुकावट न बने, इसके लिए जेईई, एनईईटी, यूजीसी जैसी परीक्षाओं को मातृभाषा में देने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। सरकार ने चिकित्सा शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और कानून जैसे विषयों की शिक्षा मातृभाषा में उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है। मोदी सरकार जब सत्ता में आई थी, तब देश में 387 मेडिकल कॉलेज थे, जो अब बढ़कर 596 हो गए हैं। आईआईटी 16 से बढ़कर 23 हो गए। आईआईएम की संख्या 13 से बढ़कर 20 हो गई। देश में 723 यूनिवर्सिटी थीं, जो अब 1043 हो गई हैं।

एक संकल्प पूरा हुआ, एक सपना साकार हुआ: शिवराजसिंह चौहान

हिन्दी भाषा में चिकित्सा शिक्षा की पुस्तकों का लोकार्पण ऐतिहासिक है। गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने हिंदी में चिकित्सा शिक्षा का शुभारंभ किया है। इसके साथ ही हमारे प्रधानमंत्री जी का संकल्प पूरा हो रहा है और चिकित्सा सहित तकनीकी एवं अन्य विषयों की शिक्षा मातृभाषा में उपलब्ध कराने का सपना साकार हो रहा है। अंग्रेजी की गुलामी से मुक्ति मिल रही है।

चिकित्सा की शिक्षा हिंदी भाषा में उपलब्ध होने से हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले उन गरीब छात्रों को भी अवसर मिलेंगे, जो अंग्रेजी न आने के कारण हीनभावना के शिकार हो जाते थे और पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते थे। वास्तव में देश में यह शुरुआत आजादी के बाद ही हो जाना थी, लेकिन कुछ लोगों के कारण ऐसा नहीं हो सका। इन लोगों के लिए तन-मन-जीवन अंग्रेजी ही थी और उन्होंने देश में ऐसा माहौल बनाया कि अंग्रेजी से ही इज्जत मिलती है। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री जी ने इस मानस को बदल दिया है। मेडिकल के अलावा प्रदेश के 6 इंजीनियरिंग और 6 पॉलीटेक्निक कॉलेजों में भी हिंदी में पढ़ाई जल्द शुरू हो जाएगी।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने मैकाले की नीति को बदला: विश्वास सारंग

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश में परिवर्तन की बयार बह रही है और इतिहास में परिवर्तन हो रहा है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति को बदलने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रति आभार। देश-विदेश में हुए अनुसंधानों से यह पता चला है कि अपनी भाषा में सीखने से अच्छा कुछ नहीं होता। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी कहा है कि जो डॉक्टर्स अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करते हैं, वे लोगों की अच्छे से सेवा कर पाते हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मध्यप्रदेश में हिंदी में चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध कराने की पहल की और वह शुभ दिन आ गया है, जब केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने शुभारंभ किया। ▪

दीपावली की मेजबानी सम्मान का विषय - जो बाइडेन

अमरीका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने दीपावली उत्सव को अमरीकी संस्कृति का आनंददायक हिस्सा बनाने के लिए अपने देश के एशियाई अमरीकी समुदाय को धन्यवाद दिया है। उन्होंने अमरीका, भारत और संपूर्ण विश्व में दिवाली के अवसर पर दीपोत्सव मनाने वाले एक अरब से अधिक हिन्दुओं, जैन, सिख और बौद्ध धर्मावालंबियों को त्यौहार की बधाई दी। व्हाइट हाउस में दिवाली के कार्यक्रम में श्री बाइडेन ने कहा कि वे इसकी मेजबानी करके सम्मानित महसूस कर रहे हैं। पहली बार व्हाइट हाउस में बड़े स्तर पर दिवाली स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री बाइडेन ने कहा कि अमरीका में अब एशियाई अमरीकी समुदाय पूर्ववर्ती इतिहास के मुकाबले सबसे अधिक है। व्हाइट हाउस में आधिकारिक तौर पर दिवाली स्वागत समारोह की मेजबानी करते हुए हम अमेरीकी इतिहास में सबसे अधिक विविधता वाले प्रशासन के सदस्यों के बीच दिवाली के दिये को प्रज्वलित करके सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इसका नेतृत्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस कर रही हैं जो इस पद पर पहुंचने वाली पहली अश्वेत अमरीकी और दक्षिण एशियाई अमरीकी हैं। श्री बाइडेन ने पूरे अमरीका में दक्षिण एशियाई समुदाय की ओर से प्रदर्शित असाधारण आशावाद, साहस और संवेदना के लिए उनका शुक्रिया अदा किया। बाइडेन प्रशासन में काम करने वाले भारतीय अमरीकी समुदाय के बहुत से लोग कार्यक्रम में मौजूद रहे। ▪

सरकार सेवाभाव, समर्पण से कार्य कर रही है

मध्य प्रदेश में PMAY-G के 4.5 लाख से अधिक लाभार्थियों का "गृह प्रवेश"

धनतेरस और दीपावली का अवसर ऐसा होता है, जब हम नई शुरुआत करते हैं। घर में नया रंग-रोगन करते हैं, नए बर्तन लाते हैं, कुछ ना कुछ नया जोड़ते हैं, नए संकल्प भी लेते हैं। नई शुरुआत करने से हम जिंदगी में नयापन भर देते हैं, सुख और समृद्धि के लिए एक नया द्वार खुल जाता है। मध्य प्रदेश के साढ़े 4 लाख गरीब बहनों और भाइयों के लिए नए जीवन की शुरुआत हो रही है। ये सभी साथी अपने नए और पक्के घर में गृह प्रवेश कर रहे हैं। एक समय था, जब धनतेरस पर सिर्फ वही लोग गाड़ी और घर जैसी बड़ी और महंगी संपत्ति खरीद पाते थे जिनके पास संसाधन होते थे, पैसे होते थे, उन्हीं के लिए धनतेरस होती थी। लेकिन देखिए, देश का गरीब भी धनतेरस पर गृहप्रवेश कर रहा है। मध्य प्रदेश की उन लाखों बहनों को विशेष बधाई, जो अपने घर की मालकिन बनी हैं, और लाखों रुपयों के बने घर ने आपको लखपति बना दिया है।

तकनीक के माध्यम से सामने बैठे असीम आकांक्षाओं से भरे अनगिनत लोगों को देख पा रहा हूं। पहले ये आकांक्षाएं, ये सपने सामने आते ही नहीं थे क्योंकि बिना घर के ये भावनाएं दब जाती थी, छिप जाती थीं, मुरझा जाती थी। विश्वास है, अब जब इन साथियों को ये नए घर मिल गए हैं, तो अपने सपनों को सच करने की नई ताकत भी मिली है। इसलिए ये दिन सिर्फ गृह प्रवेश का नहीं है, बल्कि घर में खुशियां, घर में नए संकल्प, नए सपने, नया उमंग, नया भाग्य में प्रवेश का भी है। ये हमारी सरकार का सौभाग्य है कि बीते 8 वर्षों में वो पीएम आवास योजना के तहत साढ़े तीन करोड़ गरीब परिवारों की जिंदगी का सबसे बड़ा सपना पूरा कर पाई है। और ऐसा नहीं है कि हमने ऐसे ही घर बनाकर दे दिए, चार दीवारें खड़ी करके दे दिये। हमारी सरकार गरीबों को समर्पित है, गरीब की है, इसलिए गरीब की इच्छा, उसके मन, उसकी जरूरतों को सबसे ज्यादा समझती है। हमारी सरकार जो घर देती है ना, उसमें बाकी सुविधाएं भी साथ आती हैं। शौचालय हो, बिजली हो, पानी हो, गैस हो, सरकार की अलग-अलग योजनाएं प्रधानमंत्री आवास योजना के इन करोड़ों घरों को संपूर्ण बनाती हैं।

बीते 8 वर्षों में वो पीएम आवास योजना के तहत साढ़े तीन करोड़ गरीब परिवारों की जिंदगी का सबसे बड़ा सपना पूरा कर पाई है। और ऐसा नहीं है कि हमने ऐसे ही घर बनाकर दे दिए, चार दीवारें खड़ी करके दे दिये।

हमारी सरकार गरीबों को समर्पित है, गरीब की है, इसलिए गरीब की इच्छा, उसके मन, उसकी जरूरतों को सबसे ज्यादा समझती है। हमारी सरकार जो घर देती है ना, उसमें बाकी सुविधाएं भी साथ आती हैं। शौचालय हो, बिजली हो, पानी हो, गैस हो, सरकार की अलग-अलग योजनाएं प्रधानमंत्री आवास योजना के इन करोड़ों घरों को संपूर्ण बनाती हैं।

पहले अगर घर गरीबों के लिए घोषित होता भी था, तो उसको टॉयलेट अलग बनाना पड़ता था। बिजली, पानी और गैस के कनेक्शन के लिए अलग-अलग सरकारी दफ्तरों के कई-कई बार चक्कर लगाने पड़ते थे। पहले की सरकारों में इस पूरी प्रक्रिया को पूरा करने के लिए गरीब को कई दफ्तरों में रिश्वत भी देनी पड़ती थी। यही नहीं, पहले गरीबों के नाम पर घरों की घोषणा तो हो जाती थी, फिर सरकार बताती थी कि इस तरह का घर बनेगा, वही हुकुम करती थी। वही नक्शा दे देती थी, यहां से ही सामान लेना है, यही सामान लेना है। जिसको उस घर में रहना है, अरे उसकी कोई पसंद होती है, नापसंद होती है, उसकी अपनी सामाजिक परंपराएं होती हैं, उसका अपना एक

पहले की सरकारों और हमारी सरकार में एक बहुत बड़ा फर्क है। पहले की सरकारें गरीब को तरसाती थीं, उसे अपने दफ्तरों में चक्कर लगवाती थीं। हमारी सरकार गरीब के पास खुद पहुंच रही है, हर योजना का लाभ गरीब को मिले इसलिए अभियान चला रही है।

आज हम सैचुरेशन की बात कर रहे हैं, यानि जनकल्याण की हर योजना का लाभ शत-प्रतिशत लाभार्थियो तक कैसे पहुंचे? कोई भाई-भतीजावाद नहीं, कोई तेरा-मेरा नहीं, इसको देना है, इसको नहीं देना है, कुछ नहीं, जिसका हक है सबको देना है।

रहन-सहन होता है। उसकी कोई पूछताछ ही नहीं होती थी। यही कारण है कि पहले जो थोड़े-बहुत घर बनते भी थे, उनमें से बहुत सारों में कभी गृहप्रवेश ही नहीं हो पाता था। लेकिन हमने ये आजादी घर की मालकिन को, घर के मालिक को दे दी। इसलिए आज पीएम आवास योजना बहुत बड़े सामाजिक-आर्थिक बदलाव का माध्यम बन रही है।

अक्सर हम देखते हैं कि एक पीढ़ी अपनी अर्जित की हुई संपत्ति को अगली पीढ़ी को सौंपती है। हमारे यहां पहले की सरकारों की गलत नीतियों की वजह से लोगों को मजबूरी में आवासहीनता भी अगली पीढ़ी को सौंपनी पड़ती थी। और जो संतान पीढ़ियों के इस कुचक्र को तोड़ती थी, उसका बहुत गुणगान होता था, गौरवगान होता था। मेरा सौभाग्य है कि देश के सेवक के तौर पर, देश की करोड़ों माताओं की संतान के तौर पर मुझे अपने करोड़ों गरीब परिवारों को इस कुचक्र से बाहर निकालने का मौका मिला है। हमारी सरकार हर गरीब को अपनी पक्की छत देने के लिए दिन रात काम कर रही है। इसलिए आज इतनी बड़ी संख्या में ये घर बन रहे हैं। मध्य प्रदेश में भी पीएम आवास योजना के तहत करीब 30 लाख घर बनाए जा चुके हैं। अभी 9-10 लाख घरों पर काम चल रहा है।

लाखों बनते हुए ये घर, देश के कोने-कोने में रोजगार के अवसर भी बना रहे हैं। रोजगार मेले के कार्यक्रम मैंने खास कहा कि मैं गृह प्रवेश कार्यक्रम में जाने वाला हूं, और उसके साथी भी रोजगार कैसे जुड़ा है मैं पूरा बताने वाला हूं।

आप भी जानते हैं जब घर बनते हैं तो कंस्ट्रक्शन से जुड़ा मटीरियल, जैसे ईंट, सीमेंट, रेत, बजरी, स्टील, रंग-रोगन, बिजली का सामान, टॉयलेट सीट, नल-पाइप, इन सब चीजों की डिमांड बढ़ती है। जब ये डिमांड बढ़ती है तो इन मैटेरियल को बनाने वाली फैक्ट्रियां ज्यादा लोगों को रखती हैं, ज्यादा ट्रांसपोर्ट वालों की जरूरत पड़ती है उनको लगाती है। जहां ये सामान बिकता है उन दुकानों में भी लोगों को रोजगार मिलता है। और सतना से बेहतर इसको कौन समझ सकता है। सतना तो चूना पत्थर के लिए, सीमेंट के लिए भी जाना जाता है। घर बनते हैं तो सतना के सीमेंट की डिमांड भी बढ़ जाती है। घर बनाने के काम से जुड़े श्रमिक, मिस्त्री, बढ़ई, प्लंबर, पुताई, फर्नीचर बनाने वाले उनको भी ढेर सारा काम मिलता है। मध्य प्रदेश में 50 हजार से अधिक राजमिस्त्री प्रशिक्षित किए गए हैं। इनमें से 9-10 हजार हमारी माताएं-बहनें लोग उसे राजमिस्त्री भी कहते हैं, लोग उसे रानी मिस्त्री भी कहते हैं। यानि हमारी बहनों को एक नई कला, रोजगार के नए अवसर से जोड़ने का कितना बड़ा काम पीएम आवास योजना के माध्यम से हो रहा है। वरना पहले तो निर्माण के क्षेत्र में बहनों को सिर्फ अनस्किल्ड लेबर यानि अकुशल श्रमिक ही मान लिया जाता था। मध्य प्रदेश में ही अभी तक 22 हजार करोड़ रुपए इन घरों को बनाने में खर्च हुए हैं। अब वो आप भी सोच सकते हैं 22 हजार करोड़ गए कहां? घर बना लेकिन जिन पैसों से घर बना वो पैसे मध्य प्रदेश के अलग अलग कामों में गए, लोगों के घरों में गए, लोगों की दुकान चलाने वालों को मिले, कारखाना चलाने वालों को मिले ताकि लोगों की आय बढ़े। अर्थ ये है कि ये घर सबके लिए तरक्की लेकर आ रहे हैं। जिसको घर मिलता है उनको भी तरक्की होती है और जिस गांव में घर बनते हैं उन गांव वालों की भी तरक्की होती है।

पहले की सरकारों और हमारी सरकार में एक बहुत बड़ा फर्क है। पहले की सरकारें गरीब को तरसाती थीं, उसे अपने दफ्तरों में चक्कर लगवाती थीं। हमारी सरकार गरीब के पास खुद पहुंच रही है, हर योजना का लाभ गरीब को मिले इसलिए अभियान चला रही है। आज हम सैचुरेशन की बात कर रहे हैं, यानि जनकल्याण की हर योजना का लाभ शत-प्रतिशत लाभार्थियो तक कैसे पहुंचे? कोई भाई-भतीजावाद नहीं, कोई तेरा-मेरा नहीं, इसको देना है, इसको नहीं देना है, कुछ नहीं, जिसका हक है सबको देना है। पक्के घर सबको तेजी से मिले। गैस हो, बिजली कनेक्शन हो, पानी के कनेक्शन हो, आयुष्मान भारत के तहत 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज हो, ये सबको तेजी से मिले। अच्छी सड़कों, अच्छे स्कूल-कॉलेज और अच्छे अस्पतालों तक सभी की पहुंच हो। गांव-गांव ऑप्टिकल फाइबर तेजी से पहुंचे। हम इसके लिए दिन रात मेहनत कर रहे हैं। आखिर हमें ये जल्दी क्यों है, इतनी अधीरता इसके लिए क्यों है? इसके पीछे अतीत का एक बहुत बड़ा सबक है। ऐसी हर मूल सुविधाओं को बीते अनेक दशकों तक लटकाए रखा गया। देश की एक बहुत बड़ी आबादी, इन्हीं मूल सुविधाओं के लिए संघर्ष करती थी। उसके पास बाकी चीजों के बारे में सोचने की फुर्सत भी नहीं थी। इसलिए, गरीबी हटाने के हर वादे, हर दावे, वो सिर्फ राजनीति के दाव हुआ करते थे। वो किसी के काम नहीं आए। सेनापति चाहे कितना भी जोश भरे, लेकिन अगर सैनिकों के पास लड़ाई के लिए मूल सुविधाएं ही नहीं होंगी तो युद्ध जीत पाना असंभव होता है। इसलिए हमनें गरीबी को परास्त करने के लिए, गरीबी से बाहर निकलने के लिए हमनें उन मूल सुविधाओं से देश के हर नागरिक को तेजी से जोड़ने का निश्चय किया। अब सुविधाओं से युक्त होकर गरीब, तेजी से अपनी गरीबी कम करने के लिए प्रयास कर रहा है। और तो मैं आपको कहुंगा ये जो घर आपको दिया है ना। वो सिर्फ रहने, खाने, पीने, सोने की जगह है ऐसा नहीं है। मैं तो कहता हूं ये आपका घर एक ऐसा किला है, ऐसा किला है जो गरीबी को घुसने नहीं देगा बची-कुची गरीबी है उसको भी निकाल के रहेगा ऐसा किला है ये आपका घर।

बीते अनेक महीनों से केंद्र सरकार 80 करोड़ से अधिक देशवासियों को इसलिए मुफ्त राशन दे रही है, ताकि वैश्विक महामारी के समय में उसे भूखमरी का सामना ना करना पड़े। इसके लिए केंद्र सरकार अभी तक पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना पर 3 लाख करोड़ रुपए से अधिक खर्च कर चुकी है। और मैं आपको एक और बात बताना चाहता हूं। जब टैक्स पेयर को लगता है जो देश का खजाना भरते हैं, कर देते हैं, जब उसको लगता है कि उसका पैसा सही जगह खर्च हो रहा है, तो टैक्सपेयर भी खुश होता है, संतुष्ट होता है और ज्यादा टैक्स देते रहता है। आज देश के करोड़ों टैक्सपेयर्स को ये संतोष है कि कोरोना काल में करोड़ों लोगों का पेट भरने में मदद

करके वो कितनी बड़ी सेवा का काम कर रहे हैं। आज जब मैं चार लाख घर दे रहा हूं ना हर टैक्स पेयर सोचता होगा कि चलिये मैं तो दिवाली मना रहा हूं लेकिन मध्य प्रदेश का मेरा कोई गरीब भाई भी अच्छी दिवाली मना रहा है, उसको पक्का घर मिल रहा है। उसकी बेटी का जीवन सुख बन जाएगा।

वही टैक्सपेयर जब ये देखता है कि उससे वसूले गए रुपए में मुफ्त की रेवड़ी बांटी जा रही है, तो टैक्सपेयर सबसे ज्यादा दुखी होता है। आज ऐसे अनेकों टैक्स पेयर्स मुझे खुलकर चिट्ठियां लिख रहे हैं। मुझे खुशी है कि देश में एक बड़ा वर्ग, देश को रेवड़ी कल्चर से मुक्ति दिलाने के लिए कमर कस रहा है।

हमारी सरकार का लक्ष्य, नागरिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के साथ ही, इस बात का भी है कि गरीबों के, मध्यम वर्ग के पैसे बचें। आयुष्मान भारत योजना के तहत अभी तक करीब 4 करोड़ गरीब मरीज मुफ्त इलाज ले चुके हैं। इससे इन सभी परिवारों के हजारों करोड़ रुपए बचे हैं, जो सरकार ने वहन किए हैं। कोरोना काल में मुफ्त टीकाकरण पर हजारों करोड़ रुपए सरकार ने खर्च किए, ताकि गरीब को, मिडिल क्लास को अचानक आई इस गंभीर बीमारी की विपत्ति के कारण जेब से खर्च करना ना पड़े, कर्ज लेना न पड़े। पहले कोरोना आया, फिर दुनिया में लड़ाई आ गई, इससे दुनिया से हमें आज महंगी खाद खरीदनी पड़ रही है। यूरिया, जिसके एक बैग की कीमत आज दो हजार रुपए से ज्यादा है, उसे हम किसानों को सिर्फ 266 रुपए में उपलब्ध करा रहे हैं। 2000 हजार रुपये की बैग 300 रुपये से भी कम रुपयों में दे देते हैं। किसानों पर बोझ ना पड़े, इसलिए इस वर्ष सरकार 2 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च इसके पीछे कर रही है। केंद्र सरकार की पीएम किसान सम्मान निधि भी किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। आपने देखा होगा, कुछ दिन पहले ही जो 16 हजार करोड़ रुपए की जो किस्त भेजी थी, वो हर लाभार्थी किसान तक फौरन पहुंच गई। अभी 2 लाख करोड़ रुपए से अधिक किसानों के बैंक खाते में हमारी सरकार ने जमा कराए हैं। और ये मदद तब पहुंची है, जब बुआई का समय होता है, जब खाद के लिए, दवाओं के लिए किसान को जरूरत होती है। किसान फसल बेचते हैं तो पैसा भी अब सीधे बैंक अकाउंट में आता है। मनरेगा का पैसा भी सीधे बैंक खाते में जमा होता है। यहां तक कि हमारी गर्भवती माताओं को जब अच्छे खाने की सबसे अधिक जरूरत होती है, तब मातृवंदना योजना के हजारों रुपए सीधे उन तक पहुंचते हैं।

ये सब कुछ अगर सरकार आज कर पा रही है तो उसके पीछे सबसे बड़ा कारण है सेवाभाव, आप सबके प्रति समर्पण और कोई कितनी ही हमारी आलोचना करे हम गरीबों का भला करने की राजनीतिक इच्छा शक्ति से, आपके आशीर्वाद से समर्पण भाव से आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए आज इतने बड़े पैमाने पर टेक्नॉलॉजी का उपयोग किया जा रहा है। जो भी नई टेक्नॉलॉजी हमारे वैज्ञानिक, हमारे युवा खोजते हैं, उसका उपयोग सामान्य जन का जीवन आसान बनाने में किया जा रहा है। आज देखिए, गांव-गांव में ड्रोन से घरों के सर्वे हो रहे हैं। पहले जो काम पटवारी करते थे, रैवेन्यु डिपार्टमेंट के कर्मचारी करते थे, अब वही काम टेक्नोलॉजी से ड्रोन आकर के कर देता है।

देश में पहली बार स्वामित्व योजना से गांव के घरों के नक्शे बनाए जा रहे हैं और ग्रामीणों को स्वामित्व के प्रमाण पत्र दिए जा रहे हैं। ताकि सीमा के विवाद ना हों, घर पर कोई अवैध कब्जा ना कर सके और जरूरत पड़ने पर बैंकों से लोन भी मिल सके। इसी प्रकार जब खेती में भी बड़े पैमाने पर ड्रोन के उपयोग पर बल दिया जा रहा है, किसान ड्रोन की सुविधा हो जा रही है। कुछ दिन पहले एक बहुत बड़ा कदम हमने किसानों के लिए उठाया है। देशभर में अभी जो लाखों खाद की दुकानें हैं, उनको प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। अब किसानों को जरूरत का हर सामान एक ही जगह पर इन्हीं किसान केंद्रों पर मिलेगा। अनेक कृषि उपकरण यहां तक कि भविष्य में ड्रोन भी इन्हीं केंद्रों पर किराए पर उपलब्ध होंगे। यूरिया को लेकर भी बहुत बड़ा कदम उठाया है।

अब कौन सी कंपनी की यूरिया लें, कौन सी ना लें, इस मुश्किल से किसान को मुक्ति मिल गई है। अब हर खाद **भारत** नाम से ही मिलेगी। इसमें कीमत भी साफ-साफ लिखी है। जितनी कीमत लिखी है, उससे ज्यादा किसान को देने की जरूरत नहीं है।

मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसे प्रयासों से किसान का, गरीब का जीवन आसान होगा। हम सभी विकसित भारत के निर्माण में जुटे रहेंगे। मैं कल्पना कर सकता हूं कि कितनी खुशी है आपको। खुद का घर तीन-तीन, चार-चार पीढ़ियों गई होंगी, कभी खुद के घर में दिवाली नहीं मनाई होगी। आज जब आप अपने बच्चों के साथ खुद के घर में धनतेरस और दीपावली मना रहे हैं तो आपकी जिंदगी में ये दीया का प्रकाश एक नई रोशनी लेकर के आएगा। ▪

नए मील का पत्थर

अटल बिहारी वाजपेयी

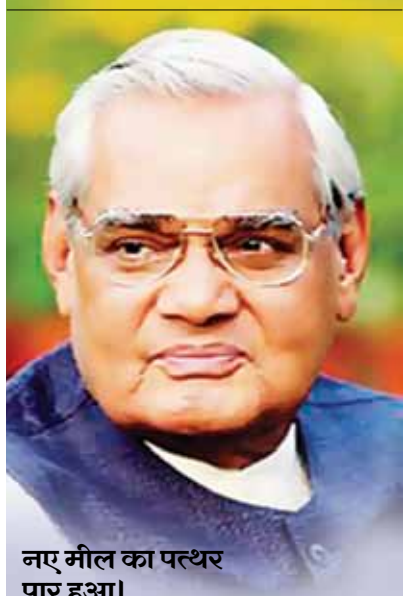

नए मील का पत्थर
पार हुआ।

कितने पत्थर शेष न
कोई जानता?

अन्तिम कौन पड़ाव
नहीं पहचानता?

अक्षय सूरज, अखण्ड धरती,

केवल काया, जीती-मरती,

इसलिये उम्र का बढ़ना भी
त्यौहार हुआ।

नए मील का पत्थर
पार हुआ।

बचपन याद बहुत आता है,

यौवन रसघट भर लाता है,

बदला मौसम, ढलती छाया,

रिसती गागर , लुटती माया,

सब कुछ दांव लगाकर
घाटे का व्यापार हुआ।

नए मील का पत्थर
पार हुआ।

प. पू. सरसंघचालक जी का विजयादशमी उत्सव के शुभ अवसर पर दिया उद्बोधन

नौ रात्रि की शक्ति पूजा के पश्चात विजय के साथ उदित होने वाली आश्विन शुक्ल दशमी के दिन हम प्रति वर्षानुसार विजयादशमी उत्सव को संपन्न करने के लिए यहाँ एकत्रित है। शक्ति स्वरूपा जगद्जननी ही शिवसंकल्पों के सफल होने का आधार है। सर्वत्र पवित्रता व शान्ति स्थापन करने के लिए भी शक्ति का आधार अनिवार्य है। संयोग से आज प्रमुख अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से हमें लाभान्वित व हर्षित करने वाली श्रीमती संतोष यादव उसी शक्ति का व चैतन्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। उन्होंने गौरीशंकर की ऊँचाई को दो बार पादाक्रांत किया है।

संघ के कार्यक्रमों में अतिथि के नाते समाज की प्रबुद्ध वर्ग व कर्तृत्व संपन्न महिलाओं की उपस्थिति की परम्परा पुरानी है। व्यक्ति निर्माण की शाखा पद्धति पुरुष व महिला के लिए संघ तथा समिति की पृथक चलती है। बाकी सभी कार्यों मे महिला पुरुष साथ में मिलकर ही कार्य संपन्न करते हैं। भारतीय परम्परा में इसी पूरकता की दृष्टि से विचार किया गया है। हम ने उस दृष्टि को भुला दिया, मातृशक्ति को सीमित कर दिया। सतत आक्रमणों की परिस्थिति ने इस मिथ्याचार को तात्कालिक वैधता प्रदान की तथा उसको एक आदत के रूप में ढाल दिया। भारत के नवोत्थान के उषाकाल की पहली आहट से हमारे सभी महापुरूषों ने इस रूढ़ि को त्यागकर मातृ शक्ति को एकदम देवता स्वरूप मानकर पूजा घर में बंद करना अथवा द्वितीय श्रेणी की मानकर रसोईघर में मर्यादित कर देना, इन दोनों अथियों से बचते हुए उनके प्रबोधन, सशक्तिकरण तथा समाज के सभी क्रियाकलापों में, निर्णय प्रक्रिया सहित सर्वत्र बराबरी की सहभागिता पर ही जोर दिया है। तरह-तरह के अनुभवों की ठोकरें खा कर विश्व में प्रचलित व्यक्तिवादी तथा स्त्रीवादी दृष्टिकोण भी अब इस तरफ ही अपना विचार मोड़ रहा है। 2017 में विभिन्न संगठनों में काम करने वाली महिला कार्यकर्ताओं ने मिलकर भारत की महिलाओं का बहुत व्यापक व सर्वांगीण सर्वेक्षण किया। वह शासन को भी पहुंचाया गया। उस सर्वेक्षण के निष्कर्षों से भी मातृशक्ति के प्रबोधन, सशक्तिकरण तथा उनकी समान सहभागिता की आवश्यकता अधोरेखित होती है। यह कार्य कुटुम्ब स्तर से प्रारम्भ होकर संगठनों तक स्वीकृत व प्रचलित होना पड़ेगा तब और तभी मातृशक्ति सहित सम्पूर्ण समाज की संहति राष्ट्रीय नवोत्थान में अपनी भूमिका का सफल निवाह कर सकेगी।

''राष्ट्र के इतिहास में ऐसा समय आता है जब नियति उसके सामने ऐसा एक ही कार्य, एक ही लक्ष्य रख देती है, जिस पर अन्य सब कुछ, चाहे वह कितना भी उन्नत या उदात्त क्यों न हो, न्यौछावर करना ही पड़ता है।

हमारी मातृभूमि के लिए अब ऐसा समय आया है जब उसकी सेवा के अतिरिक्त और कुछ भी प्रिय नहीं, जब अन्य सब उसी के लिए प्रयुक्त करना है। यदि आप पढ़ें तो उसी के लिए पढ़ो, शरीर, मन व आत्मा को उसकी सेवा के लिए ही प्रशिक्षित करो। अपनी जीविका इस लिए प्राप्त करो कि उस के लिए जीना है। सागर पार विदेशों में इसलिए जाओगे कि वहाँ से ज्ञान ले आ कर उससे उसकी सेवा कर सकें। उसके वैभव के लिए काम करो। वह आनंद में रहे इस लिए दु:ख झेलो। इस एक परामर्श में सब कुछ आ गया।''

इस राष्ट्रीय नवोत्थान की प्रक्रिया को अब सामान्य व्यक्ति भी अनुभव कर रहा है। अपने प्रिय भारत के बल में, शील में तथा जागतिक प्रतिष्ठा में वृद्धि का निरन्तर क्रम देख कर हम सभी आनन्दित हैं। सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाली नीतियों का अनुसरण का पुरस्कार शासन के द्वारा हो रहा है। विश्व के राष्ट्रों में अब भारत का महत्व तथा विश्वसनीयता बड़ गयी है। सुरक्षा क्षेत्र में हम अधिकाधिक स्वावलंबी होते चले जा रहे हैं। कोरोना की विपदा से निकल कर गति से सम्हल कर हमारी अर्थव्यवस्था पूर्व स्थिति प्राप्त कर रही है। आधुनिक भारत के इस आगे कूच के आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक बुनियादी ढाँचे का वर्णन नयी दिल्ली में कर्तव्य-पथ के उद्घाटन समारोह के समय प्रधानमंत्री जी से आपने सुना ही है। शासन के द्वारा स्पष्ट रूप से घोषित यह दिशा अभिनन्दन योग्य है। परन्तु इस दिशा में हम सब मन वचन कर्म से एक होकर चलें इस की आवश्यकता है। आत्मनिर्भता के पथ पर बढ़ने के लिए अपने राष्ट्र के आत्मस्वरूप को, शासन, प्रशासन व समाज स्पष्ट तथा समान रूप से समझता हो यह अनिवार्य पूर्व शर्त है। अपने अपने स्थान व परिस्थिति में उसके आधार पर बढ़ते समय आवश्यकता पड़ने पर कुछ लचीलापन धारण करना पड़ता है। तब आपसी समझदारी तथा विश्वास मिलकर आगे कूच को कायम रखते हैं। विचार की स्पष्टता, समान दृष्टि

तथा दृढ़ता, लचीलेपन की मर्यादा का भान प्रदान कर गलतियों से व भटकाव से बचाते हैं। शासन, प्रशासन, विभिन्न प्रकार के नेतागण तथा समाज इस प्रकार स्वार्थ व भेदभावों से परे होकर सहचित्त हो कर्तव्य पथ पर बढ़ते हैं, तब राष्ट्र प्रगति की दिशा में अग्रसर होता है। शासन प्रशासन तथा नेता-गण अपने कर्तव्यों को करेंगे ही, समाज को भी अपने कर्तव्यों का विचारपूर्वक निर्वहन करना चाहिए।

इस नवोत्थान की प्रक्रिया में अभी भी बाधाओं को पार करने का काम करना पड़ेगा। पहली बाधा है गतानुगतिकता! समय के साथ मनुष्यों का ज्ञाननिधि बढ़ते रहता है। समय के चलते कुछ चीजें बदलती है, कुछ विलुप्त हो जाती हैं। कुछ नयी बातें व परिस्थितियाँ जन्म भी लेती हैं। इसलिए नयी रचना बनाते समय हमें परम्परा व सामयिकता का समन्वय करना पड़ता है। कालबाह्य हुई बातों का त्याग कर नयी युगानुकुल व देशानुकुल परम्पराएं बनानी पड़ती हैं, उसी समय हमारी पहचान, संस्कृति, जीवन दृष्टि आदि को अधोरेखित करने वाले शाश्वत मूल्यों का क्षरण न हो, उनके प्रति श्रद्धा व उनका आचरण, पूर्ववत बना रहे इसकी सावधानी बरतनी पड़ती है। दूसरे प्रकार की बाधाएं भारत की एकता व उन्नति को न चाहने वाली शक्तियां निर्माण करती है। गलत अथवा असत्य विमर्श को प्रसारित कर भ्रम फैलाना, आततायी कृत्य करना अथवा उसको प्रोत्साहन देना और समाज में आतंक, कलह व अराजकता को बढ़ाते रहना यह उनकी कार्य पद्धति का अनुभव हम ले ही रहे हैं। समाज के विभिन्न वर्गों में स्वार्थ व द्वेष के आधार पर दूरियाँ और दुश्मनी बनाने का काम स्वतंत्र भारत में भी उनके द्वारा चल रहा है। उनके बहकावे में न फंसते हुए, उनकी भाषा, पंथ, प्रांत, नीति कोई भी हो, उनके प्रति निर्मोही हो कर निर्भयतापूर्वक उनका निषेध व प्रतिकार करना चाहिए। शासन व प्रशासन के इन शक्तियों के नियंत्रण व निर्मूलन के प्रयासों में हमको सहायक बनना चाहिए। समाज का सबल व सफल सहयोग ही देश की सुरक्षा व एकात्मता को पूर्णतः निश्चित कर सकता है। समाज की सशक्त भूमिका के बिना कोई भला काम अथवा कोई परिवर्तन यशस्वी व स्थायी नहीं हो सकता यह सर्वत्र अनुभव है। अच्छी व्यवस्था भी लोगों का मन बनाएं बिना अथवा लोगों ने मन से स्वीकार नहीं की तो चल नहीं पाती।

विश्व में आये अथवा लाये गये सभी बड़े व स्थायी परिवर्तनों में समाज की जागृति के बाद ही व्यवस्थाओं तथा तंत्र में परिवर्तन आया है। मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा देने वाली नीति बननी चाहिए यह अत्यंत उचित विचार है, और नयी शिक्षा नीति के तहत उस ओर शासन/प्रशासन पर्याप्त ध्यान भी दे रहा है। परन्तु अपने पाल्यों को मातृभाषा में पढ़ाना अभिभावक चाहते हैं क्या? अथवा तथाकथित आर्थिक लाभ अथवा Career (जिसके लिए शिक्षा से भी अधिक आवश्यकता उद्यम, साहस व सूझ बूझ की होती है) की मृग मरीचिका के पीछे चली अंधी दौड़ में अपने पाल्योंको दौड़ाना चाहते हैं? मातृभाषा की प्रतिष्ठा की अपेक्षा शासन से करते समय हमें यह

भी देखना होगा कि हम हमारे हस्ताक्षर मातृभाषा में करते हैं या नहीं? हमारे घर पर नामफलक मातृभाषा में लगा है कि नहीं? घर के कार्य प्रसंगों के निमंत्रण पत्र मातृभाषा में भेजे जाते हैं या नहीं?

नयी शिक्षा नीति के कारण छात्र एक अच्छा मनुष्य बने, उसमें देश भक्ति की भावना जगे, वह सुसंस्कृत नागरिक बने यह सभी चाहते हैं। परन्तु क्या सुशिक्षित, संपन्न व प्रबुद्ध अभिभावक भी शिक्षा के इस समग्र उद्देश्य को ध्यान में रख कर अपने पाल्यों को विद्यालय महाविद्यालयों में भेजते हैं? फिर शिक्षा केवल कक्षाओं में नहीं होती। घर में संस्कारों का वातावरण रखने में अभिभावकों की, समाज में भद्रता, सामाजिक अनुशासन इत्यादि का वातावरण ठीक रखने वाले माध्यमों की, जननेताओं की तथा पर्व, त्यौहार, उत्सव, मेले आदि सामाजिक आयोजनों की भूमिका का भी बराबरी का महत्व होता है। उस पक्ष पर हमारा ध्यान कितना है? बिना उसके केवल विद्यालयीन शिक्षा कदापि प्रभावी नहीं हो सकती है।

विविध प्रकार की चिकित्सा पद्धतियाँ समन्वित कर स्वास्थ्य की सस्ती, उत्तम गुणवत्ता की, सर्वत्र सुलभ तथा व्यापारिक मानसिकता से मुक्त व्यवस्था दने वाला स्वास्थ्य तंत्र शासन के द्वारा खड़ा हो यह संघ का भी प्रस्ताव है। शासन की प्रेरणा व समर्थन से भी व्यक्तिगत व सामाजिक स्वच्छता के, योग तथा व्यायाम के उपक्रम चलते हैं। समाज में भी ऐसा आग्रह रखने वाले, इन बातों का महत्व बताने वाले बहुत हैं। लेकिन इन सबकी उपेक्षा कर समाज अपने पुराने ढर्रे पर ही चलते रहा तो कौन सी ऐसी व्यवस्था है जो सबके स्वास्थ्य को ठीक रख सकेगी?

संविधान के कारण राजनीतिक तथा आर्थिक समता का पथ प्रशस्त हो गया, परन्तु सामाजिक समता को लाये बिना वास्तविक व टिकाऊ परिवर्तन नही आयेगा ऐसी चेतावनी पूज्य डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने हम सबको दी थी। बाद में कथित रूप से इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर कई नियम आदि बने। परन्तु विषमता का मूल तो मन में ही तथा आचरण की आदत में है। व्यक्तिगत तथा कौटुंबिक स्तर पर आपस में मित्रता के, सहज अनौपचारिक आने जाने, उठने बैठने के संबंध बनते नहीं, तथा सामाजिक स्तर पर मंदिर, पानी,शमशान सब हिन्दुओं के लिए खुले नहीं होते, तब तक समता की बातें केवल स्वप्नों की बातें रह जायेंगी ।

जो परिवर्तन तंत्र के द्वारा लाया जाए ऐसी हमारी अपेक्षा है वह बातें हमारे आचरण में होने से परिवर्तन की प्रक्रिया को गति व बल मिलता है, वह स्थाई हो जाता है। ऐसा न होने से परिवर्तन प्रक्रिया अवरुद्ध हो सकती है और परिवर्तन स्थायित्व की ओर नहीं बढ़ता। परिवर्तन के लिए समाज की विशिष्ट मानसिकता को बनाना अनिवार्य पूर्व शर्त है। अपनी विचार परम्परा पर आधारित उपभोगवाद व शोषण से रहित विकास को साधने के लिए समाज से तथा स्वयं के जीवन से भोगवृत्ति व शोषक प्रवृत्ति को जड़ मूल से हटाना पड़ेगा।

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में आर्थिक तथा विकास नीति रोजगार-उन्मुख हो यह अपेक्षा स्वाभाविक ही कही जायेगी। परन्तु रोजगार याने केवल नौकरी नहीं यह समझदारी समाज में भी बढ़नी पड़ेगी। कोई काम प्रतिष्ठा में छोटा या हल्का नहीं है, परिश्रम, पूंजी तथा बौद्धिक श्रम सभी का महत्व समान है यह मान्यता व तदनुरूप आचरण हम सबका होना पड़ेगा। उद्यमिता की ओर जाने वाली प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देना होगा। प्रत्येक

जिले में रोजगार प्रशिक्षण की विकेन्द्रित योजना बने तथा अपने जिले में ही रोजगार प्राप्त हो सकें, गाँवों में विकास के कार्यक्रम से शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदि सुविधाएँ सुलभ हो जायें यह अपेक्षा सरकार से तो रहती ही है। परन्तु कोरोना की आपत्ति के समय कार्यरत रहने वाले कार्यकर्ताओं ने यह भी अनुभव किया है कि समाज का संगठित बल भी बहुत कुछ कर सकता है। आर्थिक क्षेत्र में काम करने वाले संगठन, लघु उद्यमी, कुछ सम्पन्न सज्जन, कलाकौशल के जानकार, प्रशिक्षक तथा स्थानीय स्वयंसेवकों ने लगभग 275 जिलों में स्वदेशी जागरण मंच के साथ मिलकर यह प्रयोग प्रारम्भ किया है। इस प्रारम्भिक अवस्था में ही रोजगार सृजन में उल्लेखनीय योगदान देने में वे सफल हुए हैं ऐसी जानकारी मिल रही है।

राष्ट्रजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समाज के सहभाग का यह विचार व आग्रह शासन को उनके दायित्व से मुक्त करने के लिए नही, बल्कि राष्ट्र के उत्थान में समाज के सहभाग को साथ लेने की आवश्यकता तथा उसके लिए अनुकूल नीति निर्धारण की ओर इंगित करता है। अपने देश की जनसंख्या विशाल है यह एक वास्तविकता है। जनसंख्या का विचार आजकल दोनों प्रकार से होता है। इस जनसंख्या के लिए उतनी मात्रा में साधन आवश्यक होंगे, वह बढ़ती चली जाय तो भारी बोझ-कदाचित असह्य बोझ-बनेगी। इसलिए उसे नियंत्रित रखने का ही पहलू विचारणीय मानकर योजना बनाई जाती है। विचार का दूसरा प्रकार भी सामने आता है, उस में जनसंख्या को एक निधि-Asset-भी माना जाता है। उसके उचित प्रशिक्षण व अधिकतम उपयोग की बात सोची जाती है। पूरे विश्व की जनसंख्या को देखते हैं तो एक बात ध्यान में आती है। केवल अपने देश को देखते हैं तो विचार बदल भी सकता है। चीन ने अपनी जनसंख्या नियंत्रित करने की नीति बदलकर अब उसकी वृद्धि के लिए प्रोत्साहन देना प्रारंभ किया है। अपने देश का हित भी जनसंख्या के विचार को प्रभावित करता है। आज हम सबसे युवा देश हैं। आगे 50 वर्षों के पश्चात आज के तरुण प्रौढ़ बनेंगे तब उनकी सम्हाल के लिए कितने तरुण आवश्यक होंगे यह गणित हमें भी करना होगा। देश का जन अपने पुरूषार्थ से देश को वैभवशाली बनाता है, साथ ही स्वंय का व समाज का जीवन निर्वाह भी सुरक्षित करता है। जनता के योगक्षेम के तथा राष्ट्रीय पहचान व सुरक्षा के अतिरिक्त और भी कुछ पहलुओं को यह विषय छूता है।

संतान संख्या का विषय माताओं के स्वास्थ्य, आर्थिक क्षमता, शिक्षा, इच्छा से जुड़ा है। प्रत्येक परिवार की आवश्यकता से भी जुड़ा है। जनसंख्या पर्यावरण को भी प्रभावित करतीं हैं। सारांश में जनसंख्या नीति इतनी सारी बातों का समग्र व एकात्म विचार करके बने, सभी पर समान रूप से लागू हो, लोक प्रबोधन द्वारा इस के पूर्ण पालन की मानसिकता बनानी होगी। तभी जनसंख्या नियंत्रण के नियम परिणाम ला सकेंगे। सन् 2000 में भारत सरकार ने समग्रता से विचार कर एक जनसंख्या नीति का निर्धारण किया था। उसमें एक महत्वपूर्ण लक्ष्य 2.1 के प्रजनन दर (TFR) को प्राप्त करना था। अभी 2022 में हर पाँच वर्ष में प्रकाशित NFHS की रिपोर्ट आई है। जहाँ समाज की जागरूकता और सकारात्मक सहभागिता तथा केंद्र एवं राज्य सरकारों के सतत समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप 2.1 से भी कम लगभग 2.0 के प्रजनन दर पर आ गई है। जहाँ जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता और उस लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में हम निरंतर अग्रसर हैं, वहीं दो प्रश्न और भी विचार के लिए खड़े हो रहे हैं। समाज विज्ञानी और मनोवैज्ञानिकों के मत के अनुसार बहुत छोटे परिवारों के कारण बालक-बालिकाओं के स्वस्थ्य समग्र विकास, परिवारों में असुरक्षा का भाव सामाजिक तनाव, एकाकी जीवन आदि अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है और हमारे समाज की संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र ''परिवार व्यवस्था'' पर भी एक प्रश्न चिन्ह खड़ा हो गया है। वहीं एक दूसरा महत्व का प्रश्न जनसांख्यिकी असंतुलन का भी है। 75 वर्ष पूर्व हमने अपने देश में इस का अनुभव किया ही है और इक्कीसवीं सदी में जिन तीन नये स्वतंत्र देशों का अस्तित्व विश्व में हुआ, ईस्ट तिमोर, दक्षिणी सुडान और कोसोवो, वे इंडोनेशिया, सुडान और सर्बिया के एक भूभाग में जनसंख्या का संतलुन बिगड़ने का ही परिणाम है। जब-जब किसी देश में जनसांख्यिकी असंतुलन होता है तब-तब उस देश की भौगोलिक सीमाओं में भी परिवर्तन आता है। जन्मदर में असमानता के साथ-साथ लोभ, लालच, जबरदस्ती से चलने वाला मतांतरण व देश में हुई घुसपैठ भी बड़े कारण है। इन सबका विचार करना पड़ेगा। जनसंख्या नियंत्रण के साथ-साथ पांथिक आधार पर जनसंख्या संतुलन भी महत्व का विषय है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती । प्रजातंत्र में प्रजा के मनोयोग से सहयोग का महत्व सर्वश्रुत है ही। नियमों का बनना, स्वीकार होना तथा अपेक्षा परिणाम तक पहुँचना उसी से होता है। जिन नियमों से त्वरित लाभ होते हैं, अथवा कालांतर में कोई लाभ अथवा स्वार्थसिद्धि दिखाई देती हो उन्हें समझाना नहीं पड़ता। परन्तु जब देश के हित में या दुर्बलों के हित में अपने स्वार्थ को छोड़ना पड़े, वहाँ इस त्याग के लिए जनता सदैव तैयार रहे इस लिए समाज में स्व का बोध व गौर जगाए रखने की आवश्यकता होती है।

यह स्व हम सबको जोड़ता है। क्योंकि वह हमारे प्राचीन पूर्वजों ने प्राप्त किये सत्य की प्रत्यक्षानुभूति का सीधा परिणाम है। ''सर्वं यदभूतं यच्च भव्यं'' उसी एक शाश्वत अव्यय मूल की अभिव्यक्ति मात्र है, इसीलिए अपनी विशिष्टता पर श्रद्धापूर्वक दृढ़ रहते हुए सभी की विविधता, विशिष्टता का सम्मान व स्वीकार करना चाहिए, यह बात सबको सिखाने वाला केवल भारत है। सब एक हैं इस लिए सबको मिलजुल कर चलना चाहिए, मान्यताओं की विविधता हमको अलग नहीं करती। सत्य, करुणा, अतंर्बाह्य शुचिता, तथा तपस् का तत्वचतुष्टय सभी मान्यताओं को साथ चलाता है। सभी विविधताओं को सुरक्षित व विकास मान रखते हुए जोड़ता है। उसी को हमारे यहां धर्म कहा गया । इन्हीं चार तत्वों के आधार पर सम्पूर्ण विश्व के जीवन को समन्वय, संवाद, सौहार्द तथा शान्ति पूर्वक चला सकने वाले संस्कार देने वाली संस्कृति हम सबको जोड़ती है, विश्व को कुटुम्ब के नाते जोड़ने की प्रेरणा देती है। सृष्टि से लेकर हम सभी जीते हैं, फलते फूलते हैं। जीवने यावदादानं स्यात्प्रदानं ततोऽधिकम् की भावना हमें उसी से मिलती है। ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की यह भावना तथा ''विश्वं भवत्येकं नीडम्'' यह भव्य लक्ष्य हमें पुरूषार्थ की प्रेरणा देता है।

हमारे राष्ट्रीय जीवन का यह सनातन प्रवाह प्राचीन समय से इसी उद्देश्य से इसी रीति से चलता आया है। समय व परिस्थिति के अनुसार रूप, पथ तथा शैली बदलती गयी परन्तु मूल विचार, गन्तव्य तथा उद्देश्य निरन्तर वही रहे हैं। इस पथ पर यह निरन्तर गति हमें अगणित वीरों के शौर्य और समर्पण से, असंख्य कर्मयोगियों के भीम परिश्रम से तथा ज्ञानियों की दुर्धर तपस्या से प्राप्त हुई है। उनको हम सब अपने जीवन में अनुकरणीय आदर्शों का स्थान देते हैं। वे हम सबके गौरव निधान हैं। वे हमारे समान पूर्वज हमारे जुड़ने का एक और आधार हैं। उन सभी ने हमारी पवित्र मातृभूमि भारत वर्ष के ही गुणगान किये हैं। प्राचीन काल से सभी प्रकार की विविधता को ससम्मान स्वीकार कर साथ चलाने का हमारा स्वभाव बना, भौतिक सुख की परमावधि पर ही

न रुकते हुए अपने अन्तरतम की गहराइयों को खंगालकर हमने अस्तित्व के सत्य को प्राप्त किया, विश्व को अपना ही परिवार मानकर सर्वत्र ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति व भद्रता का प्रसार किया इसका कारण यह हमारी मातृभूमि भारत ही है। प्राचीन काल में सुजल सुफल मलयजशीतल इस भारत जननी ने प्राकृतिक रीति से सर्वथा सुरक्षित अपनी चतुःसीमा में जो सुरक्षा व निश्चिंतता हमें दी उसी का यह फल है। उस अखण्ड मातृभूमि की अनन्य भक्ति हमारी राष्ट्रीयता का मुख्य आधार है।

प्राचीन समय से भूगोल, भाषा, पंथ रहन-सहन, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्थाओं की विविधताओं के बावजूद समाज के नाते, संस्कृति के नाते, राष्ट्र के नाते हमारा एक जीवन प्रवाह अक्षुण्ण चलता रहा है। इस में सभी विविधताओं का स्वीकार है, सम्मान है, सुरक्षा है, विकास है। किसी को अपनी संकुचितता, कट्टरता, आक्रामकता व अहंकार के अतिरिक्त कुछ भी छोड़ना नही पड़ता। सत्य, करुणा, अतंर्बाह्य शुचिता व इन तीनों की साधना के अतिरिक्त कुछ भी अनिवार्य नहीं। भारत भक्ति, हमारे समान पूर्वजों के उज्वल आदर्श व भारत की सनातन संस्कृति इन तीन दीप स्तंभों के द्वारा प्रकाशित व प्रशस्त पथ पर मिलजुल कर प्रेम पूर्वक चलना यही अपना स्व अपना राष्ट्र धर्म है।

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के समाज को आवाहन का प्रारंभ से यही आशय रहा है। आज यह अनुभव आता है कि उस पुकार को सुनने समझने को अब सब लोग तैयार हैं। अज्ञान, असत्य, द्वेष, भय, अथवा स्वार्थ के कारण संघ के विरूद्ध जो अपप्रचार चलता है उसका प्रभाव कम हो रहा है। क्योंकि संघ की व्याप्ति व समाज संपर्क में-यानी संघ की शक्ति में लक्षणीय वृद्धि हुई है। दुनिया में सुना जाने के लिए सत्य को भी शक्तिशाली होना पड़ता है यह जीवन का विचित्र वास्तव है। दुनिया में दुष्ट शक्तियाँ भी हैं, उनसे बचने के लिए व अन्यों को बचाने के लिए भी सज्जनों की संगठित शक्ति चाहिए। संघ उपरोक्त राष्ट्र विचार का प्रचार-प्रसार करते हुए सम्पूर्ण समाज को संगठित शक्ति के रूप में खड़ा करने का काम कर रहा है। यही हिंदू समाज के संगठन का काम है, क्योंकि उपरोक्त राष्ट्र विचार को हिंदू राष्ट्र का विचार कहते हैं और वह है भी। इसलिए संघ उपरोक्त राष्ट्र विचार को मानने वाले सबका यानी हिंदू समाज का संगठन, हिंदू धर्म, व संस्कृति व समाज का संरक्षण कर हिंदू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए, ''सर्वेषां अविरोधेन'' करता है।

अब जब संघ को समाज मे कुछ स्नेह तथा विश्वास का लाभ हुआ है और उसकी शक्ति भी है तो हिन्दू राष्ट्र की बात को लोग गम्भीरता पूर्वक सुनते हैं। इसी आशय को मन में रखते हुए परन्तु हिन्दू शब्द का विरोध करते हुए अन्य शब्दों का उपयोग करने वाले लोग हैं। हमारा उनसे कोई विरोध नहीं। आशय की स्पष्टता के लिए हम हमारे लिए हिंदू शब्द का आग्रह रखते रहेंगे।

तथाकथित अल्पसंख्यकों में बिना कारण एक भय का हौवा खड़ा किया जाता है कि हम से अथवा संगठित हिन्दू से खतरा है। ऐसा न कभी हुआ है न होगा। न यह हिंदू का, न ही संघ का स्वभाव या इतिहास रहा। अन्याय, अत्याचार,द्वेष का सहारा लेकर गुंडागर्दी करने वाले समाज की शत्रुता करते हैं तो आत्मरक्षा अथवा आप्तरक्षा तो सभी का कर्तव्य बन जाता है। ''ना भय देत काहू को ना भय जानत आप'' ऐसा हिन्दू समाज खड़ा हो यह समय की आवश्यकता है। यह किसी के विरूद्ध नहीं है। संघ पूरे दृढ़ता के साथ आपसी भाईचारा, भद्रता व शांति के पक्ष में खड़ा है।

ऐसी चिन्ताएँ मन में रखकर तथाकथित अल्पसंख्यकों में से कुछ सज्जन गत वर्षों में मिलने के लिए आते रहे हैं। उनसे संघ के कुछ अधिकारियों का संपर्क व संवाद हुआ है, होते रहेगा। भारतवर्ष प्राचीन राष्ट्र है, एक राष्ट्र है। उसकी उस पहचान व परंपरा की धारा के साथ तन्मयता पूर्वक अपनी-अपनी विशिष्टता को रखते हुए हम सभी प्रेम सम्मान व शांति के साथ राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा मिलकर करते चलें। एक दूसरे के सुख- दुख में परस्पर साथी बनें, भारत को जानें, भारत को मानें, भारत के बनें, यही एकात्म, समरस राष्ट्र की कल्पना संघ करता है। संघ का और कोई उद्देश्य या स्वार्थ इस में नहीं है। अभी पिछले दिनों उदयपुर में एक अत्यंत ही जघन्य एवं दिल दहला देने वाली घटना घटी। सारा समाज स्तब्ध रह गया। अधिकांश समाज दुखी एवं आक्रोशित था। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो यह सुनिश्चित करना होगा। ऐसी घटनाओं के मूल में पूरा समाज नहीं होता। उदयपुर घटना के बाद मुस्लिम समाज में से भी कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने अपना निषेध प्रगट किया। यह निषेध अपवाद बन कर ना रह जाए अपितु अधिकांश मुस्लिम समाज का यह स्वभाव बनना चाहिए। हिन्दू समाज का एक बड़ा वर्ग ऐसी घटना घटने पर हिंदू पर आरोप लगे तो भी मुखरता से विरोध और निषेध प्रगट करता है।

उकसाना कोई भी और कैसा भी हो, कानून एवं संविधान की मर्यादा में रहकर सदैव सबको अपना विरोध प्रगट करना चाहिए। समाज जुड़े-टूटे नहीं, झगड़े नहीं, बिखरे नहीं। मन-वचन-कर्म से यही प्रतिभाव मन में रखकर समाज के सभी सज्जनों को मुखर होना चाहिए। हम दिखते भिन्न और विशिष्ट हैं इसलिए हम अलग हैं, हमें अलगाव चाहिए, इस देश के साथ, इस की मूल मुख्य जीवनधारा व पहचान के साथ हम नहीं चल सकते, इस असत्य के कारण ''भाई टूटे धरती खोयी मिटे धर्म संस्थान'' यह विभाजन का जहरीला अनुभव लेकर कोई भी सुखी तो नहीं हुआ। हम भारत के हैं, भारतीय पूर्वजों के हैं, भारत की सनातन संस्कृति के हैं, समाज व राष्ट्रीयता के नाते एक हैं, यही हमारा तारक मंत्र है।

स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। हमारे राष्ट्रीय नवोत्थान के प्रारंभ काल में स्वामी विवेकानंद जी ने हमें भारत माता को ही आराध्य मानकर कर्मरत होने का आवाहन किया था। 15 अगस्त 1947 को पहले स्वतंत्रता दिवस तथा स्वयं के वर्धापन दिवस पर महर्षि अरविन्द ने भारतवासियों को संदेश दिया। उसमें उनके पांच सपनों का उल्लेख है। भारत की स्वतंत्रता व एकात्मता यह पहला था। संवैधानिक रीति से राज्यों का विलय हो कर एकसंध भारत बनने पर वे प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। किन्तु विभाजन के कारण हिन्दू व मुसलमानों के बीच एकता के बजाय एक शाश्वत राजनीतिक खाई निर्माण हुई, जो भारत की एकात्मता, उन्नति व शांति के मार्ग में बाधक बन सकती है इसकी उन्हें चिंता थी। जिस किसी प्रकार से जाए, विभाजन निरस्त हो कर भारत अखंड बने यह उत्कट इच्छा वे जताते हैं। क्योंकि उनके अगले सभी स्वप्नों को-एशिया के देशों की मुक्ति, विश्व की एकता, भारत की आध्यात्मिकता का वैश्विक अभिमंत्रण तथा अतिमानस का जगत में अवतरण-साकार करने में भारत की ही प्रधानता होगी यह वे जानते थे। इसलिए कर्तव्य का उनका दिया संदेश बहुत स्पष्ट है-

''राष्ट्र के इतिहास में ऐसा समय आता है जब नियति उसके सामने ऐसा एक ही कार्य, एक ही लक्ष्य रख देती है, जिस पर अन्य सब कुछ, चाहे वह कितना भी उन्नत या उदात्त क्यों न हो, न्योछावर करना ही पड़ता है। हमारी मातृभूमि के लिए अब ऐसा समय आया है जब उसकी सेवा के अतिरिक्त और कुछ भी प्रिय नहीं, जब अन्य सब उसी के लिए प्रयुक्त करना है। यदि आप पढ़ें तो उसी के लिए पढ़ो, शरीर, मन व आत्मा को उसकी सेवा के लिए ही प्रशिक्षित करो। अपनी जीविका इस लिए प्राप्त करो कि उस के लिए जीना है। सागर पार विदेशों में इसलिए जाओगे कि वहाँ से ज्ञान ले आ कर उससे उसकी सेवा कर सकें। उसके वैभव के लिए काम करो। वह आनंद में रहे इस लिए दुःख झेलो। इस एक परामर्श में सब कुछ आ गया।''

भारत के लोगों के लिए आज भी यही सार्थक संदेश है।

गांव गांव में सज्जन शक्ति।
रोम रोम में भारत भक्ति।
यही विजय का महामंत्र है।
दसों दिशा से करें प्रयाण ।।
जय जय मेरे देश महान ।।
भारत माता की जय ▪

मोदी युग में सांस्कृतिक भारत का अभ्युदय

विष्णुदत्त शर्मा

सदियों से भारत अपनी सांस्कृतिक आध्यात्मिकता के लिए विख्यात है। यह देश आध्यात्मिक ज्ञान का केंद्र रहा है। यहां बहने वाले आस्था के सैलाब को सारी दुनिया देखने आती रही है। अनेक विदेशी यात्रियों ने भी अपने संस्मरणों में इनका उल्लेख किया है। हजारों साल के इतिहास में हमारे श्रद्धा केंद्रों को विधर्मियों द्वारा ध्वस्त किये जाने के बावजूद ये पवित्र स्थल अपने पुण्य प्रवाह के साथ वर्षों से टिके हुए हैं। अपनी उत्कृष्टता का दंभ भरने वाले मिस्र, रोम जैसी सभ्यताओं के चिन्ह आज नहीं के बराबर हैं, उनका एक भी सांस्कृतिक अंश अपने मूल स्वरूप में उपस्थित नहीं है। परन्तु भारत एकमात्र ऐसा देश है, जो यह दावा कर सकता है कि उसने लाखों विपत्तियों के बावजूद अपनी आध्यात्मिकता और आस्था केंद्रों की प्राण शक्ति से अपने सनातन चरित्र को जीवंत रखा है। बहरहाल, आजादी का सूरज निकलने के बाद उम्मीद थी कि स्वाधीन भारत की सरकारें इस पर ध्यान देंगी और हमारे आस्था के केंद्र अपनी प्राचीन अवस्था में पुर्नस्थापित होंगे परन्तु एक खास तरह के तुष्टिकरण की राजनीति ने अपनी जगह बना ली और भारत के अनेक श्रद्धा केंद्र विकास की राह ताकते रहे।

यह दैवीय संयोग ही है कि 2014 से भारत के आध्यात्मिक जगत में सांस्कृतिक उत्थान के एक नये युग की शुरुआत हुई। 500 वर्षों से विवादित श्रीराम मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ और आज मोदी सरकार के नेतृत्व में तेजी से मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है। भारी प्राकृतिक आपदा झेल चुके हमारे चार धाम में एक केदारनाथ धाम का कायाकल्प भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की इच्छा शक्ति से सम्पन्न हो चुका है। उत्तराखंड में चारधाम यात्रा नामक परियोजना परवान चढ़ चुकी है और लगभग सभी दुर्गम आस्था केंद्रों पर अब 12 महीने आसानी से पहुंचा जा सकता है। ऋषिकेश और कर्ण प्रयाग को रेलवे मार्ग से भी जोड़ा जा रहा है, जो 2025 तक पूरा होगा। कश्मीर में धारा 370 की समाप्ति के बाद मंदिरों के पुनरुद्धार का काम शुरू हुआ है। श्रीनगर स्थित रघुनाथ मंदिर हो या माता हिंगलाज का मंदिर, सभी प्रमुख मंदिरों के स्वरूप को नवजीवन दिया जा रहा है। पिछले साल भारत की आध्यात्मिक राजधानी काशी का पुनरुद्धार श्री नरेंद्र मोदी जी के कर कमलों से ही संभव हुआ है। वह उनका संसदीय क्षेत्र है इसलिए काशी का विकास हुआ, ऐसा नहीं है। क्योंकि पहले भी अनेक बड़े नेता वहां का संसदीय नेतृत्व कर चुके हैं लेकिन किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि काशी की सकरी गलियों में विश्वनाथ भगवान के लिए कॉरीडोर बन सकता है। परन्तु यह संभव हुआ है और बहुत तेज गति से हुआ है। आज काशी अपने नए रंगरूप में अपनी आध्यात्मिक पहचान के साथ चमचमा रही है। काशी न्यारी हो गई है। जहां दुनिया भर के लोग आकर वास्तविक भारत और उसकी आध्यात्मिक राजधानी को निहार रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जितना ध्यान

यह दैवीय संयोग ही है कि 2014 से भारत के आध्यात्मिक जगत में सांस्कृतिक उत्थान के एक नये युग की शुरुआत हुई। 500 वर्षों से विवादित श्रीराम मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ और आज मोदी सरकार के नेतृत्व में तेजी से मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है। भारी प्राकृतिक आपदा झेल चुके हमारे चार धाम में एक केदारनाथ धाम का कायाकल्प भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की इच्छा शक्ति से सम्पन्न हो चुका है।

उत्तराखंड में चार धाम यात्रा नामक परियोजना परवान चढ़ चुकी है और लगभग सभी दुर्गम आस्था केंद्रों पर अब 12 महीने आसानी से पहुंचा जा सकता है।

देश के मंदिरों के पुनरुद्धार पर दिया है, उतना ही ध्यान विदेशों में भी जीर्ण शीर्ण हालत में पड़े पुराने मंदिरों की योजनाओं पर भी लगाया है। इस दिशा में सबसे पहले बहरीन स्थित 200 साल पुराने श्रीनाथ जी के मंदिर के लिए 4.2 मिलियन डॉलर खर्च किये जाने की योजना है। इसके अलावा प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा अबूधाबी में भी यहां के पहले मंदिर की 2018 में आधारशिला रखी गई। संयुक्त अरब अमीरात में विशाल हिन्दू मंदिर का लोकार्पण आधिकारिक रूप से वहां की सरकार ने किया। जेबेली अली अमीरात के कॉरीडोर ऑफ चॉलरेस में स्थित इस विशाल मंदिर के बनने से वहां के हिन्दुओं का दशकों पुराना सपना पूरा हुआ है, जिसके पीछे भारत की मोदी सरकार का अथक प्रयास है।

गुजरात के मेहसाणा जिले में चालुक्य शासन में बनाए गये मोढेरा के सूर्य मंदिर का भी पुनरुद्धार हुआ। वहां 3डी प्रोजेक्शन लाइट एंड साउंड शो के उद्घाटन के दौरान देश के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी जब उसके अतीत का स्मरण करते हुए यह कह रहे थे कि इस स्थान पर अनगिनत आक्रमण किये गये लेकिन अब मोढेरा अपनी प्राचीन चरित्र को बनाए रखते हुए आधुनिकता के साथ बढ़ रहा है, तब वह देश की जनता को यह संदेश दे रहे थे कि भारत के सभी प्राचीन आस्था स्थल अपनी गौरवशाली पहचान के साथ आधुनिक सुविधाओं से लैस हो सकते हैं, और हो रहे हैं। लगभग एक साल पहले ही सोमनाथ के मंदिर के पुनरुद्धार और अन्य सुविधाओं के लिए पीएम ने कई परियोजनाओं का शुभारंभ किया था। आने वाले समय में सोमनाथ भी आधुनिक सुविधाओं से लैस दिखेगा।

विगत जून महीने में पुणे के देहू में नये तुकाराम महाराज मंदिर और गुजरात के पावागढ़ मंदिर के ऊपर बने कालिका माता मंदिर के पुनर्निर्माण का उद्घाटन भी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने किया था। पावागढ़ में मां कालिका को नमन करते हुए उन्होंने कहा था कि हमारे श्रद्धास्थल हर भारतीय के प्रेरणा केंद्र हैं और ये स्थल आस्था के साथ-साथ नई संभावनाओं का स्रोत भी बन रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की इस बात के बड़े गहरे अर्थ हैं क्योंकि यह स्वाभाविक है कि जिन मंदिरों या आस्था केंद्रों का पुनरुद्धार हो रहा है, वहां केवल मंदिर परिसर का ही कायाकल्प नहीं होता, बल्कि उसके साथ उस क्षेत्र का समग्र विकास भी होता है। काशी, सोमनाथ, केदारनाथ, देहू, पावागढ़ सहित सभी स्थलों पर पुनरुद्धार कार्य के साथ-साथ अनेक जरूरी, विकास और रोजगारपरक योजनाओं को भी अमलीजामा पहनाया जा रहा है। सभी स्थलों पर हजारों करोड़ों की परियोजनाओं को जमीन पर उतारा जा रहा है, जो नई संभावनाओं के द्वार खोलेंगे।

निःसंदेह ऐसे सभी क्षेत्रों में आध्यात्म-संस्कृति का नया सवेरा हुआ है तो विकास की नई गंगा भी प्रवाहित हुई है। सबसे बड़े लोकतीर्थ अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण के साथ-साथ लाखों करोड़ की परियोजनाओं पर काम हो रहा है। इंटरनेशनल एयरपोर्ट से लेकर एक्सप्रेस वे तक बन रहा है और अयोध्या को वैश्विक सुविधाओं वाला महानगर बनाने का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। काशी, सोमनाथ, केदारनाथ सहित सभी स्थानों पर यही स्थिति है। इसलिए प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा उद्घाटित धार्मिक-आस्था स्थलों को विकास के एक नये मॉडल के रूप में भी देखा जाना चाहिए। इन स्थलों पर यात्रियों की संख्या बढ़ेगी तो रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और राजस्व में भी वृद्धि होगी। देश की अर्थव्यवस्था को भी इससे नई उड़ान मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश के किसी भी हिस्से में जाते हैं तो वहां के प्रसिद्ध देवालयों में दर्शन-पूजन अवश्य करते हैं अथवा उनका पुण्य स्मरण करते हैं। हाल ही में नवरात्रि में शक्ति पीठ अंबाजी मंदिर में उन्होंने दर्शन-पूजन करते हुए कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया। देश ने विगत 8 साल में अनेक ऐसे अवसर देखे हैं। पिछले लोकसभा चुनाव के प्रचार अभियान से पहले श्री मोदी जी ने माता वैष्णो देवी के दर्शन किये तो चुनाव समाप्त होते ही एक दिन के लिए केदारनाथ स्थित गुफा में ध्यान किया।

यह श्री नरेंद्र मोदी जी की ही प्रेरणा है कि राज्य सरकारों ने भी देवालयों पर विशेष ध्यान देना शुरु किया है। उत्तर प्रदेश का मथुरा, विन्ध्याचल, प्रयागराज हो या मध्यप्रदेश का उज्जैन हो, अनेक ऐसे उदाहरण हैं जहां आधुनिक सुविधाओं से लैस विकास कार्य हुए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा उज्जैन की पावन धरा पर महाकाल लोक के नये कॉरीडोर तथा अन्य लोकमुखी सुविधाओं का उद्घाटन भी इस कड़ी में एक ऐतिहासिक पड़ाव है, जहां से भारत के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पुनरुत्थान का नया अध्याय प्रारंभ होगा। महाकाल की नगरी विश्व भर में विशेष धार्मिक महत्व रखती है, जहां प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु आते हैं। उज्जैन में राज्य सरकार द्वारा किया नवनिर्माण और उसका नामकरण हमारी आध्यात्मिक यात्रा में नया अध्याय जोड़ेगा।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति का आधार-आदर्श आध्यात्मिकता है। यही वह धुरी है जिससे भारत में व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन और आर्थिक जीवन के मध्य सदियों से सामंजस्य रहा है। हमारे शक्तिपीठों, मंदिरों, पुण्यस्थलों की सांस्कृतिक विरासत पर श्री नरेंद्र मोदी जी की गहनदृष्टि से विगत 70 साल से जमी धूल हट रही है और भारत को उसकी प्राणशक्ति की ओर ले जा रही है। इस शक्ति की जागृति से भारत की सांस्कृतिक अस्मिता का पुनर्जागरण संभव हो रहा है और विश्व कल्याण में आध्यात्मिक अभ्युदय का नया दौर शुरु हुआ है। इस दौर का जब भी इतिहास लिखा जाएगा तब श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा भारत के आध्यात्मिक पुनरुत्थान का योगदान स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा।

(लेखक मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा से सांसद हैं)

शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम हिंदी में चिकित्सा पाठ्यक्रम

हितानंद शर्मा

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने एक ट्वीट में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के संबंध में लिखा था ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति से प्रेरणा लेते हुये अब सभी तकनीकी शिक्षा के विषयों को मातृभाषा में पढ़ाने की कोशिश की जायेगी, इंजीनियरिंग व चिकित्सा सहित'' और अब मध्यप्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार व ऐतिहासिक पहल कर एमबीबीएस हिंदी माध्यम में आरंभ करने वाला देश का पहला राज्य होने जा रहा है। स्वाभाविक है इस शैक्षणिक अनुष्ठान में शासन की मंशा, योग्य शिक्षाविदों का परिश्रम व माननीय प्रधानमंत्री जी का स्वप्न साकार होने जा रहा है तो इस अभूतपूर्व पहल पर देश ही नहीं वैश्विक परिदृश्य में स्वागत के साथ-साथ गंभीर चिंतन अवश्य होगा।

भारतीय शिक्षा पद्धति के अंतर्गत उच्च शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा व भारतीय भाषाओं को वह महत्व नहीं मिला या दिया गया जिसकी वह वास्तविक पात्र हैं। सामान्यतः सीखने व सिखाने की यह प्रक्रिया एक विदेशी भाषा के ही अधीन रही है। किंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के आगमन ने एक बड़े बदलाव का शुभारंभ किया है।

वर्तमान समय जो कि स्वतंत्रता का अमृतकाल है और राष्ट्र अपने सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक व आध्यात्मिक पुनर्जागरण के मानकों को स्थापित होते देख रहा है, ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि हम उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग पर ध्यान दें। मातृभाषा में शिक्षा की बात लार्ड मैकाले के समय से ही होती रही है। स्वतंत्र भारत में भी यह मांग समय-समय पर होती रही जैसे 1948-49 में राधाकृष्णन समिति की रिपोर्ट, जिसे हम विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के नाम से जानते हैं, उस रिपोर्ट में भी अनुशंसा की गई थी कि ''शिक्षा के माध्यम के रूप में जितनी जल्दी हो सके अंग्रेजी को भारतीय भाषा से बदल दिया जाए।'' इसके बाद राजभाषा आयोग, भावनात्मक एकीकरण समिति, एनईपी 1968, एनईपी (1986/1992) और अब एनईपी 2020 में पुरजोर तरीके से मातृभाषा व क्षेत्रीय भाषाओं में ही शिक्षा को प्राथमिकता व प्रधानता देने की बात कही गई है।

वर्तमान शिक्षा नीति अनुशंसा करती है कि उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा का उपयोग करना चाहिए अथवा द्विभाषी पाठ्यक्रम चलाने चाहिए। जिससे यह अधिकतम छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान करने में सहायक होगा, और उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि करेगा। इससे सभी भारतीय भाषाओं की सामर्थ्य, उपयोगिता व जीवंतता बनी रहेगी। जब यह बात राष्ट्रीय स्तर से आरंभ होगी तो निश्चित रूप से निजी संस्थान भी भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने अथवा द्विभाषी पाठ्यक्रमों को लागू करने के लिये प्रेरित होंगे। यह अभिनव प्रयोग सुनिश्चित करेगा कि शासकीय व निजी संस्थानों में कोई अंतर नहीं है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम, चार वर्षीय बैचलर ऑफ एजुकेशन दोहरी डिग्री भी द्विभाषी होगी। इससे सभी विषयों के शिक्षकों के संवर्गों के प्रशिक्षण में आसानी होगी। विज्ञान और गणित के शिक्षक भी शिक्षण के लिए द्विभाषी दृष्टिकोण अपनाएंगे।

अनुशंसाओं को अनुपालन में लाने के लिए पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, वीडियो, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों और पत्रिकाओं सहित भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण और प्रिंट सामग्री विकसित की जाए। इसे अनुवाद और व्याख्या में गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम बनाकर संभव किया जाएगा।

मध्यप्रदेश में इसी उद्देश्य को लेकर चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग करते हुये प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम के अंतर्गत एनाटॉमी, बायोकेमिस्ट्री व फिजियोलॉजी विषय की हिंदी में पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनका विमोचन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने किया। यह एक ऐतिहासिक कदम है जो प्रधानमंत्री जी के संकल्प कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये को साकार करते हुए इस अवधारणा को दूर करेगी कि उच्च शिक्षा केवल अंग्रेजी में ही संभव है।

आइये, हम सभी चिकित्सा शिक्षा के इस अभूतपूर्व व ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बनें और गर्व का अनुभव करें कि हमारा प्रदेश देश का प्रथम राज्य है जहां इंजीनियरिंग के साथ ही अब मेडिकल शिक्षा का आरंभ भी मातृभाषा में हो रहा है।

(लेखक - भाजपा मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री है)

अयोध्या- भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का स्वर्णिम अध्याय

सत्य की हर विजय के, असत्य के हर अंत के मानवीय संदेश को हमने जितनी मजबूती से जीवंत रखा, इसमें भारत का कोई सानी नहीं है।

प्रभु श्रीराम ने रावण के अत्याचार का अंत हजारों वर्ष पूर्व किया था, लेकिन आज हजारों-हजार साल बाद भी उस घटना का एक-एक मानवीय संदेश, आध्यात्मिक संदेश एक-एक दीपक के रूप में सतत प्रकाशित होता है।

अयोध्या जी, दीपों से दिव्य है, भावनाओं से भव्य है। अयोध्या नगरी, भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के स्वर्णिम अध्याय का प्रतिबिंब है।

जब 14 वर्ष के वनवास के बाद प्रभु श्रीराम अयोध्या आए होंगे, तो अयोध्या कैसे सजी होगी, कैसे संवरी होंगी? हमने त्रेता की उस अयोध्या के दर्शन नहीं किए, लेकिन प्रभु श्रीराम के आशीर्वाद से अमृतकाल में अमर अयोध्या की अलौकिकता के साक्षी बन रहे हैं।

हम उस सभ्यता और संस्कृति के वाहक हैं, पर्व और उत्सव जिनके जीवन का सहज-स्वाभाविक हिस्सा रहे हैं। हमारे यहाँ जब भी समाज ने कुछ नया किया, हमने एक नया उत्सव रच दिया। सत्य की हर विजय के, असत्य के हर अंत के मानवीय संदेश को हमने जितनी मजबूती से जीवंत रखा, इसमें भारत का कोई सानी नहीं है। प्रभु श्रीराम ने रावण के अत्याचार का अंत हजारों वर्ष पूर्व किया था, लेकिन आज हजारों-हजार साल बाद भी उस घटना का एक-एक मानवीय संदेश, आध्यात्मिक संदेश एक-एक दीपक के रूप में सतत प्रकाशित होता है।

दीपावली के दीपक हमारे लिए केवल एक वस्तु नहीं है। ये भारत के आदर्शों, मूल्यों और दर्शन के जीवंत ऊर्जापुंज हैं। जहां तक नजर जा रही है, ज्योतियों की ये जगमग, प्रकाश का ये प्रभाव, रात के ललाट पर रश्मियों का ये विस्तार, भारत के मूल मंत्र 'सत्यमेव जयते' की उद्घोषणा है। ये उद्घोषणा है हमारे उपनिषद वाक्यों की-

''सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः''।

अर्थात्, जीत सत्य की ही होती है, असत्य की नहीं। ये उद्घोषणा है हमारे ऋषि वाक्यों की-

''रामो राजमणिः सदा विजयते''।

अर्थात्, विजय हमेशा राम रूपी सदाचार की ही होती है, रावण रूपी दुराचार की नहीं। तभी तो, हमारे ऋषियों ने भौतिक दीपक में भी चेतन ऊर्जा के दर्शन करते हुये कहा था-

दीपो ज्योतिः परब्रहम दीपो ज्योतिः जनार्दन।

अर्थात्, दीप-ज्योति ब्रह्म का ही स्वरूप है। मुझे विश्वास है, ये आध्यात्मिक प्रकाश भारत की प्रगति का पथ प्रदर्शन करेगा, भारत के पुनरोत्थान का पथ प्रदर्शन करेगा।

जगमगाते हुए इन लाखों दीयों की रोशनी में देशवासियों को एक और बात याद दिलाना चाहता हूं। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

''जगत प्रकास्य प्रकासक रामू''। अर्थात्, भगवान राम पूरे विश्व को प्रकाश देने वाले हैं। वो पूरे विश्व के लिए एक ज्योतिपुंज की तरह है।

ये प्रकाश कौन सा है?

ये प्रकाश है- दया और करुणा का।

ये प्रकाश है- मानवता और मर्यादा का।

ये प्रकाश है- समभाव और ममभाव का।

ये प्रकाश है- सबके साथ का,

ये प्रकाश है- सबको साथ लेकर चलने के संदेश का।

बरसों पहले गुजराती में दीपक पर एक कविता लिखी थी। और कविता का शीर्षक था- दीया-।

उसकी कुछ पंक्तियां आज मुझे याद आ रही हैं। मैंने लिखा था-

दीया आशा भी देता है और
दीया ऊष्मा भी देता है।
दीया आग भी देता है और

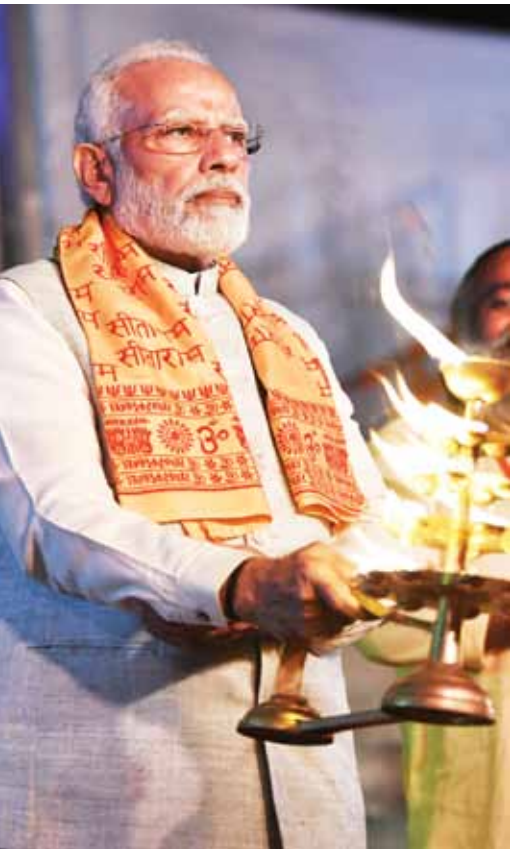

दीया आराम भी देता है।
उगते सूरज को तो हर कोई पूजता है,
लेकिन दीया, अंधेरी शाम में
भी साथ देता है।
दीया स्वयं जलता है और अंधेरे
को भी जलाता है,
दीया मनुष्य के मन में समर्पण
का भाव लाता है।

हम स्वयं जलते हैं, स्वयं तपते हैं, स्वयं खपते हैं, लेकिन जब सिद्धि का प्रकाश पैदा होता है तो हम उसे निष्काम भाव से पूरे संसार के लिए बिखेर देते हैं, पूरे संसार को समर्पित कर देते हैं। जब हम स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की ये यात्रा करते हैं, तो उसमें सर्वसमावेश का संकल्प अपने आप समाहित हो जाता है। जब हमारे संकल्पों की सिद्धि होती है तो हम कहते हैं- **'इदम् न मम्'**॥ अर्थात् ये सिद्धि मेरे लिए नहीं है, ये मानव मात्र के कल्याण के लिए है। दीप से दीपावली तक, यही भारत का दर्शन है, यही भारत का चिंतन है, यही भारत की चिरंतर संस्कृति है। हम सब जानते हैं, मध्यकाल और आधुनिक काल तक भारत ने कितने अंधकार भरे युगों का सामना किया है। जिन झंझावातों में बड़ी-बड़ी सभ्यताओं के सूर्य अस्त हो गए, उनमें हमारे दीपक जलते रहे, प्रकाश देते रहे फिर उन तूफानों को शांत कर उद्दीप्त हो उठे। क्योंकि, हमने दीप जलाना नहीं छोड़ा। हमने विश्वास बढ़ाना नहीं छोड़ा। बहुत समय नहीं हुआ, जब कोरोना के हमले की मुश्किलों के बीच इसी भाव से हर एक भारतवासी एक-एक दीपक लेकर खड़ा हो गया था। और, आज, कोरोना के खिलाफ युद्ध में भारत कितनी ताकत से लड़ रहा है, ये दुनिया देख रही है। ये प्रमाण है कि, अंधकार के हर युग से निकलकर भारत ने प्रगति के प्रशस्त पथ पर अपने पराक्रम का प्रकाश अतीत में भी बिखेरा है, भविष्य में भी बिखेरेगा। जब प्रकाश हमारे कर्मों का साक्षी बनता है, तो अंधकार का अंत अपने आप सुनिश्चित हो जाता है। जब दीपक हमारे कर्मों का साक्षी बनता है, तो नई सुबह का, नई शुरुआत का आत्मविश्वास अपने आप सुदृढ़ हो जाता है। ▪

देश की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है- आत्मनिर्भर भारत

पराक्रम और शौर्य से सिंचित कारगिल की इस मिट्टी को नमन करने का भाव मुझे बार बार अपने वीर बेटे-बेटियों के बीच खींच लाता है। मेरे लिए तो, वर्षों-वर्ष से मेरा परिवार आप सब ही हैं। मेरी दीपावली की मिठास आपके बीच बढ़ जाती है, मेरी दीपावाली का प्रकाश आपके बीच है और अगली दिवाली तक मेरा पथ प्रशस्त करता है। मेरी दीपावाली का उल्लास आपके पास है, मेरी उमंग आपके साथ है। मेरा सौभाग्य है, मुझे बरसों से दिवाली आपके बीच बॉर्डर पर आकर मनाने का अवसर मिल रहा है। एक ओर देश की संप्रभु सीमा, और दूसरी ओर उसके समर्पित सिपाही! एक ओर मातृभूमि की ममतामयी मिट्टी और दूसरी ओर उसे चन्दन बनाकर माथे पर लगाने वाले आप सब मेरे वीर जवान साथी, जांबाज नौजवान! इससे बेहतर दिवाली मुझे और कहाँ नसीब हो सकती है? और हम civilian लोगों की दिवाली, हमारी आतिशबाजी और कहां आपकी आतिशबाजी, आपकी तो आतिशबाजी ही अलग होती है। आपके धमाके भी अलग होते हैं।

शौर्य की अप्रतिम गाथाओं के साथ ही, हमारी परंपरा, मधुरता और मिठास की भी है। इसलिए, भारत अपने त्योहारों को प्रेम के साथ मनाता है। पूरी दुनिया को उसमें शामिल करके मनाता है। कारगिल की इस विजय भूमि से, आप सब जवानों के बीच से मैं सभी देशवासियों को, और पूरे विश्व को दीपावली की हार्दिक बधाई देता हूँ। पाकिस्तान के साथ एक भी लड़ाई ऐसी नहीं हुई है जहां कारगिल ने विजय ध्वज न फहराया हो। आज के वैश्विक परिदृश्य में प्रकाश का ये पर्व पूरे विश्व के लिए शांति का पथ-प्रदर्शन करे, ये भारत की कामना है।

हम जिस राष्ट्र की आराधना करते हैं, हमारा वो भारत केवल एक भौगोलिक भूखंड मात्र नहीं है। हमारा भारत एक जीवंत विभूति है, एक चिरंतर चेतना है, एक अमर अस्तित्व है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने शाश्वत संस्कृति का चित्र उभर जाता है।

जब हम भारत कहते हैं, तो सामने वीरता की विरासत उठ खड़ी होती है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने पराक्रम की परिपाटी प्रखर हो उठती है। ये एक ऐसी अजस्त्र धारा है, जो एक ओर गगन चुंबी हिमालय से प्रस्फुटित होती है तो दूसरी ओर हिन्द महासागर में समाहित होती है।

दिवाली का अर्थ है, आतंक के अंत के साथ उत्सव! आतंक के अंत का उत्सव! यही कारगिल ने भी किया था। कारगिल में हमारी सेना ने आतंक के फन को कुचला था, और देश में जीत की ऐसी दिवाली मनी थी, ऐसी दिवाली मनी थी कि लोग आज भी याद करते हैं। मेरा ये सौभाग्य रहा है, मैं उस जीत का भी साक्षी बना था, और मैंने उस युद्ध को भी करीब से देखा था। मैं हमारे अधिकारियों का आभारी हूं कि यहां आते ही मुझे कई साल पुरानी मेरी वो तस्वीरें दिखायी जो पल मैं आपके बीच में बिताता था। मेरे लिए वो पल बड़े भावुक थे, जब मैं वो फोटो देख रहा था और मैं आप सबका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे यादों के अंदर वीर जवानों के बीच में बीते हुए मेरे पल को फिर से आपने मुझे याद करा दिया, मैं आपका बहुत आभारी हूं। जब हमारे जवान कारगिल युद्ध में दुश्मन को मुंह तोड़ जवाब दे रहे थे, तब मुझे उनके बीच आने का सौभाग्य मिला था। देश के एक सामान्य नागरिक के रूप में मेरा कर्तव्य पथ, मुझे रणभूमि तक ले आया था। देश ने अपने सैनिकों की सेवा के लिए जो भी छोटी-मोटी राहत सामग्री भेजी थी। हम उसे लेकर यहां पहुंचे थे। हम तो सिर्फ उससे पुण्य कमा रहे थे क्योंकि देव भक्ति तो करते हैं, वो पल देश भक्ति के रंग से रंगे हुए आपका पूजन का मेरे लिए वो पल था। उस समय की कितनी ही यादें हैं, जो मैं कभी भूल नहीं सकता। ऐसा लगता था, चारों दिशाओं में विजय का जयघोष है, जयघोष है, जयघोष है। हर मन का आवाहन था- मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित। चाहता हूँ देश की धरती

तुझे कुछ और भी दूं!

हम जिस राष्ट्र की आराधना करते हैं, हमारा वो भारत केवल एक भौगोलिक भूखंड मात्र नहीं है। हमारा भारत एक जीवंत विभूति है, एक चिरंतर चेतना है, एक अमर अस्तित्व है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने शाश्वत संस्कृति का चित्र उभर जाता है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने वीरता की विरासत उठ खड़ी होती है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने पराक्रम की परिपाटी प्रखर हो उठती है। ये एक ऐसी अजस्त्र धारा है, जो एक ओर गगन चुंबी हिमालय से प्रस्फुटित होती है तो दूसरी ओर हिन्द महासागर में समाहित होती है। अतीत में असीम लपटें उठीं, विश्व की कितनी ही लहलहाती सभ्यताएँ रेगिस्तान सी वीरान हो गईं, लेकिन भारत के अस्तित्व की ये सांस्कृतिक धारा आज भी अविरल है, अमर है। और मेरे जवानों, एक राष्ट्र कब अमर होता है? राष्ट्र तब अमर होता है जब उसकी संतानों को, उसके वीर बेटे-बेटियों को अपने सामर्थ्य पर, अपने संसाधनों पर परम विश्वास होता है। राष्ट्र तब अमर होता है, जब उसके सैनिकों के शीश हिमालय के शीर्ष शिखरों की तरह उत्तंग होते हैं। एक राष्ट्र तब अमर होता है जब उसकी संतानों के बारे में ये कहा जा सके कि-

चलन्तु गिरयः कामं युगान्त पवनाहताः।
कृच्छ्रेरपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मनः॥

यानी, प्रलयकाल के तूफानों से विशाल पर्वत भले ही क्यों न उखड़ जाएँ, लेकिन आप जैसे धीरों और वीरों के मन अडिग, अटल और निश्चल होते हैं। इसलिए, आपकी भुजाओं का सामर्थ्य हिमालय की दुरूह ऊंचाइयों को नापता है। आपका मनस्वी मन, मरुस्थलों की मुश्किलों का सफलता से मुकाबला करता हैं। आपके असीम शौर्य के आगे अनंत आकाश और असीमित समंदर घुटने टेकते हैं। कारगिल का कुरुक्षेत्र भारतीय सेना के इस पराक्रम का बुलंद गवाह बन चुका है। ये द्रास, ये बटालिक और ये टाइगर हिल, ये गवाह हैं कि पहाड़ों की ऊंचाइयों पर बैठा दुश्मन भी भारतीय सेना के गगनचुंबी साहस और शौर्य के आगे कैसे बौना बन जाता है। जिस देश के सैनिकों का शौर्य इतना अनंत हो, उस राष्ट्र का अस्तित्व अमर और अटल ही होता है।

आप सभी, सीमा के हमारे प्रहरी देश की रक्षा के मजबूत स्तंभ हैं। आप हैं, तभी देश के भीतर देशवासी चैन से रहते हैं, निश्चिंत रहते हैं। लेकिन ये हर भारतवासी के लिए खुशी की बात है कि देश के सुरक्षा कवच को संपूर्णता देने के लिए, हर भारतवासी पूरी शक्ति लगा रहा है। देश सुरक्षित तभी होता है, जब बॉर्डर सुरक्षित हों, अर्थव्यवस्था सशक्त हो और समाज आत्मविश्वास से भरा हो। आप भी बॉर्डर पर आज देश की ताकत की खबरें सुनते हैं, तो आपका हौसला दोगुना हो जाता होगा। जब देश के लोग स्वच्छता के मिशन से जुड़ते हैं,

गरीब से गरीब को भी अपना पक्का घर, पीने का पानी, बिजली-गैस जैसी सुविधाएं रिकॉर्ड समय पर मिलती हैं, तब हर जवान को भी गर्व होता है। दूर कहीं उसके घर में, उसके गांव में, उसके शहर में सुविधाएं पहुंचती हैं, तो सीमा पर उसका सीना भी तन जाता है, उसे अच्छा लगता है। जब वो देखता है कि कनेक्टिविटी अच्छी हो रही है, तो उसका घर पर बात करना भी आसान होता है और छुट्टी पर घर पहुंचना भी आसान बन जाता है।

मुझे पता है, जब 7-8 साल के भीतर ही देश की अर्थव्यवस्था 10वें नंबर से 5वें नंबर पर पहुंचती है, तो आपका भी माथा गर्व से ऊंचा होता है। जब एक तरफ आप जैसे युवा सीमा को संभालते हैं और दूसरी तरफ आपके ही युवा साथी 80 हजार से अधिक स्टार्ट अप बना देते हैं, नए-नए इनोवेशन करते हैं, तो आपकी खुशी भी बढ़ जाती है। दो दिन पहले ही इसरो ने ब्रॉड बैंड इंटरनेट का विस्तार करने वाले 36 सैटेलाइट, एक-साथ लॉन्च कर एक नया रिकॉर्ड बनाया है। अंतरिक्ष में भारत जब अपना सिक्का जमाता है तो कौन मेरा वीर जवान होगा जिसकी छाती चौड़ी न होती हो। कुछ महीने पहले जब युक्रेन में लड़ाई छिड़ी तो हमारा प्यारा तिरंगा कैसे वहां फंसे भारतीयों का सुरक्षा कवच बना, ये हम सभी ने देखा है। दुनिया में आज जिस प्रकार भारत का मान बढ़ा है, सम्मान बढ़ा है, विश्व पटल पर बढ़ती भारत की भूमिका आज सबके सामने है। आज ये सब कुछ इसलिए हो पा रहा है, क्योंकि भारत अपने बाहरी और भीतरी, दोनों दुश्मनों के विरुद्ध सफलता के साथ मोर्चा ले रहा है। आप सीमा पर कवच बनकर खड़े हैं, तो देश के भीतर भी देश के दुश्मनों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाई हो रही है। आतंकवाद की, नक्सलवाद की, अतिवाद की, जो भी जड़ें बीते दशकों में पनपी थी, उसको उखाड़ने का सफल प्रयास देश निरंतर कर रहा है। कभी नक्सलवाद ने देश के एक बहुत बड़े हिस्सों को चपेट में ले लिया था। लेकिन आज वो दायरा लगातार सिमट रहा है। आज देश भ्रष्टाचार के खिलाफ भी निर्णायक युद्ध लड़ रहा है। भ्रष्टाचारी चाहे कितना भी ताकतवर क्यों ना हो, अब वो बच नहीं सकता और बचेगा भी नहीं। कुशासन ने लंबे समय तक देश के सामर्थ्य को सीमित रखा, हमारे विकास के रास्ते में रोड़े अटकाए। आज सबका, साथ सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र के साथ हम उन सभी पुरानी कमियों को तेजी से दूर कर रहे हैं। राष्ट्रहित में आज बड़े से बड़े निर्णय तेजी से किए जाते हैं, तेजी से लागू किए जाते हैं।

तेजी से बदलते हुए समय में, टेक्नोलॉजी के इस दौर में भविष्य के युद्धों का स्वरूप भी बदलने जा रहा है। नए दौर में नई चुनौतियों, नए तौर-तरीकों और राष्ट्ररक्षा के बदलती जरूरतों के हिसाब से भी आज हम देश की सैन्य ताकत को तैयार कर रहे हैं। सेना में बड़े रिफॉर्म्स, बड़े सुधार की जो जरूरत दशकों से महसूस की जा रही थी, वो आज जमीन पर उतर रही है। हमारी सेनाओं में बेहतर तालमेल हो, हम हर चुनौती के विरुद्ध तेजी से, त्वरित कार्यवाई कर सकें, इसके लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। इसके लिए CDS जैसे संस्थान का निर्माण किया गया है। सीमा पर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का नेटवर्क तैयार किया जा रहा है, ताकि आप जैसे हमारे साथियों को अपना कर्तव्य निभाने में अधिक सुविधा हो। आज देश में अनेक सैनिक स्कूल खोले जा रहे हैं। सैनिक स्कूलों में, सैन्य ट्रेनिंग संस्थानों को बेटियों के लिए खोल दिया गया है और मुझे गर्व है मैं बहुत सारी बेटियों को मेरे सामने देख रहा हूं। भारत की सेना में बेटियों के आने से हमारी ताकत में वृद्धि होने वाली है, ये विश्वास रखिए। हमारा सामर्थ्य

बढ़ने वाला है।

देश की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है- आत्मनिर्भर भारत, भारतीय सेनाओं के पास आधुनिक स्वदेशी हथियार। विदेशी हथियारों पर, विदेशी सिस्टम पर हमारी निर्भरता कम से कम हो, इसके लिए तीनों सेनाओं ने आत्मनिर्भरता का संकल्प लिया है। मैं प्रशंसा करता हूं अपनी तीनों सेनाओं की, जिन्होंने ये तय किया है कि 400 से भी अधिक रक्षा साजो सामान अब विदेशों से नहीं खरीदे जाएंगे। अब ये 400 हथियार भारत में ही बनेंगे, जो भारत का सामर्थ्य बढ़ाएंगे। इसका एक और सबसे बड़ा लाभ होगा। जब भारत का जवान, अपने देश में बने हथियारों से लड़ेगा, तो उसका विश्वास चरम पर होगा। उसके हमले में दुश्मन के लिए Surprise Element भी होगा और दुश्मन का मनोबल कुचलने का साहस भी। और मुझे खुशी है कि आज एक तरफ अगर हमारी सेनाएं ज्यादा से ज्यादा मेड इन इंडिया हथियार अपना रही हैं तो वहीं सामान्य भारतीय भी लोकल के लिए वोकल हो रहा है। और लोकल को ग्लोबल बनाने के लिए सपने देखकर के समय लगा रहा है।

आज ब्रह्मोस सुपर सोनिक मिसाइल्स से लेकर 'प्रचंड' लाइट combat हेलीकाप्टर्स और तेजस फाइटर जेट्स तक, ये रक्षा साजो सामान भारत की शक्ति का पर्याय बन रहे हैं। आज भारत के पास, विशाल समंदर में विप्लवी विक्रांत है। युद्ध गहराइयों में हुआ, तो अरि का अंत अरिहंत है। भारत के पास पृथ्वी है, आकाश है। अगर विनाश का तांडव है, तो शिव का त्रिशूल है, पिनाका है। कितना भी बड़ा कुरुक्षेत्र होगा, लक्ष्य भारत का अर्जुन भेदेगा। आज भारत अपनी सेना की जरूरत तो पूरी कर ही रहा है, बल्कि रक्षा उपकरणों का एक बड़ा निर्यातक भी बन रहा है। आज भारत अपने मिसाइल डिफेंस सिस्टम को सशक्त कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ ड्रोन जैसी आधुनिक और प्रभावी तकनीक पर भी तेजी से काम कर रहा है।

हम उस परंपरा को मानने वाले हैं जहां युद्ध को, हमने युद्ध को कभी पहला विकल्प नहीं माना है। हमने हमेशा, ये हमारा वीरता का भी कारण है, हमारे संस्कार का भी कारण है कि हमने युद्ध को हमेशा अंतिम विकल्प माना जाता है। युद्ध लंका में हुआ हो या फिर कुरुक्षेत्र में, अंत तक उसको टालने की हर संभव कोशिश हुई है। इसलिए हम विश्व शांति के पक्षधर हैं। हम युद्ध के विरोधी हैं। लेकिन शांति भी बिना सामर्थ्य के संभव नहीं होती। हमारी सेनाओं के पास सामर्थ्य भी है, रणनीति भी है। अगर कोई हमारी तरफ नजर उठाकर देखेगा तो हमारी तीनों सेनाएं दुश्मन को उसी की भाषा में मुंहतोड़ जवाब देना भी जानती हैं। देश के सामने, हमारी सेनाओं के सामने, एक और सोच अवरोध बनकर खड़ी थी। ये सोच है गुलामी की मानसिकता। आज देश इस मानसिकता से भी छुटकारा पा रहा है। लंबे समय तक देश की राजधानी में राजपथ गुलामी का एक प्रतीक था। आज वो कर्तव्य पथ बनकर नए भारत के नए विश्वास को बढ़ावा दे रहा है। इंडिया गेट के पास जहां कभी गुलामी का प्रतीक था, वहां आज नेता जी सुभाषचंद्र बोस की भव्य-विशाल प्रतिमा हमारे मार्ग दिखा रही है, हमारा मार्गदर्शन कर रही है। नेशनल वॉर मेमोरियल हो, राष्ट्रीय पुलिस स्मारक हो, राष्ट्ररक्षा के लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रेरणा देने वाले ये तीर्थ भी नए भारत की पहचान हैं। कुछ समय पहले ही देश ने गुलामी के प्रतीक से भारतीय नौ-सेना को भी मुक्त किया है। नौ-सेना के ध्वज से अब वीर शिवाजी की नौ-सेना के शौर्य की प्रेरणा जुड़ गई है। आज पूरे विश्व की नजर भारत पर है, भारत के बढ़ते सामर्थ्य पर है। जब भारत की ताकत बढ़ती है, तो शांति की उम्मीद बढ़ती है। जब भारत की ताकत बढ़ती है, तो समृद्धि की संभावना बढ़ती है। जब भारत की ताकत बढ़ती है, तो विश्व में एक संतुलन आता है। आजादी का ये अमृतकाल भारत की इसी ताकत का, इसी सामर्थ्य का साक्षात साक्षी बनने वाला है। इसमें आपकी भूमिका, आप सब वीर जवानों की भूमिका बहुत बड़ी भूमिका है, क्योंकि आप ''भारत के गौरव की शान'' हैं।

तन तिरंगा,
मन तिरंगा,
चाहत तिरंगा,
राह तिरंगा।
विजय का विश्वास गरजता,
सीमा से भी सीना चौड़ा,
सपनों में संकल्प सुहाता,
कदम-कदम पर दम दिखाता,

भारत के गौरव-की शान,
तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है।
वीर गाथा घर घर गुंजे,
नर नारी सब शीश नवाऐ
सागर से गहरा स्नेह हमारा
अपने भी हैं, और सपने भी हैं,
जवानों के अपने लोग भी तो होते हैं, आपका भी परिवार होता है।
आपके सपने भी हैं फिर भी अपने भी हैं, और सपने भी हैं,
देश हित सब किया है समर्पित
अब देश के दुश्मन जान गए है
लोहा तेरा मान गये है
भारत के गौरव की शान,
तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है।
प्रेम की बात चले तो सागर शान्त हो तुम पर
देश पे नजर उठी तो फिर
वीर 'वज्र' 'विक्रांत' हो तुम,
एक निडर 'अग्नि',
एक आग हो तुम
'निर्भय' 'प्रचंड' और 'नाग' हो तुम
'अर्जुन' 'पृथ्वी' 'अरिहंत' हो तुम हर अन्धकार का अन्त हो तुम,
तुम यहाँ तपस्या करते हो
वहाँ देश धन्य हो जाता है,
भारत के गौरव- की शान,
तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है।
स्वाभिमान से खड़ा हुआ मस्तक हो तुम
आसमां में 'तेजस' की हुंकार हो तुम दुश्मन की आँख में, आँख डाल के जो बोले 'ब्रम्होस' की अजेय ललकार हो तुम,
हैं ऋणी तुम्हारे हर पल हम
यह सत्य देश दोहराता है।
भारत के गौरव- की शान,
तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है। ▪

भगवान राम जैसी संकल्प शक्ति देश को नई ऊंचाई पर ले जाएगी

जब हमने कुछ समय पहले ही आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं, हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। आजादी के इस अमृतकाल में भगवान राम जैसी संकल्प शक्ति, देश को नई ऊंचाई पर ले जाएगी।

भगवान राम ने अपने वचन में, अपने विचारों में, अपने शासन में, अपने प्रशासन में जिन मूल्यों को गढ़ा, वो सबका साथ-सबका विकास की प्रेरणा हैं और सबका विश्वास-सबका प्रयास का आधार भी हैं।
अगले 25 वर्षों में विकसित भारत की आकांक्षा लिए आगे बढ़ रहे हम हिंदुस्तानियों के लिए, श्रीराम के आदर्श, उस प्रकाश स्तंभ की तरह हैं, जो हमें कठिन से कठिन लक्ष्यों को हासिल करने का हौसला देंगे।

श्रीरामलला के दर्शन और उसके बाद राजा राम का अभिषेक, ये सौभाग्य श्रीरामजी की कृपा से ही मिलता है। जब श्रीराम का अभिषेक होता है, तो हमारे भीतर भगवान श्रीराम के आदर्श और मूल्य और दृढ़ हो जाते हैं। श्रीराम के अभिषेक के साथ ही उनका दिखाया पथ और प्रदीप्त हो उठता है। अयोध्या की तो रज-रज में, कण-कण में उनका दर्शन समाहित है। अयोध्या की रामलीलाओं के माध्यम से, सरयू आरती के माध्यम से, दीपोत्सव के माध्यम से, और रामायण पर शोध और अनुसंधान के माध्यम से ये दर्शन पूरे विश्व में प्रसारित हो रहा है। अयोध्या के लोग, पूरे उत्तर प्रदेश और देश के लोग इस प्रवाह का हिस्सा बन रहे हैं, देश में जन-कल्याण की धारा को गति दे रहे हैं।

इस बार दीपावली एक ऐसे समय में आई है, जब हमने कुछ समय पहले ही आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं, हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। आजादी के इस अमृतकाल में भगवान राम जैसी संकल्प शक्ति, देश को नई ऊंचाई पर ले जाएगी। भगवान राम ने अपने वचन में, अपने विचारों में, अपने शासन में, अपने प्रशासन में जिन मूल्यों को गढ़ा, वो सबका साथ-सबका विकास की प्रेरणा हैं और सबका विश्वास-सबका प्रयास का आधार भी हैं। अगले 25 वर्षों में विकसित भारत की

आकांक्षा लिए आगे बढ़ रहे हम हिंदुस्तानियों के लिए, श्रीराम के आदर्श, उस प्रकाश स्तंभ की तरह हैं, जो हमें कठिन से कठिन लक्ष्यों को हासिल करने का हौसला देंगे।

इस बार लाल किले से सभी देशवासियों से पंच प्राणों को आत्मसात करने का आव्हान किया है। **इन पंच प्राणों की ऊर्जा जिस एक तत्व से जुड़ी हुई है, वो है भारत के नागरिकों का कर्तव्य**। अयोध्या नगरी में, दीपोत्सव के इस पावन अवसर पर हमें अपने इस संकल्प को दोहराना है, श्रीराम से जितना सीख सकें , सीखना है। **भगवान राम, मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं। मर्यादा, मान रखना भी सिखाती है और मान देना भी सिखाती है। और मर्यादा, जिस बोध की आग्रही होती है, वो बोध कर्तव्य ही है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है-**

''रामो विग्रहवान् धर्मः''॥

अर्थात्, राम साक्षात् धर्म के, यानी कर्तव्य के सजीव स्वरूप हैं। भगवान राम जब जिस भूमिका में रहे, उन्होंने कर्तव्यों पर सबसे ज्यादा बल दिया। वो जब राजकुमार थे, तो ऋषियों की, उनके आश्रमों और गुरुकुलों की सुरक्षा का कर्तव्य निभाया। राज्याभिषेक के समय पर श्रीराम ने एक आज्ञाकारी बेटे का कर्तव्य निभाया। उन्होंने पिता और परिवार के वचनों को प्राथमिकता देते हुए राज्य के त्याग को, वन जाने को अपना कर्तव्य समझकर स्वीकार किया। वो वन में होते हैं, तो वनवासियों को गले लगाते हैं। आश्रमों में जाते हैं, तो माँ सबरी का आशीर्वाद लेते हैं। वो सबको साथ लेकर लंका पर विजय प्राप्त करते हैं, और जब सिंहासन पर बैठते हैं, तो वन के वही सब साथी राम के साथ खड़े होते हैं। क्योंकि, राम किसी को पीछे नहीं छोड़ते। राम कर्तव्य भावना से मुख नहीं मोड़ते। इसीलिए, राम, भारत की उस भावना के प्रतीक हैं, जो मानती है कि हमारे अधिकार हमारे कर्तव्यों से स्वयं सिद्ध हो जाते हैं। इसलिए हमें कर्तव्यों के प्रति समर्पित होने की जरूरत है। और संयोग देखिए, हमारे संविधान की जिस मूल प्रति पर भगवान राम, माँ सीता और लक्ष्मण जी का चित्र अंकित है, संविधान का वो पृष्ठ भी मौलिक अधिकारों की बात करता है। यानी, एक ओर हमारे संवैधानिक अधिकारों की गारंटी, तो साथ ही प्रभु श्रीराम के रूप में कर्तव्यों का शाश्वत सांस्कृतिक बोध! इसीलिए, हम जितना कर्तव्यों के संकल्प को मजबूत करेंगे, राम जैसे राज्य की संकल्पना उतनी ही साकार होती जाएगी।

आजादी के अमृतकाल में देश ने अपनी विरासत पर गर्व और गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का आवाहन किया है। ये प्रेरणा भी हमें प्रभु श्रीराम से मिलती है। उन्होंने कहा था-

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

यानी, वो स्वर्णमयी लंका के सामने भी हीनभावना में नहीं आए, बल्कि उन्होंने कहा कि माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। इसी आत्मविश्वास के साथ जब वो अयोध्या में लौटकर आते हैं तब अयोध्या के बारे में कहा जाता है-

''नव ग्रह निकर अनीक बनाई।
जनु घेरी अमरावति आई''॥

यानी, अयोध्या की तुलना स्वर्ग से की गई है। इसीलिए जब राष्ट्र निर्माण का संकल्प होता है, नागरिकों में देश के लिए सेवा भाव होता है तो भी और तभी राष्ट्र विकास की असीम ऊंचाइयों को छूता है। एक समय था, जब राम के बारे में, हमारी संस्कृति और सभ्यता के बारे में बात करने तक से बचा जाता था। इसी देश में राम के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाए जाते थे। उसका परिणाम क्या हुआ? हमारे धार्मिक, सांस्कृतिक स्थान और नगर पीछे छूटते चले गए। हम यहीं अयोध्या के रामघाट पर आते थे तो दुर्दशा देखकर मन दुःखी हो जाता था। काशी की तंगहाली, वो गंदगी और वो गलियाँ परेशान कर देती थी। जिन स्थानों को हम अपनी पहचान का, अपने अस्तित्व का प्रतीक मानते थे, जब वही बदहाल थे, तो देश के उत्थान का मनोबल अपने आप टूट जाता था।

बीते आठ वर्षों में देश ने हीनभावना की इन बेड़ियों को तोड़ा है। हमने भारत के तीर्थों के विकास की एक समग्र सोच को सामने रखा है। हमने राम मंदिर और काशी विश्वनाथ धाम से लेकर केदारनाथ और महाकाल-महालोक तक, घनघोर उपेक्षा के शिकार हमारी आस्था के स्थानों के गौरव को पुनर्जीवित किया है। एक समग्र प्रयास कैसे समग्र विकास का जरिया बन जाता है, आज देश इसका साक्षी है। आज अयोध्या के विकास के लिए हजारों करोड़ों रुपए की नई योजनाएँ शुरू की गई हैं। सड़कों का विकास हो रहा है। चौराहों और घाटों का सौंदर्यीकरण हो रहा है। नए इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहे हैं। यानी अयोध्या का विकास नए आयाम छू रहा है। अयोध्या रेलवे स्टेशन के साथ साथ वर्ल्ड क्लास एयरपोर्ट का निर्माण भी किया जाएगा। यानी, कनेक्टिविटी और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन का लाभ इस पूरे क्षेत्र को मिलेगा। अयोध्या के विकास के साथ साथ रामायण सर्किट के विकास पर भी काम चल रहा है। यानी, अयोध्या से जो विकास अभियान शुरू हुआ, उसका विस्तार आसपास के पूरे क्षेत्र में होगा।

इस सांस्कृतिक विकास के कई सामाजिक और अंतर्राष्ट्रीय आयाम भी हैं। श्रृंगवेरपुर धाम में निषादराज पार्क का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ भगवान राम और निषादराज की 51 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा बनाई जा रही है। ये प्रतिमा रामायण के उस सर्वसमावेशी संदेश को भी जन-जन तक पहुंचाएगी जो हमें समानता और समरसता के लिए संकल्पबद्ध करता है। इसी तरह, अयोध्या में क्वीन-हो मेमोरियल पार्क का निर्माण कराया गया है। ये पार्क भारत और दक्षिण कोरिया अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने के लिए, दोनों देशों के सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूत करने का एक माध्यम बनेगा। इस विकास से, पर्यटन की इतनी संभावनाओं से युवाओं के लिए रोजगार के कितने अवसर पैदा होंगे। सरकार ने जो रामायण एक्सप्रेस ट्रेन चलाई है, वो Spiritual Tourism की दिशा में एक बेहतरीन शुरुआत है। देश में चारधाम प्रोजेक्ट हो, बुद्ध सर्किट हो, या प्रसाद योजना के तहत चल रहे विकास कार्य हों, हमारा ये सांस्कृतिक उत्कर्ष, नए भारत के समग्र उत्थान का श्रीगणेश है।

अयोध्या भारत की महान सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब है। राम, अयोध्या के राजकुमार थे, लेकिन आराध्य वो पूरे देश के हैं। उनकी प्रेरणा, उनकी तप-तपस्या, उनका दिखाया मार्ग, हर देशवासी के लिए है। भगवान राम के आदर्शों पर चलना हम सभी भारतीयों का कर्तव्य है। उनके आदर्शों को हमें निरंतर जीना है, जीवन में उतारना है। और इस आदर्श पथ पर चलते हुए अयोध्या वासियों पर दोहरा दायित्व है। double responsibility है! वो दिन दूर नहीं जब विश्व भर से यहां आने वालों की संख्या अनेक गुना बढ़ जाएगी। जहां कण-कण में राम व्याप्त हों, वहां का जन-जन कैसा हो, वहां के लोगों का मन कैसा हो, ये भी उतना ही अहम है। जैसे श्रीराम जी ने सबको अपनापन दिया, वैसे ही अयोध्या वासियों को यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत अपनत्व से करना है।

अयोध्या की पहचान कर्तव्य नगरी के तौर पर भी बननी चाहिए। अयोध्या, सबसे स्वच्छ नगरी हो, यहां के रास्ते चौड़े हों, सुंदरता अप्रतिम हो, इसके लिए योगी जी की सरकार दिव्य दृष्टि के साथ अनेक प्रकल्पों को आगे बढ़ा रही है, प्रयास कर रही है। लेकिन इस प्रयास में अयोध्या के लोगों का साथ और बढ़ जाएगा तो अयोध्या जी की दिव्यता भी और निखर जाएगी। जब भी नागरिक मर्यादा की बात हो, नागरिक अनुशासन की बात हो, अयोध्या के लोगों का नाम सबसे आगे आए। देश के जन-जन की कर्तव्य शक्ति से भारत का सामर्थ्य शिखर तक पहुंचे। नए भारत का हमारा स्वप्न मानवता के कल्याण का माध्यम बने। ▪

सेवाभाव सर्वोपरि
रोजगार मेले में 75000 नियुक्ति पत्र

आज भारत की युवा शक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। बीते आठ वर्षों में देश में रोजगार और स्वरोजगार का जो अभियान चल रहा है, उसमें एक और कड़ी जुड़ रही है। ये कड़ी है रोजगार मेले की। केंद्र सरकार आजादी के 75 वर्ष को ध्यान में रखते हुए 75 हजार युवाओं को एक कार्यक्रम के अंतर्गत नियुक्ति पत्र दे रही है। बीते आठ वर्षों में पहले भी लाखों युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं लेकिन इस बार तय किया कि इकट्ठे नियुक्ति पत्र देने की परंपरा भी शुरू की जाए। ताकि departments भी time bound प्रक्रिया पूरा करने और निर्धारित लक्ष्यों को जल्द से पार करने का एक सामूहिक स्वभाव बने, सामूहिक प्रयास हो। इसलिए भारत सरकार में इस तरह का रोजगार मेला शुरू किया गया है। आने वाले महीनों में इसी तरह लाखों युवाओं को भारत सरकार द्वारा समय-समय पर नियुक्ति पत्र सौंपे जाएंगे। एनडीए शासित कई राज्य और केंद्र शासित प्रदेश भी और भाजपा सरकारें भी अपने यहां इसी तरह रोजगार मेले आयोजित करने जा रहे हैं। जम्मू कश्मीर, दादरा एवं नगर हवेली, दमन-दीव और अंडमान-निकोबार भी आने वाले कुछ ही दिनों में हजारों युवाओं को ऐसे ही कार्यक्रम करके नियुक्ति पत्र देने वाले हैं।

आप सभी ऐसे समय में भारत सरकार के साथ जुड़ रहे हैं, जब देश आजादी के अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है। विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि के लिए हम आत्मनिर्भर भारत के रास्ते पर चल रहे हैं। इसमें हमारे इनोवेटर्स, हमारे एंटरप्रन्योर्स, हमारे उद्यमी, हमारे किसान, सर्विसेज और मैन्युफेक्चरिंग से जुड़े हर किसी की बहुत बड़ी भूमिका है। यानि विकसित भारत का निर्माण सबके प्रयास से ही संभव है। सबका प्रयास की इस भावना को तभी जागृत किया जा सकता है, जब हर भारतीय तक मूल सुविधाएं तेजी से पहुंचें, और सरकार की प्रक्रियाएं तेज हों, त्वरित हों। कुछ ही महीनों में लाखों भर्तियों से जुड़ी प्रक्रियाएं पूरी करना, नियुक्ति पत्र दे देना, ये अपने आप में दिखाता है कि बीते 7-8 वर्षों में कितना बड़ा बदलाव सरकारी तंत्र में लाया गया है। हमने 8-10 साल पहले की वो स्थितियां भी देखी हैं जब छोटे से सरकारी काम में भी कई-कई महीने लग जाते थे। सरकारी फाइल पर एक टेबल से दूसरे टेबल तक पहुंचते-पहुंचते धूल जम जाती थी। लेकिन अब देश में स्थितियां बदल रही हैं, देश की कार्य संस्कृति बदल रही है।

आज अगर केंद्र सरकार के विभागों में इतनी तत्परता, इतनी efficiency आई है इसके पीछे 7-8 साल की कड़ी मेहनत है, कर्मयोगियों का विराट संकल्प है। वरना आपको याद होगा, पहले सरकारी नौकरी के लिए अगर किसी को अप्लाई करना होता था, तो वहीं से अनेक परेशानियां शुरु हो जाती थीं। भांति-भांति के प्रमाण पत्र मांगे जाते, जो प्रमाण पत्र होते भी थे उनको प्रमाणित करने के लिए आपको नेताओं के घर के बाहर कतार लगाकर खड़ा रहना पड़ता था। अफसरों की सिफारिश लेकर के जाना पड़ता था। हमने सरकार के शुरुआती वर्षों में ही इन सब मुश्किलों से युवाओं को मुक्ति दे दी। सेल्फ अटेस्टेशन, युवा अपने सर्टिफिकेट खुद प्रमाणित करे, ये व्यवस्था की। दूसरा बड़ा कदम हमने केंद्र सरकार की ग्रुप सी और ग्रुप डी इन भर्तियों में इंटरव्यू को खत्म करके सारी परंपराओं को उठा लिया। इंटरव्यू की प्रक्रिया को समाप्त करने से भी लाखों नौजवानों को बहुत फायदा हुआ है।

आज भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है। 7-8 साल के भीतर हमने 10वें नंबर से 5वे नंबर तक की छलांग लगाई है। ये सही है कि दुनिया के हालात ठीक नहीं हैं, अनेक बड़ी-बड़ी अर्थव्यवस्थाएं संघर्ष कर रही हैं। दुनिया के अनेक देशों में महंगाई हो, बेरोजगारी हो, अनेक समस्याएं अपने चरम पर है। 100 साल में आए सबसे बड़े संकट के साइड इफेक्ट्स, 100 दिन में चले जाएंगे, ऐसा न हम सोचते हैं, न हिन्दुस्तान सोचता है और न ही दुनिया अनुभव करती है। लेकिन इसके बावजूद संकट बड़ा है, विश्वव्यापी है और उसका प्रभाव चारों तरफ हो रहा है, दुष्प्रभाव हो रहा है। लेकिन इसके बावजूद भारत पूरी मजबूती से लगातार नए नए initiative लेकर के, थोड़ा रिस्क लेकर के भी ये प्रयास कर रहा है ये जो दुनिया भर में संकट है उससे हम हमारे देश को कैसे बचा पाएं? इसका दुष्प्रभाव हमारे देश पर कम से कम कैसे हो? बड़ा कसौटी काल है लेकिन आप सबके आशीर्वाद से, आप सबके सहयोग से अब तक तो हम बच पाए हैं। ये इसलिए संभव हो पा रहा है क्योंकि बीते 8 वर्षों में हमनें देश की अर्थव्यवस्था की उन कमियों को दूर किया है, जो रुकावटें पैदा करती थीं।

इस देश में ऐसा वातावरण बना रहे हैं, जिसमें खेती की, प्राइवेट सेक्टर की, छोटे और लघु उद्योगों की ताकत बढ़े। ये देश में रोजगार देने वाले सबसे बड़े सेक्टर हैं। आज हमारा सबसे अधिक बल युवाओं के कौशल विकास पर है, स्किल डेवल्पमेंट पर है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत देश के उद्योगों

की जरूरतों के हिसाब से युवाओं को ट्रेनिंग देने का एक बहुत बड़ा अभियान चल रहा है। इसके तहत अभी तक सवा करोड़ से अधिक युवाओं को स्किल इंडिया अभियान की मदद से ट्रेन किया जा चुका है। इसके लिए देशभर में कौशल विकास केंद्र खोले गए हैं। इन आठ वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के सैकड़ों नए संस्थान भी बनाए गए हैं। हमने युवाओं के लिए स्पेस सेक्टर खोला है, ड्रोन पॉलिसी को आसान बनाया है ताकि युवाओं के लिए देशभर में ज्यादा से ज्यादा अवसर बढ़ें।

देश में बड़ी संख्या में रोजगार और स्वरोजगार के निर्माण में सबसे बड़ी रुकावट बैंकिंग व्यवस्था तक बहुत सीमित लोगों की पहुंच भी थी। इस रुकावट को भी हमने दूर कर दिया है। मुद्रा योजना ने देश के गांवों और छोटे शहरों में उद्यमशीलता का विस्तार किया है। अभी तक इस योजना के तहत करीब-करीब 20 लाख करोड़ रुपए के ऋण दिए जा चुके हैं। देश में स्वरोजगार से जुड़ा इतना बड़ा कार्यक्रम पहले कभी लागू नहीं किया गया। इसमें भी जितने साथियों को ये ऋण मिला है, उसमें से साढ़े 7 करोड़ से अधिक लोग ऐसे हैं, जिन्होंने पहली बार अपना कोई कारोबार शुरू किया है, अपना कोई बिजनेस शुरु किया है। और इसमें भी सबसे बड़ी बात, मुद्रा योजना का लाभ पाने वालों में लगभग 70 प्रतिशत लाभार्थी हमारी बेटियां हैं, माताएं-बहनें हैं। इसके अलावा एक और आंकड़ा बहुत महत्वपूर्ण है। बीते वर्षों में सेल्फ हेल्प ग्रुप से 8 करोड़ महिलाएं जुड़ी हैं जिन्हें भारत सरकार आर्थिक मदद दे रही है। ये करोड़ों महिलाएं अब अपने बनाए उत्पाद, देशभर में बिक्री कर रही हैं, अपनी आय बढ़ा रही हैं। बद्रीनाथ में माताएं-बहनें जो सेल्फ हेल्प ग्रुप मुझे मिलीं, उन्होंने कहा इस बार जो बद्रीनाथ यात्रा पर लोग आए थे। हमारा ढाई लाख रुपया, हमारा एक-एक ग्रुप की कमाई हुई है।

गांवों में बड़ी संख्या में रोजगार निर्माण का एक और उदाहरण, हमारा खादी और ग्रामोद्योग है। देश में पहली बार खादी और ग्रामोद्योग, 1 लाख करोड़ रुपए से अधिक का हो चुका है। इन वर्षों में खादी और ग्रामोद्योग में 1 करोड़ से अधिक रोजगार बने हैं। इसमें भी बड़ी संख्या में हमारी बहनों की हिस्सेदारी है।

स्टार्ट अप इंडिया अभियान ने तो देश के युवाओं के सामर्थ्य को पूरी दुनिया में स्थापित कर दिया है। 2014 तक जहां देश में कुछ गिने चुने कुछ सौ स्टार्ट अप थे, आज ये संख्या 80 हजार से अधिक हो चुकी है। हजारों करोड़ रुपए की अनेक कंपनियां इस दौरान हमारे युवा साथियों ने तैयार कर ली हैं। देश के इन हजारों स्टार्ट अप्स में लाखों युवा काम कर रहे हैं। देश के MSMEs में, छोटे उद्योगों में भी आज करोड़ों लोग काम कर रहे हैं, जिसमें बड़ी संख्या में साथी बीते वर्षों में जुड़े हैं। कोरोना के संकट के दौरान केंद्र सरकार ने MSMEs के लिए जो 3 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की मदद दी, उससे करीब डेढ़ करोड़ रोजगार जिस पर संकट आया हुआ था वो बच गए। भारत सरकार मनरेगा के भी माध्यम से देशभर में 7 करोड़ लोगों को रोजगार दे रही है। और उसमें अब हम asset निर्माण, asset creation पर बल दे रहे हैं। डिजिटल इंडिया अभियान ने भी पूरे देश में लाखों डिजिटल आंट्रप्रन्योर्स का निर्माण किया है। देश में 5 लाख से अधिक कॉमन सर्विस सेंटर्स में ही लाखों युवाओं को रोजगार मिला है। 5G के विस्तार से डिजिटल सेक्टर में रोजगार के अवसर और बढ़ने वाले हैं।

21वीं सदी में देश का सबसे महत्वकांक्षी मिशन है, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत। आज देश कई मामलों में एक बड़े आयातक importer से एक बहुत बड़े निर्यातक exporter की भूमिका में आ रहा है। अनेक ऐसे सेक्टर हैं, जिसमें भारत आज ग्लोबल हब बनने की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है। जब खबर आती है कि भारत से हर महीने 1 अरब मोबाइल फोन पूरी दुनिया के लिए एक्सपोर्ट हो रहे हैं, तो ये हमारे नए सामर्थ्य को ही दिखाता है। जब भारत एक्सपोर्ट के अपने पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ देता है, तो ये इस बात का सबूत होता है कि ग्राउंड लेवल पर रोजगार के नए अवसर भी बन रहे हैं। गाड़ियों से लेकर मेट्रो कोच, ट्रेन के डिब्बे और डिफेंस के साजो सामान तक अनेक सेक्टर में निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। ये तभी हो पा रहा है क्योंकि भारत में फैक्ट्रियां बढ़ रही हैं। तो उसमें काम करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

मैन्युफेक्चरिंग और टूरिज्म, दो ऐसे सेक्टर हैं, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में रोजगार मिलते हैं। इसलिए आज इन पर भी केंद्र सरकार बहुत व्यापक तरीके से काम कर रही है। दुनियाभर की कंपनियां भारत में आएं, भारत में अपनी फैक्ट्रियां लगाएं और दुनिया की डिमांड को पूरी करें, इसके लिए प्रक्रियाओं को भी सरल किया जा रहा है। सरकार ने प्रोडक्शन के आधार पर इंसेंटिव देने के लिए PLI स्कीम भी चलाई है। जितना ज्यादा प्रोडक्शन उतना अधिक प्रोत्साहन, ये भारत की नीति है। इसके बेहतर परिणाम आज अनेक सेक्टर्स में दिखने शुरु भी हो चुके हैं। बीते वर्षों में EPFO का जो डेटा आता रहा है, वो भी बताता है कि रोजगार को लेकर सरकार की नीतियां से कितना लाभ हुआ है। दो दिन पहले आए डेटा के मुताबिक इस साल अगस्त के महीने में करीब 17 लाख लोग EPFO से जुड़े हैं। यानि ये देश की फॉर्मल इकॉनॉमी का हिस्सा बने हैं। इसमें भी करीब 8 लाख ऐसे हैं जो 18 से 25 साल की उम्र के ग्रुप के हैं।

इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण से रोजगार निर्माण का भी एक और बड़ा अवसर होता है, एक बहुत बड़ा पक्ष होता है, और इस विषय में तो दुनियाभर में मान्यता है कि ये क्षेत्र है जो रोजगार बढ़ाता है। बीते आठ वर्षों में देशभर में हजारों किलोमीटर नेशनल हाईवे का निर्माण हुआ है। रेल लाइन के दोहरीकरण का काम हुआ है, रेलवे के गेज परिवर्तन का काम हुआ है, रेलवे में इलेक्ट्रिफिकेशन पर देशभर में काम किया जा रहा है। देश नए हवाई अड्डे बना रहा है, रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण हो रहा है, नए वॉटरवेज बन रहे हैं। आप्टिकल फाइबर नेटवर्क का पूरे देश में बड़ा अभियान चल रहा है। लाखों वेलनेस सेंटर बन रहे हैं। पीएम आवास योजना के तहत तीन करोड़ से ज्यादा घर भी बनाए गए हैं।

भारत सरकार, इंफ्रास्ट्रक्चर पर सौ लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का लक्ष्य लेकर चल रही है। इतने बड़े पैमाने पर हो रहे विकास कार्य, स्थानीय अवसर पर युवाओं के लिए रोजगार के लाखों अवसर बना रहे हैं। आधुनिक इंफ्रा के लिए हो रहे ये सारे कार्य, टूरिज्म सेक्टर को भी नई ऊर्जा दे रहे हैं। आस्था के, आध्यात्म के, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों को देशभर में विकसित किया जा रहा है। ये सारे प्रयास, रोजगार बना रहे हैं, दूर-सुदूर में युवाओं को मौके दे रहे हैं। कुल मिलाकर देश में अधिक से अधिक रोजगार के निर्माण के लिए केंद्र सरकार एक साथ अनेक मोर्चों पर काम कर रही है।

देश की युवा आबादी को हम अपनी सबसे बड़ी ताकत मानते हैं। आजादी के अमृतकाल में विकसित भारत के निर्माण के सारथी हमारे युवा हैं, आप सभी हैं। जिन्हें नियुक्ति पत्र मिला है, उनसे विशेष तौर पर कहना चाहूंगा कि आप जब भी दफ्तर आएंगे अपने कर्तव्य पथ को हमेशा याद करें। आपको जनता की सेवा के लिए नियुक्त किया जा रहा है। 21वीं सदी के भारत में सरकारी सेवा सुविधा का नहीं, बल्कि समय सीमा के भीतर काम करके देश के कोटि-कोटि लोगों की सेवा करने का एक कमिटमेंट है, एक स्वर्णिम अवसर है। स्थितियां, परिस्थितियां कितनी भी कठिन हों, सेवाभाव का सरोकार और समय सीमा की मर्यादा को हर हाल में हम सब मिलकर के कायम रखने का प्रयास करेंगे। मुझे विश्वास है कि आप इस बड़े संकल्प को ध्यान में रखते हुए, सेवाभाव को सर्वोपरि रखेंगे। याद रखिए, आपका सपना आज से शुरु हुआ है, जो विकसित भारत के साथ ही पूरा होगा। ▪

आत्मनिर्भरता से, सफलता की नई ऊँचाई

तमिलनाडु में, काँचीपुरम में एक किसान हैं, थिरु के. एझिलन। इन्होंने 'पी.एम कुसुम योजना' का लाभ लिया और अपने खेत में दस horsepower का solar pump set लगवाया। अब उन्हें अपने खेत के लिए बिजली पर कुछ खर्च नहीं करना होता है।

खेत में सिंचाई के लिए अब वो सरकार की बिजली सप्लाई पर निर्भर भी नहीं हैं। वैसे ही राजस्थान के भरतपुर में 'पी.एम. कुसुम योजना' के एक और लाभार्थी किसान हैं - कमलजी मीणा। कमलजी ने खेत में solar pump लगाया, जिससे उनकी लागत कम हो गई है। लागत कम हुई तो आमदनी भी बढ़ गई। कमलजी सोलार बिजली से दूसरे कई छोटे उद्योगों को भी जोड़ रहे हैं। उनके इलाके में लकड़ी का काम है, गाय के गोबर से बनने वाले उत्पाद हैं, इनमें भी सोलर बिजली का इस्तेमाल हो रहा है, वो, 10-12 लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं, यानी, कुसुम योजना से कमलजी ने जो शुरुआत की, उसकी महक कितने ही लोगों तक पहुँचने लगी है।

सूर्य उपासना की परंपरा इस बात का प्रमाण है कि हमारी संस्कृति, हमारी आस्था का, प्रकृति से कितना गहरा जुड़ाव है। इस पूजा के जरिये हमारे जीवन में सूर्य के प्रकाश का महत्व समझाया गया है। साथ ही ये सन्देश भी दिया गया है कि उतार-चढ़ाव, जीवन का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए, हमें हर परिस्थिति में एक समान भाव रखना चाहिए। छठ मइया की पूजा में भांति-भांति के फलों और ठेकुआ का प्रसाद चढ़ाया जाता है। इसका व्रत भी किसी कठिन साधना से कम नहीं होता। छठ पूजा की एक और खास बात होती है कि इसमें पूजा के लिए जिन वस्तुओं का इस्तेमाल होता है उसे समाज के विभिन्न लोग मिलकर तैयार करते हैं। इसमें बांस की बनी टोकरी या सुपली का उपयोग होता है। मिट्टी के दीयों का अपना महत्व होता है। इसके जरिये चने की पैदावार करने वाले किसान और बताशे बनाने वाले छोटे उद्यमियों का समाज में महत्व स्थापित किया गया है। इनके सहयोग के बिना छठ की पूजा संपन्न ही नहीं हो सकती। छठ का पर्व हमारे जीवन में स्वच्छता के महत्व पर भी जोर देता है। इस पर्व के आने पर सामुदायिक स्तर पर सड़क, नदी, घाट, पानी के विभिन्न स्त्रोत, सबकी सफाई की जाती है। छठ का पर्व 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का भी उदाहरण है। आज बिहार और पूर्वांचल के लोग देश के जिस भी कोने में हैं, वहाँ, धूमधाम से छठ का आयोजन हो रहा है। दिल्ली, मुंबई समेत महाराष्ट्र के अलग-अलग जिलों और गुजरात के कई हिस्सों में छठ का बड़े

पैमाने पर आयोजन होने लगा है। पहले गुजरात में उतनी छठ पूजा नहीं होती थी। लेकिन समय के साथ आज करीब-करीब पूरे गुजरात में छठ पूजा के रंग नजर आने लगे हैं। ये देखकर बहुत खुशी होती है। विदेशों से भी छठ पूजा की कितनी भव्य तस्वीरें आती हैं। यानी भारत की समृद्ध विरासत, हमारी आस्था, दुनिया के कोने-कोने में अपनी पहचान बढ़ा रही है।

हमने पवित्र छठ पूजा की बात की, भगवान सूर्य की उपासना की बात की। तो क्यों न सूर्य उपासना के साथ-साथ आज हम उनके वरदान की भी चर्चा करें। सूर्य देव का ये वरदान है - 'सौर ऊर्जा'। Solar Energy आज एक ऐसा विषय है, जिसमें पूरी दुनिया अपना भविष्य देख रही है और भारत के लिए तो सूर्य देव सदियों से उपासना ही नहीं, जीवन पद्धति के भी केंद्र में रह रहे हैं। भारत, आज अपने पारंपरिक अनुभवों को आधुनिक विज्ञान से जोड़ रहा है, तभी, आज हम, सौर ऊर्जा से बिजली बनाने वाले सबसे बड़े देशों में शामिल हो गए हैं। सौर ऊर्जा से कैसे हमारे देश के गरीब और मध्यम वर्ग के जीवन में बदलाव आ रहा है, वो भी अध्ययन का विषय है।

तमिलनाडु में, काँचीपुरम में एक किसान हैं, थिरु के. एझिलन। इन्होंने 'पी.एम कुसुम

योजना' का लाभ लिया और अपने खेत में दस horsepower का solar pump set लगवाया। अब उन्हें अपने खेत के लिए बिजली पर कुछ खर्च नहीं करना होता है। खेत में सिंचाई के लिए अब वो सरकार की बिजली सप्लाई पर निर्भर भी नहीं हैं। वैसे ही राजस्थान के भरतपुर में 'पी.एम. कुसुम योजना' के एक और लाभार्थी किसान हैं - कमलजी मीणा। कमलजी ने खेत में solar pump लगाया, जिससे उनकी लागत कम हो गई है। लागत कम हुई तो आमदनी भी बढ़ गई। कमलजी सोलार बिजली से दूसरे कई छोटे उद्योगों को भी जोड़ रहे हैं। उनके इलाके में लकड़ी का काम है, गाय के गोबर से बनने वाले उत्पाद हैं, इनमें भी सोलर बिजली का इस्तेमाल हो रहा है, वो, 10-12 लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं, यानी, कुसुम योजना से कमलजी ने जो शुरुआत की, उसकी महक कितने ही लोगों तक पहुँचने लगी है।

क्या आप कभी कल्पना कर सकते हैं कि आप महीने भर बिजली का उपयोग करें और आपका बिजली बिल आने के बजाय, आपको बिजली के पैसे मिलें? सौर ऊर्जा ने ये भी कर दिखाया है। आपने कुछ दिन पहले, देश के पहले सूर्य ग्राम -गुजरात के मोढेरा की खूब चर्चा सुनी होगी। मोढेरा सूर्य ग्राम के ज्यादातर घर, सोलर पावर से बिजली पैदा करने लगे हैं। अब वहां के कई घरों में महीने के आखिर में बिजली का बिल नहीं आ रहा, बल्कि, बिजली से कमाई का cheque आ रहा है। ये होता देख, अब देश के बहुत से गावों के लोग मुझे चिट्ठियां लिखकर कह रहे हैं कि उनके गांव को भी सूर्य ग्राम में बदला जाए, यानी वो दिन दूर नहीं जब भारत में सूर्यग्रामों का निर्माण बहुत बड़ा जनांदोलन बनेगा और इसकी शुरुआत मोढेरा गांव के लोग कर ही चुके हैं।

आइये, 'मन की बात' के श्रोताओं को भी मोढेरा के लोगों से मिलवाते हैं। हमारे साथ इस समय phone line पर जुड़े हैं श्रीमान विपिन भाई पटेल।

प्रधानमंत्री जी: विपिन भाई नमस्ते! देखिये, अब तो मोढेरा पूरे देश के लिए एक model के रूप में चर्चा में आ गया है। लेकिन जब आपको अपने रिश्तेदार, परिचित सब बातें पूछते होंगे तो आप उनको क्या-क्या बताते हैं, क्या फायदा हुआ?

विपिन जी : सर, लोग हमारे को पूछते है तो हम कहते हैं कि हमें जो बिल आता था, लाइट बिल वो अभी जीरो आ रहा है और कभी 70 रूपए आता है पर लेकिन हमारे पूरे गाँव में जो आर्थिक परिस्थिति है वो सुधर रही है।

प्रधानमंत्री जी: यानी एक प्रकार से पहले जो बिजली बिल की चिंता थी वो खत्म हो गई।

विपिन जी: हाँ सर, वो तो बात सही है सर। अभी तो कोई tension नहीं है पूरे गाँव में। सब लोगों को लग रहा है कि सर ने जो किया तो वो तो बहुत अच्छा किया। वो खुश है सर। आनंदित हो रहे है सब।

प्रधानमंत्री जी: अब अपने घर में ही खुद ही बिजली का कारखाना के मालिक बन गए। खुद का अपना घर के छत पर बिजली बन रही है,

विपिन जी: हाँ सर, सही है सर।

प्रधानमंत्री जी: तो क्या ये बदलाव जो आया है उसकी गाँव के लोगों पे क्या असर है?

विपिन जी: सर वो पूरे गाँव के लोग, वो खेती कर रहे हैं, तो फिर हमारे को बिजली की जो झंझट थी तो उसमें मुक्ति हो गई है। बिजली का बिल तो भरना नहीं है, निश्चिन्त हो गए हैं सर।

प्रधानमंत्री जी: मतलब, बिजली का बिल भी गया और सुविधा बढ़ गई।

विपिन जी: झंझट ही गया सर और सर जब आप यहाँ आये थे और वो 3D Show जो यहाँ उद्घाटन किया तो इसके बाद तो मोढेरा गाँव में चार चाँद लग गए हैं सर। और वो जो secretary आये थे सर...

प्रधानमंत्री जी: जी जी...

विपिन जी : तो वो गाँव famous हो गया सर।

प्रधानमंत्री जी : जी हाँ, UN के Secretary General उनकी खुद की इच्छा थी। उन्होंने मुझे बड़ा आग्रह किया कि भई इतना बड़ा काम किया है तो मैं वहां जाके देखना चाहता हूँ। चलिए विपिन भाई आपको और आपके गाँव के सब लोगों को मेरे तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं और दुनिया आप में से प्रेरणा ले और ये solar energy का अभियान घर-घर चले

विपिन जी : ठीक है सर। वो हम सब लोगों को बताएँगे सर कि भई सोलर लगवाओ, आपके पैसे से भी लगवाओ, तो बहुत फायदा है।

प्रधानमंत्री जी : हाँ लोगों को समझाइये। चलिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद भैया।

विपिन जी : Thank you sir, Thank you sir, मेरा जीवन धन्य हो गया आपसे बात करके।

विपिन भाई का बहुत-बहुत धन्यवाद।

आइये अब मोढेरा गाँव में वर्षा बहन से भी बात करेंगे।

वर्षाबेन : हेलो नमस्ते सर!

प्रधानमंत्री जी : नमस्ते-नमस्ते वर्षाबेन। कैसी हैं आप?

वर्षाबेन : हम बहुत अच्छे हैं सर। आप कैसे हैं?

प्रधानमंत्री जी : मैं बहुत ठीक हूँ।

वर्षाबेन : हम धन्य हो गए सर आपसे बात करके।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा वर्षाबेन।

वर्षाबेन : हाँ।

प्रधानमंत्री जी : आप मोढेरा में, आप तो एक तो फौजी परिवार से है।

वर्षाबेन : मैं फौजी परिवार से हूँ मैं। Army Ex-man की wife बोल रही हूँ सर।

प्रधानमंत्री जी : तो पहले हिंदुस्तान में कहां-कहां जाने का मौका मिला आपको?

वर्षाबेन : मुझे राजस्थान में मिला, गाँधी नगर में मिला, कचरा कांझोर जम्मू है वहां पर मिला मौका, साथ में रहने का। बहुत सुविधा वहां पर मिल रही थी सर।

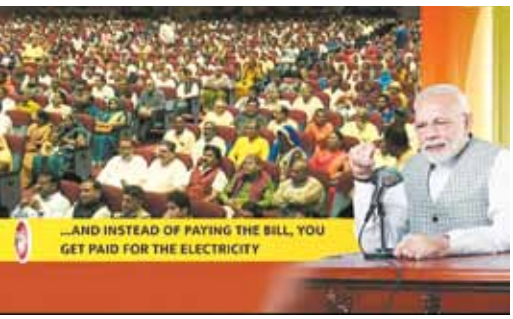

प्रधानमंत्री जी :– हाँ। ये फौज में होने के कारण आप हिंदी भी बढ़िया बोल रही हो।

वर्षाबेन :– हाँ-हाँ। सीखा है सर हाँ।

प्रधानमंत्री जी : मुझे बताइये मोढेरा में जो इतना बड़ा परिवर्तन आया ये Solar Rooftop Plant आपने लगवा दिया। जो शुरू में लोग कह रहे होंगें, तब तो आपको मन में आया होगा, ये क्या मतलब है? क्या कर रहे हैं? क्या होगा? ऐसे थोड़ी बिजली आती है? ये सब बातें हैं कि आपके मन में आई होगी। अब क्या अनुभव आ रहा है? इसका फायदा क्या हुआ है?

वर्षाबेन : बहुत सर फायदा तो फायदा ही फायदा हुआ है सर। सर हमारे गाँव में तो रोज दीवाली मनाई जाती है आपकी वजह से। 24 घंटे हमें बिजली मिल रही है, बिल तो आता ही नहीं है बिल्कुल। हमारे घर में हमने electric सब चीजें घर में ला रखी हैं सर, सब चीजें use कर रहे हैं - आपकी वजह से सर। बिल आता ही नहीं है, तो हम free mind से, सब use कर सकते हैं न !

प्रधानमंत्री जी : ये बात सही है, आपने बिजली का अधिकतम उपयोग करने के लिए भी मन बना लिया है।

वर्षाबेन : बना लिया सर, बना लिया। अभी हमें कोई दिक्कत ही नहीं है. हम free mind से, सब ये जो washing machine है, AC है सब चला सकते हैं सर।

प्रधानमंत्री जी : और गाँव के बाकी लोग भी खुश हैं इसके कारण?

वर्षाबेन : बहुत-बहुत खुश हैं सर।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा ये आपके पतिदेव तो वहाँ सूर्य मंदिर में काम करते हैं? तो वहां जो वो light show हुआ इतना बड़ा event हुआ और अभी दुनियाभर के मेहमान आ रहे हैं।

वर्षा बेन : दुनियाभर के foreigners आ सकते हैं पर आपने World में प्रसिद्ध कर दिया है हमारे गाँव को।

प्रधानमंत्री जी : तो आपके पति को अब काम बढ़ गया होगा इतने मेहमान वहाँ मंदिर में देखने के लिए आ रहे हैं।

वर्षा बेन : अरे ! कोई बात नहीं जितना भी काम बढ़े, सर कोई बात नहीं, इसकी हमें कोई दिक्कत नहीं है हमारे पति को, बस आप विकास करते जाओ हमारे गाँव का।

प्रधानमंत्री जी : अब गाँव का विकास तो हम सबको मिलकर के करना है।

वर्षा बेन : हाँ, हाँ। सर हम आपके साथ हैं।

प्रधानमंत्री जी : और मैं तो मोढेरा के लोगों का अभिनन्दन करूँगा क्योंकि गाँव ने इस योजना को स्वीकार किया और उनको विश्वास हो गया कि हाँ हम अपने घर में बिजली बना सकते हैं।

वर्षा बेन : 24 घंटे सर ! हमारे घर में बिजली आती है और हम बहुत खुश हैं।

प्रधानमंत्री जी : चलिए ! मेरी आपको बहुत शुभकामनाएँ हैं। जो पैसे बचें हैं, इसका बच्चों की भलाई के लिए उपयोग कीजिये। उन पैसों का उपयोग अच्छा हो ताकि आपका जीवन को फायदा हो। मेरी आपको बहुत शुभकामनाएँ है। और सब मोढेरा वालों को मेरा नमस्कार !

वर्षाबेन और विपिन भाई ने जो बताया है, वो पूरे देश के लिए, गांवों-शहरों के लिए एक प्रेरणा है। मोढेरा का ये अनुभव पूरे देश में दोहराया जा सकता है। सूर्य की शक्ति, अब पैसे भी बचाएगी

आपसे बात करते हुए मुझे वो पुराना समय भी याद आ रहा है, जब भारत को Cryogenic Rocket Technology देने से मना कर दिया गया था। लेकिन भारत के वैज्ञानिकों ने ना सिर्फ स्वदेशी technology विकसित की बल्कि आज इसकी मदद से एक साथ दर्जनों satellites अंतरिक्ष में भेज रहा है। इस launching के साथ भारत Global commercial market में एक मजबूत player बनकर उभरा है, इससे, अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत के लिए अवसरों के नए द्वार भी खुले हैं।

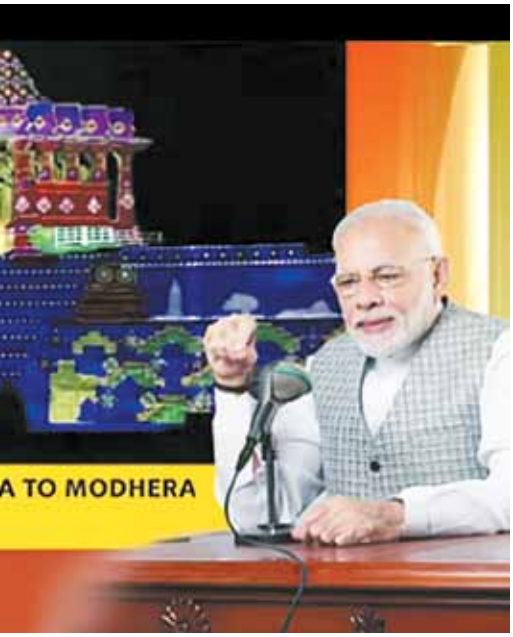

और आय भी बढ़ाएगी। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर से एक साथी हैं-मंजूर अहमद लर्हवाल। कश्मीर में सर्दियों के कारण बिजली का खर्च काफी होता है। इसी कारण, मंजूर जी का बिजली का बिल भी 4 हजार रूपए से ज्यादा आता था, लेकिन, जब से मंजूर जी ने अपने घर पर Solar Rooftop Plant लगवाया है, उनका खर्च आधे से भी कम हो गया है। ऐसे ही, ओडीशा की एक बेटी कुन्नी देउरी, सौर ऊर्जा को अपने साथ-साथ दूसरी महिलाओं के रोजगार का माध्यम बना रही हैं। कुन्नी, ओडीशा के केन्दुझर जिले के करदापाल गांव में रहती है। वो आदिवासी महिलाओं को solar से चलने वाली रीलिंग मशीन पर silk की कताई की training देती हैं। Solar Machine के कारण इन आदिवासी महिलाओं पर बिजली के बिल का बोझ नहीं पड़ता, और उनकी आमदनी हो रही है। यही तो सूर्य देव की सौर ऊर्जा का वरदान ही तो है। वरदान और प्रसाद तो जितना विस्तार हो, उतना ही अच्छा होता है। इसलिए, मेरी आप सबसे प्रार्थना है, आप भी, इसमें जुड़ें और दूसरों को भी जोड़ें।

अभी मैं आपसे सूरज की बातें कर रहा था। अब मेरा ध्यान space की तरफ जा रहा है। वो इसलिए, क्योंकि हमारा देश, Solar Sector के साथ ही space sector में भी कमाल कर रहा है। पूरी दुनिया, आज, भारत की उपलब्धियाँ देखकर हैरान है। इसलिए मैंने सोचा, 'मन की बात' के श्रोताओं को ये बताकर मैं उनकी भी खुशी बढ़ाऊँ ।

अब से कुछ दिन पहले आपने देखा होगा भारत ने एक साथ 36 satellites को अंतरिक्ष में स्थापित किया है। दीवाली से ठीक एक दिन पहले मिली ये सफलता एक प्रकार से ये हमारे युवाओं की तरफ से देश को एक special Diwali gift है। इस launching से कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कोहिमा तक, पूरे देश में, digital connectivity को और मजबूती मिलेगी। इसकी मदद से बेहद दूर-दराज के इलाके भी देश के बाकी हिस्सों से और आसानी से जुड़ जाएंगे। देश जब आत्मनिर्भर होता है, तो, कैसे, सफलता की नई ऊँचाई पर पहुँचता जाता है - ये इसका भी एक उदाहरण है। आपसे बात करते हुए मुझे वो पुराना समय भी याद आ रहा है, जब भारत को Cryogenic Rocket Technology देने से मना कर दिया गया था। लेकिन भारत के वैज्ञानिकों ने ना सिर्फ स्वदेशी technology विकसित की बल्कि आज इसकी मदद से एक साथ दर्जनों satellites अंतरिक्ष में भेज रहा है। इस launching के साथ भारत Global commercial market में एक मजबूत player बनकर उभरा है, इससे, अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत के लिए अवसरों के नए द्वार भी खुले हैं।

विकसित भारत का संकल्प लेकर चल रहा हमारा देश,सबका प्रयास से ही, अपने लक्ष्यों को, प्राप्त कर सकता है। भारत में पहले space sector, सरकारी व्यवस्थाओं के दायरे में ही सिमटा हुआ था। जब ये space sector भारत के युवाओं के लिए, भारत के private sector के लिए, खोल दिया गया तब से इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन आने लगे हैं। भारतीय Industry और Start-ups इस क्षेत्र में नए-नए Innovations और नई-नई Technologies लाने में जुटे हैं। विशेषकर, IN-SPACe के सहयोग से इस क्षेत्र में बड़ा बदलाव होने जा रहा है।

IN-SPACe के जरिए गैर-सरकारी कंपनियों को भी अपने Payloads और Satellite launch करने की सुविधा मिल रही है। मैं अधिक से अधिक Start-ups और Innovator से आग्रह करूँगा कि वे space sector में भारत में बन रहे इन बड़े अवसरों का पूरा लाभ उठाएँ।

जब students की बात आए, युवा शक्ति की बात आए, नेतृत्व शक्ति की बात आए, तो,

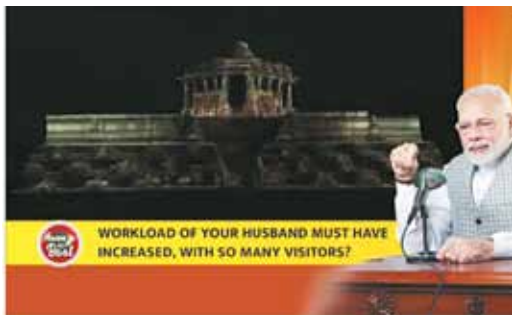

हमारे मन में घिसी-पिटी, पुरानी, बहुत सारी धारणाएं घर कर गयी है। कई बार हम देखते हैं कि जब Student power की बात होती है, तो इसको छात्रसंघ चुनावों से जोड़कर उसका दायरा सीमित कर दिया जाता है। लेकिन Student power का दायरा बहुत बड़ा है, बहुत विशाल है। Student power, भारत को powerful बनाने का आधार है। आखिर, आज जो युवा हैं, वही तो भारत को 2047 तक लेकर जाएंगे। जब भारत शताब्दी मनायेगा, युवाओं की ये शक्ति,

उनकी मेहनत, उनका पसीना, उनकी प्रतिभा, भारत को उस ऊँचाई पर लेकर जाएगी, जिसका संकल्प, देश, आज ले रहा है। हमारे आज के युवा, जिस तरह देश के लिए काम कर रहे हैं, Nation building में जुट गए हैं, वो देखकर मैं बहुत भरोसे से भरा हुआ हूँ। जिस तरह हमारे युवा हैकॉथॉन्स में problem solve करते हैं, रात-रात भर जागकर घंटों काम करते हैं, वो बहुत ही प्रेरणा देने वाला है। बीते वर्षों में हुई एक हैकॉथॉन्स ने देश के लाखों युवाओं ने मिलकर,

बहुत सारे challenges को निपटाया है, देश को नए solution दिए हैं।

आपको याद होगा, मैंने लाल किले से 'जय अनुसंधान' का आव्हान किया था। मैनें इस दशक को भारत का TechEd बनाने की बात भी कही थी। मुझे ये देखकर बहुत अच्छा लगा, इसकी कमान हमारी IITs के students ने भी संभाल ली है। इसी महीने 14-15 अक्टूबर को सभी 23 IITs अपने Innovations और Research project को प्रदर्शित करने के लिए पहली बार एक मंच पर आए। इस मेले में देशभर से चुनकर आए students और researchers उन्होंने 75 से अधिक बेहतरीन projects को प्रदर्शित किया। Healthcare, Agriculture, Robotics, Semiconductors, 5G Communications, ऐसी ढेर सारी themes पर ये project बनाए गए थे। वैसे तो ये सारे ही Project एक से बढ़कर एक थे, लेकिन, मैं कुछ projects के बारे में आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। जैसे, IIT भुवनेश्वर की एक टीम ने नवजात शिशुओं के लिए Portable ventilator विकसित किया है। यह बैटरी से चलता है और इसका उपयोग दूरदराज के क्षेत्रों में आसानी से किया जा सकता है। ये उन बच्चों का जीवन बचाने में बहुत मददगार साबित हो सकता है जिनका जन्म तय समय से पहले हो जाता है। Electric mobility हो, Drone Technology हो, 5G हो, हमारे बहुत सारे छात्र, इनसे जुड़ी नई technology विकसित करने में जुटे हैं। कई सारी IITs मिलकर एक बहुभाषक project पर भी काम कर रही हैं जो स्थानीय भाषाओं को सीखने के तरीके को आसान बनाता है। ये Project नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को, उन लक्ष्यों को प्राप्ति में भी, बहुत मदद करेगा। आपको ये जानकर भी अच्छा लगेगा कि IIT Madras और IIT Kanpur ने भारत के स्वदेशी 5G Test bed को तैयार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। निश्चित रूप से यह एक शानदार शुरुआत है। मुझे आशा है कि आने वाले समय में इस तरह के कई और प्रयास देखने को मिलेंगे। मुझे यह भी उम्मीद है कि IITs से प्रेरणा लेकर दूसरे institutions भी अनुसंधान एवं विकास से जुड़ी अपनी activities में तेजी लाएंगे।

पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, हमारे समाज के कण-कण में समाहित है और इसे हम अपने चारों ओर महसूस कर सकते हैं। देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो पर्यावरण की रक्षा के लिए अपना जीवन खपा देते हैं।

कर्नाटका के बेंगलुरु में रहने वाले सुरेश कुमार जी से भी हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, उनमें, प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा के लिए गजब का जुनून है। 20 साल पहले उन्होंने शहर के

सहकारनगर के एक जंगल को फिर से हरा-भरा करने का बीड़ा उठाया था। ये काम मुश्किलों से भरा था, लेकिन, 20 साल पहले लगाए गए वो पौधे आज 40-40 फीट ऊँचे विशालकाय पेड़ बन चुके हैं। अब इनकी सुन्दरता हर किसी का मन मोह लेती है। इससे वहां रहने वाले लोगों को भी बड़े गर्व की अनुभूति होती है। सुरेश कुमार जी और एक अदभुत काम भी करते हैं। उन्होंने कन्नड़ा भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सहकार नगर में एक Bus shelter भी बनाया है। वो सैकड़ों लोगों को कन्नड़ा में लिखी Brass plates भी भेंट कर चुके हैं। Ecology और Culture दोनों साथ-साथ आगे बढ़ें और फलें-फूलें, सोचिए यह कितनी बड़ी बात है।

आज Eco-friendly Living और Eco-friendly Products को लेकर लोगों में पहले से कहीं अधिक जागरूकता दिख रही है। मुझे तमिलनाडु के एक ऐसे ही दिलचस्प प्रयास के बारे में भी जानने का मौका मिला। ये शानदार प्रयास कोयंबटूर के अनाईकट्टी में आदिवासी महिलाओं

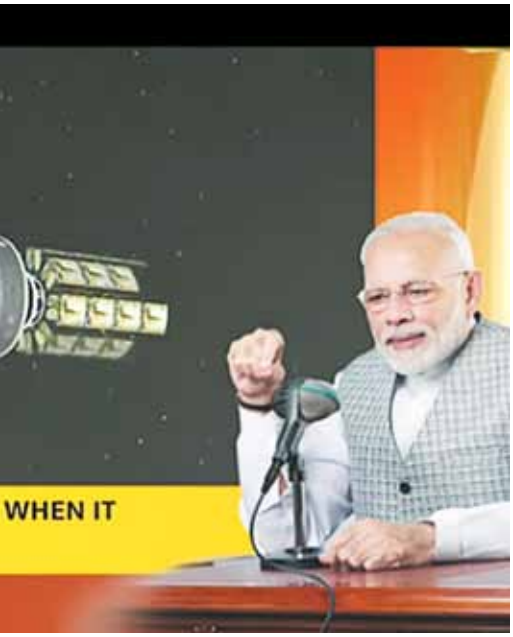

की एक टीम का है। इन महिलाओं ने निर्यात के लिए दस हजार Eco-friendly टेराकोटा Tea Cups का निर्माण किया। कमाल की बात तो ये है की टेराकोटा Clay Mixing बनाने की पूरी जिम्मेदारी इन महिलाओं ने खुद ही उठाई। Clay Mixing से लेकर Final Packaging तक सारे काम स्वयं किए। इसके लिए इन्होंने प्रशिक्षण भी लिया था। इस अद्भुत प्रयास की जितनी भी प्रशंसा की जाए-कम है।

त्रिपुरा के कुछ गाँवों ने भी बड़ी अच्छी सीख दी है। आप लोगों ने Bio-Village तो जरुर सुना होगा, लेकिन, त्रिपुरा के कुछ गाँव, Bio-Village 2 की सीढ़ी चढ़ गए हैं। Bio-Village 2 में इस बात पर जोर होता है कि प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान को कैसे कम से कम किया जाए। इसमें विभिन्न उपायों से लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने पर पूरा ध्यान दिया जाता है। Solar Energy, Biogas, Bee Keeping और Bio Fertilizers इन सब पर पूरा focus रहता है। कुल मिलाकर अगर देखें, तो, जलवायु

परिवर्तन के खिलाफ अभियान को Bio-Village 2 बहुत मजबूती देने वाला है। मैं देश के अलग-अलग हिस्सों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर बढ़ रहे उत्साह को देखकर बहुत ही खुश हूँ। कुछ दिन पहले ही, भारत में, पर्यावरण की रक्षा के लिए समर्पित Mission Life को भी launch किया गया है। Mission Life का सीधा सिद्धांत है-ऐसी जीवनशैली, ऐसी Lifestyle को बढ़ावा, जो पर्यावरण को नुकसान ना पहुंचाए। मेरा आग्रह है कि आप भी Mission Life को जानिए, उसे अपनाने का प्रयास कीजिये।

31 अक्टूबर को, राष्ट्रीय एकता दिवस है, सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जन्म-जयन्ती का पुण्य अवसर है। इस दिन देश के कोने-कोने में Run for Unity का आयोजन किया जाता है। ये दौड़, देश में एकता के सूत्र को मजबूत करती है, हमारे युवाओं को प्रेरित करती है। अब से कुछ दिन पहले, ऐसी ही भावना, हमारे राष्ट्रीय खेलों के दौरान भी देखी है। 'जुड़ेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया' इस Theme के साथ राष्ट्रीय खेलों ने जहाँ एकता का मजबूत सन्देश दिया, वहीं भारत की खेल संस्कृति को भी बढ़ावा देने का काम किया है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि भारत में राष्ट्रीय खेलों का अब तक का सबसे बड़ा आयोजन था। इसमें 36 खेलों को शामिल किया गया, जिसमें, 7 नई और दो स्वदेशी स्पर्धा योगासन और मल्लखम्ब भी शामिल रही। Gold Medal जीतने में सबसे आगे जो तीन टीमें रहीं, वे हैं - सर्विसेस की टीम, महाराष्ट्र और हरियाणा की टीम। इन खेलों में छह National Records और करीब-करीब 60 है National Games Records भी बने। मैं पदक जीतने वाले, नए Record बनाने वाले, इस खेल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले, सभी खिलाड़ियों को, बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मैं इन खिलाड़ियों के सुनहरे भविष्य की कामना भी करता हूँ।

मैं उन सभी लोगों की भी हृदय से प्रशंसा करना चाहता हूँ, जिन्होंने गुजरात में हुए राष्ट्रीय खेलों के सफल आयोजन में अपना योगदान दिया। आपने देखा है कि गुजरात में तो राष्ट्रीय खेल नवरात्रि के दौरान हुए। इन खेलों के आयोजन से पहले एक बार तो मेरे मन में भी आया कि इस समय तो पूरा गुजरात इन उत्सवों में जुटा होता है, तो लोग इन खेलों का आनंद कैसे ले पाएँगे? इतनी बड़ी व्यवस्था और दूसरी तरफ नवरात्रि के गरबा वगैरह का इंतजाम। ये सारे काम गुजरात एक साथ कैसे कर लेगा? लेकिन गुजरात के लोगों ने अपने आतिथ्य-सत्कार से सभी मेहमानों को खुश कर दिया। अहमदाबाद में National Games के दौरान जिस तरह कला, खेल और संस्कृति का संगम हुआ, वह उल्लास से भर देने वाला था। खिलाड़ी भी दिन में जहाँ खेल में हिस्सा लेते थे,

वहीं शाम को वे गरबा और डांडिया के रंग में डूब जाते थे। उन्होंने गुजराती खाना और नवरात्रि की तस्वीरें भी Social Media पर खूब Share कीं। यह देखना हम सभी के लिए बहुत ही आनंददायक था। आखिरकार, इस तरह के खेलों से, भारत की विविध संस्कृतियों के बारे में भी पता चलता है। ये 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को भी उतना ही मजबूत करते हैं।

नवम्बर महीने में 15 तारीख को हमारा देश जन-जातीय गौरव दिवस मनाएगा। आपको याद

होगा, देश ने पिछले साल भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयन्ती के दिन आदिवासी विरासत और गौरव को Celebrate करने के लिए ये शुरुआत की थी। भगवान बिरसा मुंडा ने अपने छोटे से जीवन काल में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लाखों लोगों को एकजुट कर दिया था। उन्होंने भारत की आजादी और आदिवासी संस्कृति की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया था। ऐसा कितना कुछ है, जो हम धरती आबा बिरसा मुंडा से सीख सकते हैं। जब धरती आबा बिरसा मुंडा की बात

आती है, छोटे से उनके जीवन काल की तरफ नजर करते हैं, आज भी हम उसमें से बहुत कुछ सीख सकते हैं और धरती आबा ने तो कहा था- यह धरती हमारी है, हम इसके रक्षक हैं। उनके इस वाक्य में मातृभूमि के लिए कर्तव्य भावना भी है और पर्यावरण के लिए हमारे कर्तव्यों का अहसास भी है। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया था कि हमें हमारी आदिवासी संस्कृति को भूलना नहीं है, उससे रत्ती-भर भी दूर नहीं जाना है। आज भी हम देश के आदिवासी समाजों से प्रकृति और पर्यावरण को लेकर बहुत कुछ सीख सकते हैं।

पिछले साल भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर, मुझे रांची के भगवान बिरसा मुंडा (Museum) म्यूजियम के उद्घाटन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं युवाओं से आग्रह करना चाहूँगा कि उन्हें जब भी समय मिले, वे इसे देखने जरुर जाएँ। मैं आपको ये भी बताना चाहता हूँ कि एक नवम्बर, मैं गुजरात-राजस्थान के बॉर्डर पर मौजूदा मानगढ़ में रहूँगा। भारत के स्वतंत्रता संग्राम और हमारी समृद्ध आदिवासी विरासत में मानगढ़ का बहुत ही विशिष्ट स्थान रहा है। यहाँ पर नवम्बर 1913 में एक भयानक नरसंहार हुआ था, जिसमें अंग्रेजों ने स्थानीय आदिवासियों की निर्ममता पूर्वक हत्या कर दी थी। बताया जाता है कि इस नरसंहार में एक हजार से अधिक आदिवासियों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। इस जनजातीय आन्दोलन का नेतृत्व गोविन्द गुरु जी ने किया था, जिनका जीवन हर किसी को प्रेरित करने वाला है। मैं उन सभी आदिवासी शहीदों और गोविन्द गुरु जी के अदम्य साहस और शौर्य को नमन करता हूँ। हम इस अमृतकाल में भगवान बिरसा मुंडा, गोविन्द गुरु और अन्य स्वातंत्र सेनानियों के आदर्शों का जितनी निष्ठा से पालन करेंगे, हमारा देश उतनी ही ऊँचाइयों को छू लेगा।

8 नवम्बर को गुरुपुरब है। गुरु नानक जी का प्रकाश पर्व जितना हमारी आस्था के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही हमें इससे सीखने को भी मिलता है। गुरु नानकदेव जी ने अपने पूरे जीवन, मानवता के लिए प्रकाश फैलाया। पिछले कुछ वर्षों में देश ने गुरुओं के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अनेकों प्रयास किए हैं। हमें गुरु नानकदेव जी का 550वाँ प्रकाश पर्व, देश और विदेश में व्यापक स्तर पर मनाने का सौभाग्य मिला था। दशकों के इंतजार के बाद करतारपुर साहिब कॉरिडोर का निर्माण होना भी उतना ही सुखद है। कुछ दिन पहले ही मुझे हेमकुंड साहिब के लिए रोपवे के शिलान्यास का भी सौभाग्य मिला है। हमें हमारे गुरुओं के विचारों से लगातार सीखना है, उनके लिए समर्पित रहना है। इसी दिन कार्तिक पूर्णिमा का भी है। इस दिन हम तीर्थों में, नदियों में, स्नान करते हैं - सेवा और दान करते हैं।

आने वाले दिनों में कई राज्य, अपने राज्य दिवस भी मनाएंगे। आंध्र प्रदेश अपना स्थापना दिवस मनाएगा, केरला पिरावि मनाया जाएगा। कर्नाटका राज्योत्सव मनाया जाएगा। इसी तरह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और हरियाणा भी अपने राज्य दिवस मनाएंगे। हमारे सभी राज्यों में, एक दूसरे से सीखने की, सहयोग करने की, और मिलकर काम करने की spirit जितनी मजबूत होगी, देश उतना ही आगे जाएगा। विश्वास है, हम इसी भावना से आगे बढ़ेंगे। ▪

लाला लाजपत राय, जिनका बलिदान, ब्रिटिश शासक के ताबूत की कील बना

लाला जी ने कांगड़ा (आजकल हिमाचल प्रदेश) में अछूतोद्धार का बहुत काम किया। पाठशालाएं खोलीं, आर्यसमाज एवं गुरूकुलों की स्थापना की जहां बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती थी।

लाला जी चाहते थे कि हमारे बच्चे अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करें ताकि उनमें देश भक्ति का संस्कार बहुत दृढ़ हो सके।

लुधियाना जिले में जागरांव एक कस्बा है। लाला लाजपतराय के दादा वहां एक दुकानदार थे। पिता जी श्री राधाकृष्ण जी एक विद्यालय में अध्यापक थे। वह उर्दू के लेखक और स्वामी दयानंद जी के भक्त थे। लाला लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 को अपने ननिहाल पंजाब में दुड्डिके गांव में हुआ था। लाला जी के पिता अध्यापक थे, आर्य समाज से जुड़े थे, अत्यन्त समाज सेवी थे। उन्होंने अपने बालक की शिक्षा एवं संस्कार की योजना भी इस प्रकार की जिससे बड़ा होकर वह भी समाज सेवा में लगे। पढ़ाई पूरी करने के पश्चात लाला लाजपतराय जी ने हिसार में वकालत प्रारंभ की। वह बुद्धि के तेज एवं बेधड़क वक्ता थे। शीघ्र ही वह एक सफल वकील के रूप में स्थापित हो गये। अच्छा धन कमाने लगे। परन्तु अपनी कमाई में से अच्छी राशि वह समाज सेवा में ही खर्च करते थे। हिसार में आर्य समाज की शाखा स्थापित की। हिसार में एक संस्कृत विद्यालय एवं भिवानी में एक अनाथालय की स्थापना की। वह म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य चुने गये तथा तीन वर्ष तक बिना वेतन के मंत्री रहे। लाला जी ने कांगड़ा (आजकल हिमाचल प्रदेश) में अछूतोद्धार का बहुत काम किया। पाठशालाएं खोलीं, आर्यसमाज एवं गुरूकुलों की स्थापना की जहां बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती थी। लाला जी चाहते थे कि हमारे

बच्चे अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करें ताकि उनमें देश भक्ति का संस्कार बहुत दृढ़ हो सके। फलस्वरूप उन्होंने लाला हंसराज के सहयोग से लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की। बाद में जालन्धर, होशियारपुर में भी ऐसे कालेजों की स्थापना की। इन कालेजों ने अपने देश की स्वतंत्रता के आन्दोलन में अच्छी भूमिका निभाई।

धर्मान्तरण के विरूद्ध लाला जी का सिंहनाद-

बंगाल, मध्यप्रदेश तथा राजपूताने में भयंकर अकाल पड़ा। लाला जी ने इन क्षेत्रों के अकाल पीड़ितों की सहायता का कार्य अपने जिम्मे लिया। तथा इन इलाकों में बहुत अधिक अन्न एवं दूसरी सहायता की व्यवस्था की। इन क्षेत्रों में ईसाई पादरी भी सेवा के काम में लगे हुए थे परन्तु वे वहां पर सैकड़ों अनाथ बच्चों को ईसाई बना रहे थे। लाला जी ने इसका खूब डटकर विरोध किया। लाला लाजपत राय बहुत ही निर्भीक एवं क्रान्तिकारी विचारों के थे। उन्होंने उर्दू दैनिक वन्देमातरम में लिखा- ''मेरा मजहब हक परस्ती, मेरी मिल्लत कौमपरस्ती और मेरी इबादत खल्क परस्ती है, मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है मेरी सम्पत्ति मेरी कलम है, मेरा मन्दिर मेरा दिल है तथा मेरी उमंगें सदा जवान हैं'' वह बहुत ही निडर, साहसिक एवं सच्चे थे।

लाला जी की देश भक्तिपूर्ण गतिविधियों के कारण वे अंग्रेज सरकार की आंख की किरकिरी बन गये। हिसार के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें धोखे से गिरफ्तार करके माण्डले जेल भेज दिया। वहां उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी। जिनमें से प्रमुख हैं- महान अशोक, श्री कृष्ण और उनकी शिक्षा, छत्रपति शिवाजी, इटली के देशभक्त मेजिनी एवं गैरीबाल्डी की जीवनियां। वह अंग्रेजी के अच्छे विद्वान थे परन्तु उन्होंने सभी पुस्तकें उर्दू में ही लिखीं। माण्डले जेल से छूटने के बाद उन्होंने वकालत छोड़ दी तथा पूरा समय देश सेवा के काम में लगाने लगे। 1914 में जब महायुद्ध शुरू हुआ उस समय लालाजी जापान गये हुए थे। भारत सरकार ने उन्हें भारत आने की आज्ञा नहीं दी। वे वहां से अमेरिका चले गये तथा वहां उन्होंने अमेरिका के अखबारों में लेख लिखे। देश की आजादी के लिए प्रचार किया। वहां उनकी पुस्तक "यंग इण्डिया" बहुत प्रसिद्ध हुई।

कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। थोड़े दिन बाद ही उन्हें गिरफ्तार कर पुनः जेल भेज दिया गया। जेल में उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। बाहर आकर वे पुनः स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गये। उन्होंने लाहौर में नेशनल कालेज और तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स की स्थापना की।

1928 में साइमन कमीशन का कांग्रेस ने बायकॉट किया। देशभर में इसके विरूद्ध प्रदर्शन हुए। जब यह कमीशन लाहौर पहुँचा तो लाला जी के नेतृत्व में इसका बहुत जबरदस्त विरोध हुआ। जब भीड़ बेकाबू हो गयी तो अंग्रेजों की पुलिस ने लाठियां चलानी शुरू कर दी। लाला जी सबसे आगे थे उन पर कई लाठियां पड़ी। उस समय उन्होंने गर्जना की- "मेरी छाती पर पड़ने वाली एक-एक लाठी भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत की एक-एक कील बनेगी"।

लाठियों की मार से उनकी छाती में ऐसी चोटें आई कि उसके फलस्वरूप 17 नवम्बर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई। भारत के इस वीर पुरूष की वीरगति पर सारे देश में शोक की लहर दौड़ गई परन्तु इसने क्रांतिकारियों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में और तीव्रता ला दी। धन्य हैं ऐसे महापुरूष जिन्होंने इस माँ भारती की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन होम कर दिया। लाल-बाल-पाल की क्रान्तिकारी -त्रयी में इन्हें सदा स्मरण किया जाता रहेगा। लाला लाजपत राय पंजाब के थे। बालगंगाधर तिलक महाराष्ट्र से तथा विपिन चन्द्र पाल बंगाल से थे। ये तीनों ही कांग्रेस में गर्मदल के प्रमुख नेता थे। पंजाब केसरी अर्थात पंजाब के शेर के विशेषण से इन्हें सदा स्मरण किया जाता रहेगा। ▪

बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटानागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की। 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके में "धरती बाबा" के नाम से पुकारा और पूजा जाता था। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी। 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है। बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुई थी। उनके द्वारा चलाया जाने वाला सहस्त्रादवादी आंदोलन ने बिहार और झारखंड में खूब प्रभाव डाला था। केवल 25 वर्ष के जीवन में उन्होंने इतने मुकाम हासिल कर लिए थे कि आज भी भारत की जनता उन्हें याद करती है और भारतीय संसद में एकमात्र आदिवासी नेता बिरसा मुंडा का चित्र टंगा हुआ है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को रांची जिले के उलिहतु गाँव में हुआ था। मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया। अब वो अपने विद्रोह में इतने उग्र हो गये थे कि आदिवासी जनता उनको भगवान मानने लगी थी और आज भी आदिवासी जनता बिरसा को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से पूजती है। उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगों को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो। उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जता है।

अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था। बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा ''हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमो का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।'' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। अब बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये। ▪

सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया।

सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरितियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानो के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवनयापन के लिए बागबगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेदभाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीकाटिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जातिभेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथो पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताएँ जो संस्कार बच्चो पर डालती हैं, उसी में उन बच्चो के भविष्य के बीज होते है। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे। उस समय जातपात, ऊँच-नीच की दीवारे बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चो को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारम्भ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दवाब में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायें कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे है। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे है।

महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुम्हे क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुहारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए। महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनो से अपने सिद्धांतो व कार्यक्रमो के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआछूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नवबर सन 1890 को उनका देहावसान हो गया। ▪

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री
रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। अत्यंत सुन्दर होने के कारण पेशवा बाजीराव द्वितीय ने उन्हें एक और नाम दे रखा था- "छबीली"। मनुबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपन्त ताम्बे तथा माता का नाम भागीरथी बाई था। चार वर्ष की आयु में ही मनु को माता के स्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। उनके पिता मोरोपन्त को पेशवा बाजीराव द्वितीय ने कानपुर के पास विठूर में बुलवा लिया। यहाँ मनुबाई का पेशवा के पुत्र श्री नानासाहब के साथ घुड़सवारी करना, तलवार तथा धनुष, तीर चलाना सीखने का अवसर मिला। मनुबाई प्रतिभाशाली तो थी ही शीघ्र ही उन्होंने धर्नुविद्या एवं अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी निपुणता प्राप्त कर ली। तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। तब से वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं। सोलह वर्ष की आयु में वे माता बनीं। किन्तु नवजात पुत्र शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। पुत्र शोक में व्याकुल राजा गंगाधर राव भी नवम्बर 1853 में स्वर्गवासी हो गए। तब उन्होंने दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया।

राजा गंगाधर राव की मृत्यु का लाभ लेने के लिए तथा रानी को निर्बल मानकर 16 मार्च 1854 को तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी ने अपनी हड़प-नीति के अर्न्तगत झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने की घोषणा कर दी। लार्ड डलहौजी की हड़प-नीति का रानी ने पुरजोर विरोध किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य को स्पष्ट चेतावनी देते हुए घोषणा की- मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। अंग्रेजों की इस कुटिल नीति का परिणाम झाँसी के अलावा सतारा, नागपुर, उदयपुर, जैतपुर, बामोर, संबलपुर, अवध आदि रियासतों को भी भोगना पड़ा। इस कुटिल नीति के अंतर्गत अंग्रेजों ने राजाओं, नवाबों तथा यहां तक की दिल्ली बादशाह की पेंशन भी, या तो कम कर दी या बन्द ही कर दी और धीरे-धीरे उन रियासतों को येन केन प्रकारेण ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करना प्रारम्भ कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्याटोपे आदि के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि निर्मित हुई। इसी योजना के तहत झाँसी में भी 16 मार्च 1857 से लेकर 5 जून 1857 तक क्रांति की तैयारियां प्रारंभ हुईं। उन्होंने पुरूष सैनिकों के साथ-साथ वीर नारियों की भी एक सेना तैयार की तथा उनको युद्ध करने का पूरा प्रशिक्षण दिया।

अंग्रेजों के साथ युद्ध सुनिश्चित था अतः रानी ने झाँसी के राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए दीवान रघुनाथ सिंह को सेनापति नियुक्त किया। गोस मुहम्मद तोपों के दस्ते के प्रधान बनाए गए। भाऊ बख्शी को उनका सहयोगी बनाया गया। बुरहानुद्दीन और मोती बाई को जासूसी विभाग सौंपा। बारूद बनाने के लिए कुशल व्यक्ति बुलवाए गए। कड़क बिजली, भवानी शंकर जैसी नालदार तोपों को चुस्त-दुरस्त किया गया पर अंग्रेजों के साथ युद्ध करने से पूर्व उन्हें दो युद्ध और लड़ने पड़े। इनमें पहला युद्ध महाराज गंगाधर राव के संबंधी सदाशिव राव से हुआ। उसने ग्वालियर की सहायता से झाँसी पर आक्रमण कर वहां के निकटवर्ती दुर्ग पर अधिकार कर लिया था और अपने को राजा घोषित कर लिया था। रानी ने उसका सामना किया और उसे बन्दी बनाकर झाँसी के किले में रख दिया।

दूसरा युद्ध ओरछा राज्य के दीवान नत्थे खान के साथ हुआ। नत्थे खान ने बीस हजार की सेना लेकर झांसी के मऊरानीपुर और बरुआ सागर पर अधिकार कर लिया था। उसने झांसी के किले को चारों ओर से घेरकर तोपों से प्रहार किया। दोनों ओर से भीषण गोलाबारी हुई। अन्त में नत्थे खान प्राण लेकर भागा।

इसके बाद रानी का भीषणतम और अन्तिम युद्ध अंग्रेजों के साथ हुआ। अंग्रेजी सेना के ब्रिगेडियर स्टुमर्ट के सहयोग से, सर ह्यूरोज ने 21 मार्च 1858 को झाँसी को घेर लिया। यह युद्ध बारह दिन तक चला पर इल्हा जू बुन्देला तथा अली बहादुर जैसे देशद्रोहियों ने विश्वासघात किया और किले का ओरछा दरवाजा अंग्रेजों की सेना के लिए खोल दिया।

इस युद्ध में बानपुर के राजा मर्दनसिंह तथा बाँदा के नवाब ने रानी की सहायता की। 1 अप्रैल 1858 को कालपी से राव साहब ने तोपखाने के साथ बीस हजार की सेना सहायतार्थ भेजी पर उसका लाभ झाँसी को नहीं मिल सका। अब पराजय निश्चित थी क्योंकि रानी के महल के चारों ओर अंग्रेजों ने भीषण नरसंहार और अग्निकांड शुरू कर दिया था। तब रानी ने अपने सब सहयोगियों को बुलाकर उनसे भविष्य की रणनीति तय करने के लिए परामर्श किया। सबने मिलकर यह तय किया कि वे सब केसरिया झंडा लेकर सूर्योदय के पूर्व ही किले से निकलकर, युद्ध करते हुए मृत्यु पर्यन्त शत्रुओं से जूझेंगे। जीवित रहते हुए अंग्रेजों के हाथ बन्दी नहीं होंगे। महारानी के लिए यह तय किया गया कि वह अपने दल के साथ रात्रि में ही कालपी के लिए प्रस्थान करेंगी।

रात के चौथे पहर में रानी अपने दल के साथ नगर की ओर के भांडेरी फाटक से मारकाट करती हुए निकली और कालपी के लिए प्रस्थान कर गईं। झलकारी बाई ने रानी का पैचदार साफा बांधा और अंग्रेजों के सामने समर्पण कर दिया ताकि अंग्रेज युद्ध बन्द कर दें और रानी सुरक्षित रहें ह्यूरोज चालाक था। उसने रानी का पीछा किया। कालपी से रानी ग्वालियर पहुंची। उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया पर 16 जून 1858 को अंग्रेजों ने वहां भी आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध हुआ पर अन्ततः झांसी की सेना को परास्त होना पड़ा। रानी का घोड़ा उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए भागा पर एक बरसाती नाले के सामने आ जाने के कारण रानी को रूकना पड़ा। घोड़ा मारा गया। रानी की पसलियों में गोली लगी। एक गोरे की तलवार का भरपूर वार उनके माथे और कन्धे को चीर गया। रानी ने आदेश दिया कि उनकी मृत देह अंग्रेजों के हाथ न पड़ने पाए और साधु गंगादास के हाथ से गंगाजल पीकर देह का त्याग किया। उनकी मृत देह को घास की चिता पर रखकर अग्नि संस्कार किया गया। उनके इस बलिदान पर ह्यूरोज ने कहा- 'समस्त विश्व में झाँसी की रानी सर्वाधिक वीर तथा कुशल योद्धा थीं। मखमली दस्तानों के भीतर उनकी उँगलियां फौलादी थीं। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री ने देश के लिए बलिदान दिया। ▪

कांग्रेस बनाम जनसंघ

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गलगल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियां केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न वस्त्र अलय हो रहे हैं। अतः जनमन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्नभिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई मे कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।

योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन

की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलें की हैं। पहली, बिना किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थसिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरणस्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंतायुक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदलाबदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है। हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निर्वासितों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा। विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ▪

गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने ग्वालियर में एयरपोर्ट के विस्तार एवं नवीन टर्मिनल बिल्डिंग का भूमि-पूजन किया।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने इंदौर को छठवीं बार देश के सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार प्रदान किया।

प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानन्द जी ने जनजातीय मोर्चा की प्रदेश कार्यसमिति एवं प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित किया।

राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने धार में प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानन्द जी उज्जैन ग्रामीण के दीपावली मिलन समारोह एवं सक्रिय सदस्य सम्मेलन में शामिल हुए।

प्रदेश प्रभारी श्री मुरलीधर राव, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने मीडिया एवं सोशल मीडिया विभाग की बैठकें ली।

भाजपा के नवीन प्रदेश कार्यालय में धनतेरस पर प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने पूजन किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने उज्जैन में श्री महाकाल लोक का निर्माण करने वाले कारीगरों को भोजन परोसा।